हिन्दी की महिला साहित्यकार

लेखक की अन्य कृतियाँ

प्रयोगकालीन बच्चन

साहित्यार्चन

हिन्दी की महिला साहित्यकार (सम्पादित)

भारतीय मजदूरों की समस्यायें

श्रमदान

मन्दिर प्रवेश

दशदीप

मधु को पत्र

काम की बातें

पुराने रास्ते : नये मोड़

हम : पहले और अब

हमारी योजनायें

राजा राजा ऊपर

चाचा नेहरू

बब्बू ने भी गोते लगाये

पठ्कोण

प्रवेशिका

हिन्दी की महिला साहित्यकार

हिन्दी की प्रसिद्ध और नवोदित लेखिकाओं के स्वपरिचय

सम्पादक

सत्यप्रकाश मिलिंद

रूपकमल प्रकाशन

दिल्ली

प्रकाशक :
प्रतापसिंह आनन्द
रूपकमल प्रकाशन
१५, यू. बी. बंगलो रोड, दिल्ली—६

आवरण : ज्योति आर्टस्

मूल्य : पाँच रुपये

प्रथम संस्करण : १९६०

मुद्रक
शुक्ला प्रिंटिंग एजन्सी द्वारा
हीरो प्रेस, दिल्ली।

ये स्वपरिचय : ये पृष्ठ

मेरी लेखिनी से

जयदेव और कालिदास ने जिस नारी को आकर्षण का केन्द्र बताया है, उसी को अनेक तत्व-द्रष्टाओं ने 'नारायणी' की संज्ञा भी प्रदान की है। निस्सन्देह वही नारायणी नारी साहित्य में गार्गी, शील भट्टारिका, इन्द्रलेखा, मीराबाई, सहजोबाई, सुभद्रा कुमारी चौहान और देवी महादेवी के रूप में हमारे समक्ष आती हैं।

युग पुरुष बापू का मत था कि स्त्री ही त्याग और प्रेम को जानती है और उसी त्याग और प्रेम की प्रतिमूर्ति नारी के हृदय की पीड़ा, थिरकन, धड़कन और सिहरन ने या उसके उल्लास के क्षणों ने उसे जीवन-विन्यास के विविध पक्षों में गहराई तक उतार दिया है। नारी के सर्वविदित गुण हैं—शील, करुणा, ममता और स्वभाव-जन्य सरसता। उनसे परिपूरित होकर ही उसने माँ, बहिन, पुत्री और सहचरी के रूप में पुरुष के जीवन में प्रवेश किया है। और घर की समस्याओं, दुनियां की विषमताओं और मानवीय बाधाओं का आल्हाद के आंसू के बौछार से नहीं प्रत्युत वीरतापूर्ण अट्टहास से भी स्वागत किया है।

समाज के केन्द्र-बिन्दु नारी और पुरुष दोनों ही हैं, या यह कहा जा सकता है कि सामाजिक क्रिया-कलापों व आर्थिक विषमताओं से मुक्ति प्राप्त करने की व्यवस्था पुरुष करता है तो नारी पुरुष के जीवन को आत्म-समर्पण, कुशलगृह-संचालन और पारिवारिक शान्ति स्थापन से सब प्रकार से सुखी बनाने की चेष्टा करती है। यदि हम वेदों का अध्ययन करें तो पता चलेगा कि उनके नारी और पुरुष के सम्बन्धों की विवेचना इन शब्दों में की गई है। 'मैं पद्य तू गद्य, मैं अन्तरिक्ष तू

अवनीलोक, सो हम इकट्ठे रहेंगे और माता-पिता बनेंगे—एवं हम दोनों में एक आत्मा निवास करेगी।'

किन्तु बदलते युग ने नारी को भी आशंकित कर दिया है। अनास्था क्षोभ और पुरुष की ज्यादतियों समाज के कुरीतिपूर्ण प्रतिबन्धों ने नारी के मस्तिष्क में आज यह पूरी तरह बैठा दिया है कि अब वह पुरुष की दासी बनकर नहीं रहेगी। इसी से स्वाधीनता प्राप्ति के उपरान्त नारी समाज में शिक्षा-प्रचार बढ़ा है। परिणामतः नारी का जिस प्रकार प्राचीन युग में आदर हुआ है वही स्वाधीन युग चेतना से प्रभावित आज की नारी भी चाहती है। यदि घर में वह एक वास्तविक सहधर्मिणी का रूप चाहती है तो वह अपनी कुशाग्रबुद्धि और सहृदयता के आधार पर पुरुष जीवन के अन्य विन्यासों में पुरुष के साथ कन्धे से कंधा मिलाकर चलना चाहती है। क्या उसकी यह मांग न्याय नहीं है ?

जब स्वयं मनु ने लिखा है—"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।" फिर प्रेरणा की गति नारी को पुरुष जीवन के हरदौर में उसे अपने बराबर क्यों नहीं मानता।

जीवन की अनुभूतियों और साहित्य-सृजन में बड़ा ही घनिष्ट सम्बन्ध है। इसी से महिला साहित्यकारों ने साहित्य के क्षेत्र में भी अधिकाधिक प्रवेश कर साहित्य को संबल प्रदान किया है। मेरा प्रबल विश्वास है कि महिला साहित्यकारों ने ममता, वेदना और सन्तुष्टि को साहित्य में पूरी तरह से भर दिया है। यही उनकी प्रकृतिमयी और अनुभूतिजन्य देन है।

प्रस्तुत ग्रन्थ को संकलित करते समय मैंने निम्न कुछ बातों का ध्यान रखा है।

१. मेरा विश्वास है कि परिवार की आधार-भित्ति नारी का बौद्धिक स्तर ऊँचा होने से जीवन अधिक सुखी हो सकता है तथा व्यर्थ के अपवादों की समाप्ति हो सकेगी।

२. आधुनिक प्रतिभावान ऐसी महिलाओं को जिन्होंने अच्छे

साहित्य की रचना को प्रकाश में लाया जा सकेगा । तथा—

३. पाठकों को ऐसी विद्यमान लेखिकाओं की शैली का रसास्वादन हो सकेगा जो बड़े ही सुन्दर एवं रोचक ढंग से साहित्य सृजन में व्यस्त हैं ।

आधुनिक हिन्दी युग के निर्माण में यदि एक ओर भारतेन्दु, प्रसाद निराला, पन्त और मैथिलीशरण जैसे सत्साहित्य महारथियों ने हमारे साहित्य की आधार-शिला रखी है और उसे सुपुष्ट किया है तो दूसरी ओर देवी महादेवी, सुभद्राकुमारी, होमवती, और तारा पाण्डेय आदि ऐसी महिलाएं हैं जिन्होंने अपनी अमूल्य कृतियों द्वारा हमारे साहित्य की श्री-वृद्धि की है । 'साहित्यार्चन' में मैंने यदि विभिन्न समीक्षकों के साहित्यिक विषयों पर स्वतन्त्र समीक्षात्मक मतों का इस बात को पूरी तरह से जानते हुए भी कि मैं उन विचारों का स्वयं भी कहीं-कहीं तो कट्टर विरोधी हूँ, सम्पादन किया है तो प्रस्तुत संकलन में इन लेखिकाओं की जबानी ही मैंने उनकी कहानी सुनवाने की चेष्टा की है । जीवन के मार्मिक चित्रों, सामाजिक और आर्थिक विषमता से प्रेरित रचनाओं, सभ्यता और संस्कृति के पोषण की मूल भावना को द्योतक साहित्यिक कृतियों अथवा हास्य-विनोद के फव्वारों का अंशात्मक आनन्द इन स्वलिखित परिचयों में चाहे इनके प्रकाशन में विलम्ब ही भले हो गया है आपको अवश्य मिल सकेगा ।

मेरा विश्वास है कि अगर नवीन लेखिकाओं की प्रतिभा को विकसित होने का पर्याप्त अवसर मिला तो वे बहुत सुन्दर स्थायी साहित्य का सृजन कर सकती हैं । इसी से 'साहित्य कार' शब्द को शास्त्रीय परिभाषा में जकड़ कर नहीं रखा है, अपितु जिस किसी बहिन ने लेखिनी उठाई है मैंने उसे ही 'साहित्य कार' की संज्ञा प्रदान कर दी है । हो सकता है कुछ साहित्यिक मनीषी इसे मेरी उच्छृंखलता और धृष्टता कहें लेकिन मेरा उनसे सानुनय निवेदन है कि मेरे अपने निश्चित मत के अनुसार जो भी आज लिखने के लिए कलम उठाता है, वह कल साहित्यकार भी

बन सकता है। इन कलियों को फूल बनने दीजिए। असमय में ही यदि ये मुरझा गई तो साहित्योपवन की शोभा कम हो जायेगी।

एक निवेदन और है ये स्व परिचय मैंने दो-तीन वर्ष हुए तब एकत्र किए थे। इसलिए हो सकता है इनमें से कुछ पुराने से मालूम पड़ें, पर उनमें मौलिकता की ताज़गी और घटना-क्रम-शृंखला हर स्थान पर उपलब्ध रहेगी। साथ ही मुझे विश्वास है कि मैं आगामी संस्करण में लेखिकाओं की नवीन कृतियों, उनकी साहित्यिक सफलताओं और उनसे सम्बन्धित अन्य आवश्यक सामग्री का मैं अवश्य ही समावेश कर सकूंगा।

आभार प्रकाशन किस किस के प्रति करूं। मैं तो उन सभी बहिनों का आभारी हूँ जिन्होंने न केवल स्वलिखित परिचय ही भेजे हैं अपितु अपनी सद्भावनाएं भी भेजी है। बहन लीला प्रकाश ने 'आरसी' में मेरी पुस्तक के लिए परिचय भेजने की सूचना निकाली तथा बहिन विमल वेद ने कई परिचय खुद "इन्टरव्यू" लेकर लिख भेजे हैं। उन दोनों का भी मैं अनुग्रहीत हूँ।

जहाँ तक बन पड़ा है मैंने लेखों को अपनी कलम चला बिगाड़ा नहीं है। मेरी 'नमक मिर्च' से शायद सामग्री 'चटपटी' जरूर बन जाती पर उसमें वह स्वाभाविकता न रहती। इसीलिए जो भी जिस लेखिका ने अपने बारे में लिखा है प्राय: वही सब मैंने इस संकलन में सम्पादित कर दिया है। शायद यही इस ग्रन्थ की मौलिकता हो। हां, स्थानाभाव के कारण मैंने कुछ परिचयों को संक्षिप्त करने की धृष्टता की है और कुछ बहिनों के परिचय इस संकलन में नहीं आ सके हैं। उन सब से मैं क्षमा याचना करता हूँ।

देखें, पाठक कैसा आंकते हैं। प्रस्तुत पुस्तक की प्रकाशन व्यवस्था में कुछ अनिवार्य विलम्ब हो गया है जिसके लिए मैं हृदय से क्षमा याचना करता हूँ—सहृदय लेखिकाओं तथा उत्सुक पाठकों दोनों से ही।

बिड़ला लाइन्स दिल्ली, १५ जुलाई, १६६०

—मिलिंद

श्रीमती आदर्श कुमारी

जन्म स्थान तथा तिथि :—अलीगढ़, २२ सितम्बर १९२० में।

शिक्षा :—इन्टर १९३७ में, सी० टी० १९४१ में, अब हिन्दी ऑनर्स कर रही हूँ।

वातावरण :—विद्यार्थी काल से ही लिखने की प्रवृत्ति थी। मेरे पिता (श्री कामताप्रसाद जी एडवोकेट) अंग्रेजी के बहुत अच्छे लेखक हैं। प्रारम्भ में मैंने कुछ कहानियाँ लिखीं जो 'हंस', 'वीणा', 'माया' आदि पत्रों में छपीं। बाद में ब्रज की लोक-कथाओं को प्रकाश में लाने की ओर ध्यान गया। बहुत सी लोक-कहानियाँ ब्रजभाषा और हिन्दी में लिखीं। रेडियो के विभिन्न कार्यक्रमों में समय-समय पर भाग लेती रहती हूँ।

परिवार की साहित्यिक निधियाँ :—परिवार की साहित्यिक परम्परा···मेरे पिता, नाना और पति तीनों की पुरानी है। पिताजी का 'पोलिटिकल विज़डम ऑफ एडमण्ड बर्क' (Political Wisdom of Edmond Burke) नामक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है। नानाजी (स्व० घनसुन्दर लाल जी, कोटा) की रुचि आध्यात्मिक थी। उन्होंने 'सत्-पथ-प्रदर्शक' नामक पुस्तक लिखी है। पति (श्री यशपाल जैन) हिन्दी के लेखक हैं। उनकी अनेक मौलिक, अनूदित, सम्पादित, तथा संकलित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

रचनाएँ :—विभिन्न मासिक पत्रों में प्रकाशित कहानियों के अतिरिक्त दो लोक-कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। (१) ब्रज की लोक-कथाएँ (२) पुण्य की जड़हरी।

सम्पादकीय ज्ञान :—'प्रेमी-अभिनन्दन-ग्रन्थ' के सम्पादन में योग दिया!

सार्वजनिक जीवन :—शिक्षा-कार्य में विशेष रुचि रही। कुछ दिनों अवैतनिक कार्य भी किया। सी० टी० करने के बाद एक वर्ष अध्यापन-कार्य किया। लेकिन अब उस ओर रुचि नहीं रही है। लेखन-कार्य की ओर मन का झुकाव है। मुझे सार्वजनिक क्षेत्र में भाग-दौड़ का काम अधिक पसन्द नहीं है। ऐसा कुछ काम करने को जी होता है—जिससे लोगों में सुसंस्कार उत्पन्न हों और उनकी रुचि ध्येय-निष्ठा तथा कर्त्तव्य-पालन की ओर अग्रसर हो।

वर्तमान पता :—द्वारा श्री यशपाल जैन, ७/८ दरियागंज, दिल्ली।

भावी साहित्यिक योजनाएँ :—१. मैं चाहती हूँ कि लोक-साहित्य का भंडार अधिक से अधिक परिपूर्ण हो। इस दिशा में मेरी योजना कुछ कहानियाँ और लिखने की है। साथ ही ब्रज के सांस्कृतिक जीवन पर भी कुछ लिखने का विचार है।

२. महिला-समाज को अंध-विश्वासों तथा हानिकारक रूढ़ियों से मुक्ति मिले, इस दिशा में भी कुछ साहित्य देना चाहती हूं। लेकिन सबसे अधिक आवश्यकता मैं बाल-साहित्य की अनुभव करती हूं। हिन्दी में बच्चों के लिये बहुत कम साहित्य है, और मेरी इच्छा है कि इस ओर विधिवत् प्रयास करूँ।

३. समय-समय पर मैंने भारत के विभिन्न दर्शनीय स्थानों की यात्रा की है। उन पर कुछ लिखा भी है। हिन्दी में यात्रा-साहित्य का पर्याप्त अभाव है। यात्रा-सम्बन्धी कुछ और लेख लिखकर एक संग्रह प्रकाशित करने की इच्छा है।

श्रीमती आशारानी व्होरा

चालू नाम शकुन्तला व्होरा है, लेकिन इधर कुछ वर्षों से आशा रानी व्होरा के नाम से लिखती हूं।

जन्म स्थान तथा आयु :—जिला झेलम पंजाब, अब पश्चिमी पाकिस्तान में हैं। आयु चौंतीस वर्ष।

शिक्षा :—शिक्षा के नाम पर कुछ नहीं। जीवन का संघर्ष व प्राप्त अनुभव ही मेरी शिक्षा है। बचपन में प्रतिभावान। शिक्षा, कला व संगीत की ओर तीव्र झुकाव। कक्षा में सदा सर्वप्रथम रहने पर भी अधिक नहीं पढ़ सकी। मिडिल पास करने पर पन्द्रह वर्ष की आयु में ही विवाह हो गया। विवाह एक धनाढ्य व्यापारी परिवार में हुआ किन्तु जहाँ धन के अतिरिक्त शेष सब शून्य था। अशिक्षित, असंस्कृत, पिछड़ा हुआ, रूढ़िवादी घरेलू वातावरण—जीवन का सबसे प्रथम व बड़ा आघात। उस दबे-घुटे वातावरण में ही कविता के स्वर फूटे। किसी प्रकार के भी प्रोत्साहन अथवा पथ-प्रदर्शन के अभाव में भी अन्तःप्रेरणा से चोरी-छिपे पढ़ना-लिखना जारी रहा। अनेक विरोधों के बावजूद भी किसी प्रकार मैट्रिक, हिन्दी रत्न फिर हिन्दी प्रभाकर की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं।

साहित्य की ओर प्रोत्साहन करने वाला वातावरण :—केवल जीवन का प्रभाव व संघर्ष, दूसरा कुछ नहीं। किसी भी प्रकार के निर्देशन अथवा प्रोत्साहन के अभाव में ही यदा-कदा कविता, लेख व गीत लिखती रही। प्रभाकर परीक्षा के पाठ्यक्रम के अतिरिक्त उन दिनों दूसरी साहित्यिक पत्रिकाओं व पुस्तकों के अध्ययन, मनन आदि की भी सुविधा नहीं मिल सकी। कभी कोई पत्र हाथ में आ जाता, तो जैसे कुछ मिल जाता। दूसरों की रचनाओं के सन्मुख अपनी रचनाएँ हलकी जान पड़तीं

तो बहुधा फाड़कर फेंक दिया करती व फिर अकेले ही लिखने का प्रयत्न करती ! कभी कोई रचना किसीसे संशोधित कराने का अवसर नहीं मिला। पत्रों में भेजने तक का साहस नहीं था। न ही पत्रों की विशेष जानकारी ही थी। यही कारण था कि सन् सैंतालीस से पूर्व केवल दो ही रचनाएं हिन्दी मिलाप लाहौर से प्रकाशित हो सकीं।

परिवार की अन्य साहित्यिक विभूतियां :—दोनों पक्षों के परिवारों में साहित्यिक क्या, साहित्यिक अभिरुचि रखने वाला भी कोई नहीं था।

सार्वजनिक जीवन :—पाकिस्तान बनने से पूर्व पंजाब में ही सार्वजनिक सेवा के प्रति झुकाव हुआ। नगर की कतिपय संस्थाओं में भाग लिया। एक महिला क्लब की स्थापना भी की। किन्तु घरेलू-प्रतिबन्धों के कारण खुलकर अथवा बाहर जाकर कार्य नहीं कर सकी। पाकिस्तान में धन, सम्पत्ति, व्यापार नष्ट हो जाने पर ही खानदान के कथित बडप्पन का मोह बंधन छूटा। संयुक्त परिवार से मुक्ति मिली, तो अवसर पाते ही सार्वजनिक क्षेत्र में कूद पड़ी। शरणार्थी बहिनों को बसाने व काम पर लगाने के लिए ग्वालियर में कुछ काम किया। बचपन से सिलाई-कटाई और कलाओं का शौक होने के कारण उनमें नए-नए आविष्कार कर इस क्षेत्र में पर्याप्त ज्ञान अर्जित कर लिया था, जो काम आया। साथ ही बम्बई के इंगलिश टेलरिंग कालिज से टेलरिंग की उच्च शिक्षा का डिप्लोमा भी प्राप्त कर लिया था। स्वास्थ्य की खराबी के कारण ग्वालियर की गर्म जगह छोड़कर सन् १९५० से महू में हूँ।[१] पति एक साधारण ऊन व होजरी की दुकान करते हैं और मैं आर्थिक कठिनाई को अनुभव करती हुई भी अपने उस व्यवहारिक ज्ञान का उपयोग अपने लिए न कर सार्वजनिक कार्य में व्यस्त हूं। महिला-संघ आदि अन्य संस्थाओं में सक्रिय भाग लेने के अतिरिक्त मैंने जिस संस्था की स्थापना महू में की थी तथा उसका संचालन अभी तक कर रही हूँ,

---

१ वर्तमान पता।

उसके विषय में आप जानते हैं ही ।[1]

साहित्यिक कार्य :—निरन्तर अस्वस्थ रहने व व्यस्त रहने पर भी अपनी प्रवृति स्वभावतः इस ओर होने के कारण बीच-बीच में लेखन-कार्य भी चलता ही रहा है । नारी की पारिवारिक व सामाजिक समस्याओं का तथा गृह-विज्ञान, गृह-उद्योग, गृह-कलाओं का विस्तृत अध्ययन व व्यावहारिक ज्ञान होने के कारण अधिकतर पत्रों के महिला-स्तम्भों के लिए लिखती हूँ । कुछ सामान्य सामाजिक लेख भी लिखे हैं । कविताएँ व गीत भी लिखती हूँ । किसी साहित्यिक गुरु अथवा मित्र के पथ प्रदर्शन व प्रोत्साहन के अभाव में भी बार-बार के प्रयत्न से मेरी रचनाएँ प्रकाशित होती हैं, यद्यपि मैं इसे सफलता नहीं कह सकती । प्रवाह (अकोला म० प्र०), आरसी (कानपुर) व दैनिक जागरण (इन्दौर) के रविवासरीय महिला-स्तम्भ में नियमित रूप से लिखती रही हूं । सरस्वती, सरिता, समाज, नारी, नया जीवन, साप्ताहिक हिन्दुस्तान व धर्मयुग आदि सभी पत्रों में रचनाएँ छपी हैं । कुल मिलाकर अस्सी के लगभग लेख, व पैंतीस के लगभग गीत प्रकाशित हुए हैं । इधर इन्दौर रेडियो से 'महिला-संसार' कार्यक्रम में कुछ वार्ताएँ प्रसारित की हैं । पुस्तकों के लिए ये पांडुलिपियाँ तैयार पड़ी हैं—

१. आँसू का आभार (गीत-संग्रह)

२. वस्त्र कटाई-विज्ञान (टेलरिंग शिक्षा)

३. सुगृहिणी (महिला साहित्य)

४. नारी युग कल्याणी (महिला-साहित्य—हाथ में है) इसके अतिरिक्त कटाई व गृह उद्योगों पर भी कुछ पुस्तिकाएँ छपाना चाहती हूं,

---

१ यह संस्था महिलाओं की बहुमुखी उन्नति में संग्लन है । बहिनों के चारित्रिक और आध्यात्मिक उत्थान की ओर भी विशेष ध्यान देती है। व्यवसायिक कलाओं में शिक्षा तो प्रदान करती ही है —सम्पादक

२ काल यापन के अन्तर्गत संख्या का बढ़ जाना स्वाभाविक ही है ।

परन्तु अर्थ व साधन अभी सुलभ नहीं हैं।

सम्पादकीय ज्ञान व अनुभव :—केवल दो पत्रों में महिला-स्तम्भों का ही सम्पादन 'आशा दीदी' के नाम से किया है। तीसरे में अब जनवरी से प्रारम्भ कर रही हूं।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा :—स्वतन्त्रता के बाद जिस प्रकार महिलाओं के दायित्व बढ़ गए हैं उन्हें निभाने के लिए तथा भावी पीढ़ी के निर्माण के लिए हिन्दी में अच्छी कही जाने वाली कोई भी महिला पत्रिका न होने से इस अभाव की पूर्ति की दिशा में कार्य करने की प्रबल इच्छा है। यदि स्वास्थ्य ने साथ दिया तथा कहीं से आर्थिक साधन या सहयोग प्राप्त हो सका तो इस क्षेत्र में अवश्य कुछ कर सकूंगी, ऐसी आशा है।

कविता में मेरी अभिरुचि है किन्तु काव्य का विशेष अध्ययन मैंने नहीं किया है न, ही किसी 'वाद' विशेष से परिचित हूँ। केवल अपने अन्तर का दर्द हल्का करने के लिए कभी-कभी गीत लिख लेती हूं।

इस प्रकार उपरोक्त विवरण से आपको ज्ञात होगा कि मैं न तो कवियित्री हूँ, न साहित्यिक ही ! अपनी नारी जाति की पीड़ा ने ही मुझे झकझोर कर मुझसे यह जो कुछ थोड़ा-सा कार्य करवा लिया है, कर पाई हूँ। आगे भी इसी दिशा में कार्य करना चाहती हूँ, फिर चाहे सामाजिक कार्य द्वारा उनमें घुलकर अथवा कलम द्वारा अपनी आवाज उन तक पहुँचाकर करूं। दूसरा मार्ग निस्संदेह सरल है किन्तु प्रथम मार्ग कष्टकर होते हुए भी सत्य व सन्तुष्टि के अधिक निकट है, ऐसा मैं मानती हूँ।[1]

---

१ श्रीमती व्होरा अब अपने परिवार के साथ दिल्ली ही आ गई हैं और स्वतन्त्र लेखक का कार्य भी अपनी अभिरुचि के अनुकूल कर ही रही हैं।

सुश्री कुलश्रेष्ठ, इन्दिरा 'नूपुर'

जन्म-स्थान व तिथि :—नागपुर, ३ सितम्बर १९३२ में।

शिक्षा :—प्रारम्भिक शिक्षा कई स्थानों में हुई। १९५० में लखनऊ विश्वविद्यालय से बी० ए०। तदनन्तर लम्बी बीमारी के कारण दो वर्ष तक पढ़ाई स्थागित रही। १९५३ में राजकीय प्रशिक्षण महा विद्यालय से एल० टी०। १९५५ में प्रयाग विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम० ए०। फिर १९५५ में ही नौकरी।

साहित्य की ओर प्रेरित करने वाला वातावरण :—वातावरण कुछ विशेष साहित्यिक न होने पर भी बचपन से ही पढ़ने और लिखने की ओर विशेष अभिरुचि है। वास्तव में अधिक समय तक एक-मात्र संतान रहने के कारण व बचपन में अधिक मित्र आदि न होने के कारण किताबें ही समय काटने का साधन रहीं। फिर बोर्डिंग में रहने के कारण वाद-विवाद और प्रतियोगिताओं आदि में बराबर भाग लिया।

मेरे पिता श्री हरिहरदयाल जी ने स्वयं अर्थशास्त्र का विशेष अध्ययन किया और कुछ पुस्तकें भी लिखीं। और मां को भी अपने स्कूल के दिनों में भाषण आदि देने में तथा निबन्ध आदि लिखने में अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा :—उपन्यास व कहानी कला में प्रयास। यों तो अब तक मैंने कहानियाँ ही अधिक लिखी हैं, फिर भी नाटक और कविताओं का क्षेत्र अछूता नहीं है। नाटक तो प्रायः लखनऊ, इलाहाबाद, धारवार, इन्दौर, मद्रास, नागपुर, त्रिवेन्द्रम, कलकत्ता, आदि सभी आकाशवाणी के केन्द्रों से प्रसारित हो चुके हैं, कविताएं प्रसारित भी हुई हैं और प्रकाशित भी।

रचनाएँ :—अनेक कहानियों, नाटकों, कविताओं के अतिरिक्त एक उपन्यास 'उन्मन' प्रयाग के प्रतिष्ठित पत्र 'भारत' में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हो चुका है। दूसरा 'मंजिल और मौत' अभी अप्रकाशित है। तीसरा "पत्थर की रेखा" अभी पूरा नहीं हुआ। एक रुपान्तर 'टूटे तारे', हिन्दी में किया है। यह अंग्रेजी उपन्यास Ayesha by Rider Haggard से रूपान्तर। इसकी प्रकाशन सम्बन्धी चर्चा चल रही है।

सार्वजनिक कार्य :—स्थानीय गवर्नमेंट इन्टर गर्ल्स कालिज में अंग्रेजी की प्राध्यापिका। प्रायः 'कल्पना' 'अजन्ता' 'नई धारा' आदि में रचनाएं प्रकाशित हो जाती हैं। शिक्षा विभाग की पुस्तिका 'शिक्षा' में भी 'नर्सरी एज्युकेशन' के विषय में लेख प्रकाशित हुए हैं।

योजनाएं :—उपन्यास मौलिक लिखने के अतिरिक्त मेरा विचार अंग्रेजी में Problems of Nursery Education पर एक ऐसी पुस्तक लिखने का है, जो हमारे सामने कुछ अच्छे सुझाव दे सके और लिखने की जब-जब प्रेरणा होती है मन तो मानता ही नहीं शायद मानेगा भी नहीं।

सुश्री इरफाना सिद्दीकी

मेरा नाम इरफाना सिद्दीकी ही है, जैसाकि पत्रों में प्रकाशित होता है।

मेरा जन्म २, सितम्बर १६३६ को लखनऊ में हुआ था। इस समय मैं 'जनता कालिज' शाजापुर की एक छात्रा हूँ।

जब मेरी पढ़ाई शुरू हुई, तब मैं घर से तो जरूर स्कूल के लिए निकलती थी, किन्तु हाजिर कितने दिन रहती थी इसका जवाब शायद हाजिरी रजिस्टर ही ठीक से दे सकेगा। मगर उस अगले साल ही अपने भाई-बहिन की पढ़ाई से प्रभावित होकर शौक के साथ पढ़ना शुरू किया और क्लासों में सर्वप्रथम रहने के कारण पुरस्कार पाती रही। चौथी क्लास पास करने के बाद मुझे शाजापुर से बाहर जाना पड़ा और किन्हीं कारणों से पाँच साल तक मेरी स्कूली पढ़ाई रुकी रही। इन पाँच सालों में आखिरी तीन साल तो ऐसे थे, कि पढ़ने को कुछ मिलना तो दूर रहा, डेली पेपर भी ईद के चाँद की तरह ही नजर आता था।

शाजापुर में फ़ादर के पास आकर फिर पढ़ाई शुरू की और पढ़ती रही।

मेरे बड़े भाई अता सिद्दीकी अवश्य उर्दू के एक अच्छे अदीब हैं। किन्तु उनका और मेरा साथ बहुत ही छोटी उम्र में रहा है, क्योंकि उन्हें भी तालीम के सिलसिले में सदा घर से दूर रहना पड़ा है। इस लिए मेरे ऊपर उनका प्रभाव पड़ने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। मैं खुद नहीं जानती कि किस प्रेरणा से प्रभावित होकर मैंने लिखना शुरू किया।

मुझे कहानियाँ और स्कैच लिखने में विशेष आनन्द आता है। इस के अलावा महिलाओं और बच्चों के लिए लिखने में भी मुझे खुशी

महसूस होती है।

मेरी रचनाएं वे ही हैं जो समय-समय पर पत्रों में प्रकाशित तथा रेडियो से प्रसारित होती रहती हैं। यानी कहानियाँ, स्केच, लेख, बच्चों और महिलाओं सम्बन्धी उपयोगी बातें आदि। अप्रकाशित यों समझिये कुछ भी नहीं है, क्योंकि जो लिखती हूं, वह प्रकाशित करने भेज देती हूँ और सौभाग्यवश प्रकाशित हो ही जाता है। किताब की सूरत में कुछ नहीं है।

सम्पादकीय अनुभव विशेष नहीं है, क्योंकि सन् ५५ से ही लिखना शुरू किया है। फिर भी दैनिक 'नई दुनियाँ' इन्दौर में प्रति सप्ताह महिलाओं का कालम 'आँगन और आँचल' सुखदा के नाम से मैं ही पेश करती हूँ।

इस छोटी-सी पिछड़ी हुई जगह पर सार्वजनिक जीवन क्या हो सकता है? फिर भी यहाँ महिला-कांग्रेस की शाखा है और उसकी मैं सैक्रेटरी हूं।

भावी साहित्य सेवाओं की योजना तो शायद प्रत्येक साहित्यकार बनाता है लेकिन अपने मकसद में कितने लोग कामयाब हो पाते हैं इसके बारे में कुछ भी कहना ठीक नहीं समझती। इसका सही जबाव वक्त देगा।

मेरा वर्तमान पता है, इरफाना सिद्दीकी शाजापुर (म० प्र०)

श्रीमती उर्मिला कुमारी गुप्ता

मेरा जन्म ७ मई, १९३४ को दिल्ली में हुआ था। मैंने एम० ए० हिन्दी तक शिक्षा प्राप्त की है। मेरे पति प्रोफेसर सुरेशचन्द्र गुप्त स्थानीय देशबन्धु कालिज कालका जी नई दिल्ली में हिन्दी के अध्यापक हैं। उन्होंने हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में अनेक कृतियों की रचना की हैं। सन् १९५३ में विवाह के उपरान्त उनके सम्पर्क में आने पर साहित्य के प्रति मेरी अभिरुचि भी जागृत हुई। मैंने उपन्यास, एकांकी नाटक, आलोचना, जीवन-लेखन तथा बाल-साहित्य की रचना की ओर विशेष ध्यान दिया है। इसके अतिरिक्त स्फुट रूप में मैंने कुछ निबन्धों तथा कविताओं की भी रचना की है। मेरी अब तक पुस्तकाकार प्रकाशित रचनाएं इस प्रकार है।

(१) वंश वल्लरी (उपन्यास)

(२) महादेवी वर्मा और उनका आधुनिक कवि (आलोचना)

(३) काव्य-समीक्षा (आलोचना)

(४) कथा-निकुंज (बाल-साहित्य)

(५) छल का फल (बाल-साहित्य)

(६) निबन्ध-निकुंज (सामाजिक राजनैतिक निबन्ध)

मेरी रचनाएं स्फुट रूप से पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। मेरी अप्रकाशित पुस्तकाकार रचनाएँ इस प्रकार हैं।

(१) संकुचित सीमाएँ (उपन्यास)

(२) अमृत-कन्या (एकांकी नाटक-संग्रह)

(३) चार बालोपयोगी कथा-संग्रह

भविष्य में उपन्यास लेखन की ओर विशेष ध्यान देना चाहती हूँ।

मेरा पता यह है—
उर्मिला कुमारी गुप्ता
द्वारा प्रोफेसर सुरेशचन्द्र गुप्त
देशबन्धु कालिज, कालका जी, नई दिल्ली ।

श्रीमती उर्मिला वार्ष्णेय

मेरा जन्म सांखनी, जिला बुलन्दशहर में हुआ था। होश संभाला तो अपने को अलीगढ़ में पाया। वहीं के साहित्यिक और सामाजिक जीवन में मैंने अपने को पनपाया। यों तो शिक्षा एम० ए० तक ली हुई है, पर इस वर्ष पी० एच-डी० के लिए प्रार्थना-पत्र भेजा है।

मेरे नानाजी पूज्य मनीषी चिम्मनलाल जी आर्य-जगत् में विख्यात हैं। उन्होंने अस्सी छोटी-बड़ी पुस्तकें लिखी हैं। माता जी (प्रियंवदा गुप्ता) उनके प्रभाव से अछूती न रहीं और आरम्भिक उपन्यासाकारों में हम उन का नाम गर्व के साथ ले सकते है। 'कलियुगी परिवार' 'धर्मात्मा चाची' तथा 'अभागा भतीजा' आदि प्रमुख हैं। इधर पिता जी विशम्भर सहाय शहर के प्रमुख वकील तो थे ही, उन्होंने भी अनेक पुस्तकें लिखीं हैं। 'हिस्ट्री ऑफ इन्डिया' तथा 'पाकेट इन्डिया ज्योग्राफी' आदि कुछ हैं। पुस्तकें पंजाब की परीक्षा में लगी हुई थीं। इस प्रकार अपने परिवार के इस सुमधुर साहित्यिक वातावरण का मुझ पर प्रभाव पड़ा, तो आश्चर्य नहीं।

अपनी उच्च शिक्षा के बाद ही मैंने साहित्य-संसार में पैर रखा। इस ओर बढ़ने का एक कारण यह भी हुआ कि जब मैं एम० ए० के बाद ही सन् ५१ में वयोवृद्ध श्री बाबू गुलाब राय जी से पी० एच० डी० के बारे में मिली, तो उन्होंने मुझे लिखने के लिए उत्साहित किया। मेरा पहला लेख सन् ५१ में ही साहित्य-संदेश में 'पृथ्वीराज रासो और उसकी भाषा', उनके सम्पादकत्व में ही छपा (जिसकी खोजपूर्ण आलोचना को काफी सहराया गया)। इसके बाद मैं निरन्तर लिखती रही। मुझे इस बात का हर्ष है कि नए साहित्यकारों की भांति मुझे इस क्षेत्र में अधिक निराशा का सामना नहीं करना पड़ा। प्रायः सभी दैनिक,

साप्ताहिक और मासिक पत्र-पत्रिकाओं ने मेरी रचनाओं का स्वागत किया। अपने इस आरम्भिक प्रयास में श्री ठाकुर श्रीनाथसिंह जी, श्री पंडित बनारसीदास जी चतुर्वेदी तथा श्री हृषिकेश शर्मा, श्री विट्ठल शर्मा चतुर्वेदी तथा श्री फतहचन्द्र शर्मा 'आराधक' की आभारी हूँ।

यों तो आलोचनात्मक निबन्ध, सामाजिक कहानियाँ, एकांकी तथा कविताएँ आदि सभी साहित्यिक दिशाओं में मैंने लिखने का प्रयास किया है, पर सांस्कृतिक विषयों पर खोजपूर्ण लेख लिखने में मेरी विशेष अभिरुचि है।

स्वतन्त्र रूप से मेरी कोई प्रकाशित पुस्तक नहीं है, पर आंशिक रूप से 'सामान्य ज्ञान' नामक तीन पुस्तकें लिखीं जो सम्मेलन की प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा परीक्षाओं के कोर्स में प्रेस्क्राइब्ड हैं। हाँ, अब जो पहली पुस्तक होगी उसका नाम होगा, 'भारत और विश्व के सांस्कृतिक सम्बन्ध' (जिसके कुछ भाग लेखों के रूपमें विभिन्न पत्रों में प्रकाशित हो चुके हैं।)

अब तक करीब पांच सौ लेख विभिन्न विषयों पर लिखे होंगे, जो सभी प्रकाशित हैं तथा कुछ वार्ताओं के रूप में अखिल भारतीय रेडियो दिल्ली से देश और कुछ विदेशों के लिए प्रसारित हो चुके हैं।

अलीगढ़ से निकलने वाला पत्र 'बारहसैनी' में सहसम्पादिका के रूप में कार्य किया। दिल्ली से निकलने वाले 'पराग' की सम्पादक समिति में भी मेरा नाम था।

यों तो मनुष्य की बडी-बड़ी योजनाएँ होती हैं पर जिनमें सफलता मिले वही सार्थक हैं।

अपने विवाह के बाद भी मैंने अपनी साहित्यिक प्रगति के लिए सुन्दर वातावरण पाया है। मेरे पति शरदेन्दु जी स्वयं अच्छे कवि और लेखक हैं। साथ ही हिन्दी के प्रमुख दैनिक 'हिन्दुस्तान' के सम्पादकीय विभाग में हैं। फिर भी अपने भविष्य के बारे में कुछ कहना कठिन ही लगता है, पर कल्पनाएं तो सुमधुर हैं ही।

पता :—जैना बिल्डिंग रोशनारा रोड, दिल्ली ६.

कुमारी उषा जायसवाल

अपने आप अपना परिचय देते समय सम्भवतः कुछ झिझक अनुभव करना अस्वाभाविक नहीं। विशेष रूप से जब मैं वर्तमान में स्वयं को 'साहित्यकार' के पवित्र विभूषण से विभूषित करने में लज्जा का अनुभव करती हूँ। कारण प्रत्यक्ष हैं, प्रथम तो मेरी अभी तक एक पुस्तक प्रकाशित हुई है, द्वितीय निकट भविष्य में कोई प्रकाशित होगी इसमें मुझे सन्देह है और तृतीय मैं अभी तक विद्यार्थी ही हूँ। यद्यपि साहित्यकार बनने की सुप्त अभिलाषा एवं आशा है, किन्तु कभी-कभी कुछ व्यक्तिगत परिस्थितियों एवं संघर्षों से हताश होकर सोचती हूं, क्या रखा है साहित्यकार बनने में। हृदय के इस अन्तर्द्वन्द्व को शब्दों में व्यक्त करना असंम्भव है, किन्तु हृदयवान् उससे स्वयं परिचित होंगे।

यों तो किसी भी व्यक्ति की जन्मतिथि, उसका जन्म स्थान व पारिवारिक सम्बन्धों का साहित्य में महत्व ही क्या है, पर आज के मनोविज्ञान शास्त्र में वंशानुक्रमण एवं वातावरण का प्रभाव छिपा नहीं। मनुष्य परिस्थितियों का दास है अथवा परिस्थिति बलात् मनुष्य से अपने अनुरूप कार्य करवा लेती हैं, कहना कठिन है। साथ ही मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति-जिज्ञासा को भी तृप्ति मिलनी ही चाहिए। इस दृष्टिकोण को समक्ष रखकर मैं अपना परिचय देने के लिए प्रस्तुत हूँ।

मेरा जन्म बर्मा के मेम्यो नामक छोटे से समतल प्रदेश में १६ फरवरी १९३५ में हुआ था। मेरा परिवार उस नगर में अपनी समृद्धता के लिए प्रसिद्ध था। मेरे बाबा श्री लक्ष्मीनारायण जी वहाँ के प्रसिद्ध बैरिस्टर थे तथा मेरे पिता तेजनारायण प्रसाद जी अपनी मिल की देखरेख करते थे और एक प्रसिद्ध अंग्रेजी होटल के मैनेजर थे।

मेरी शिक्षा साढ़े तीन वर्ष की आयु से एक यूरोपीय तथा बर्मीज़ सभ्यता मिश्रित प्रभावयुक्त प्रारम्भिक पाठशाला में हुई। पाठशाला में हिन्दी भाषा के लिए कोई विशेष प्रबन्ध न था। कुछ भारतीय छात्रों तथा छात्राओं के माता-पिताओं के अनुरोध से एक भारतीय शिक्षक हम लोगों को नाम-मात्र की हिन्दी पढ़ा दिया करते थे। मेरी माँ श्रीमती भगवती देवी जी को आरम्भ से ही मेरी शिक्षा का विशेष ध्यान था। और जब उन्होंने मेरी रुचि विशेष का बल पाया तो वह और भी प्रभावित हुईं। वे स्वयं हिन्दी की शिक्षा धार्मिक कथाओं सहित अत्यधिक मनोरंजक ढंग से देती रहीं। फलतः मुझे आरम्भ से ही हिन्दी से प्रेम हो गया। दूसरे शब्दों में अँग्रेजी एवं बर्मीज़ के परायेपन के समक्ष हिन्दी में विशेष अपनापन अनुभव करने लगी।

बाल्यावस्था से ही मुझे कक्षा में प्रथम आने का गर्व प्राप्त हुआ। यद्यपि इस पाठशाला में मैं केवल छः साल तक ही शिक्षा ग्रहण कर सकी तथापि मुझ पर उसका प्रभाव शाश्वत है। अँग्रेजी से अब भी मेरे सत्-प्रेम को उसी पाठशाला की देन समझना अनुचित न होगा। आज कल मैं अँग्रेजी साहित्य के अध्ययन में निमग्न हूँ। हिन्दी साहित्य को कुछ दिनों के लिए तिलांजलि सी दे रखी है। बर्मीज़ भाषा के तो कुछ टूटे-फूटे अक्षर, कुछ शब्द और अर्थ-मात्र ही स्मृति पटल पर अंकित हैं। मेरे पाठशाला तथा विद्यार्थी जीवन का वह स्वर्णयुग था, मैं जिसकी मधुर स्मृति में अब भी आत्म-विभोर हो उठती हूँ।

सन् १९४१ में मेरा परिवार द्वितीय महायुद्ध एवं कुछ पारिवारिक कारणों से भारत आ गया। तब से हम लोग निरन्तर लखनऊ में हैं। मेरे पूर्वज यहीं के निवासी थे। बर्मा में रहने के अतिरिक्त भी हम लोग अपने सभी शुभ कार्य यहीं सम्पन्न किया करते थे। तात्पर्य यह है कि हमारा भारत से निरन्तर सम्बन्ध बना रहा। अचानक देश-परिवर्तन का हम लोगों पर किसी भी अर्थ में अच्छा प्रभाव न पड़ा। पहाड़ी प्रदेश का जन्म और लखनऊ की भीषण गर्मी का प्रभाव स्वास्थ्य एवं स्वभाव दोनों

पर ही पड़ा। इस परिवर्तन का प्रत्यक्ष प्रभाव शिक्षा पर था। अन्य विषयों की अपेक्षा मैं हिन्दी में अधिक कमजोर थी किन्तु शीघ्र ही मैंने इस कमजोरी पर विजय पा ली और शिक्षा में पुनः वही स्थान ग्रहण कर लिया। आठवीं कक्षा तक तो स्थिति अच्छी रही किन्तु अनायास ही कुछ पारिवारिक परिवर्तन के कारण ऐसा आभास होने लगा जैसे उच्च शिक्षा प्राप्त करने की अभिलाषा स्वप्न ही था। शिक्षा तो मेरी अभिरुचि के बल पर अबाध गति से चलती रही किन्तु मैं शिक्षा में उच्च स्तर से गिर गई।

मैंने लखनऊ विश्वविद्यालय से सन् १९५२ में बी० ए०, कान्यकुब्ज ट्रेनिंग कालेज से १९५३ में एल० टी०, तथा बनारस हिन्दू विश्व-विद्यालय से १९५५ में एम० ए० हिन्दी में किया। सन् ५० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की थी। हाई-स्कूल परीक्षा से मुझे प्रायः द्वितीय श्रेणी ही प्राप्त होती रही। पर मुझे प्रसन्नता एवं गर्व यह है कि हाई स्कूल परीक्षा के उपरान्त ही मेरे माता-पिता आर्थिक दृष्टि से मेरे भार से मुक्त हो गए। मैं स्वयं सफलतापूर्वक अपना भार उठाने में समर्थ हुई। मैं उस परम सत्ता को कोटिशः धन्यवाद देती हूँ जिसकी कृपा से मैं असफल होने का आनन्द न उठा सकी।

बाल्यावस्था से ही मुझे संगीत से राग था। मेरे ही समान मेरी माँ को भी यह अभिलाषा थी कि मैं इस कला में निपुण बनूं। स्कूल में मैं समारोहों में नृत्य-गीत में सक्रिय सदैव भाग लिया करती थी। रजत-पदक शब्दों में तो कई बार लेकिन वास्तव में तीन-चार बार ही प्राप्त हो सके। मुझे नृत्य की शिक्षा घर पर ही एक शिक्षक दिया करते थे। कथक नृत्य की शिक्षा एक प्रसिद्ध शिक्षिका से ग्रहण करना आरम्भ किया था। खेद है कि मुझमें यह कला अपूर्ण ही रह गई। कंठ-संगीत की शिक्षा एक सूर-शिक्षिका देती रहीं, किन्तु मेरी यह शिक्षा भी अपूर्ण ही रही। इण्टरमीजिएट व विशारद की परीक्षाओं में मेरा यह

एक विषय रहा । स्कूल में इसी संगीत कला की प्रसिद्धि के कारण मुझे कान्य कुब्ज वोकेशनल डिग्री कालेज लखनऊ के बेसिक विभाग में बच्चों को नृत्य एवं संगीत की शिक्षा देने का कार्य मिल गया था । बी० ए० पास करने तक निरन्तर मैं उसी कार्य में लगी रही । एल० टी० के अध्ययन-काल में मैंने इसे एक बाधा समझकर इससे मुक्ति प्राप्त कर ली थी । किन्तु एल० टी० परीक्षा के उपरान्त मुझे इसी कालेज के जूनियर सैक्शन में शिक्षिका स्थान प्राप्त हो गया । जुलाई १६५६ में लखनऊ विश्वविद्यालय से मैंने एम० ए० (अंग्रेजी) का अध्ययन जारी किया । अतः मैंने सम्मानपूर्वक इस कार्य से मुक्ति प्राप्त कर ली । परि-स्थिति का ही दूसरा नाम भाग्य है और अभाग्यवश आरम्भ से ही अध्य-यन सुचारुरूप से करने में असमर्थ रही और अन्त में परीक्षा में सम्मिलित भी न हो पाई । मैं हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों में समान अधिकार प्राप्त करना चाहती हूं । इच्छा तो तुलनात्मक अध्ययन करने की है ।

अध्ययन के साथ ही मुझे अन्य कार्य करने की अत्यधिक रुचि रही है । मैंने मधु-मक्खी पालने की पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर परीक्षा उत्तीर्ण की है । सन् ५६ के ग्रीमावकाश में मैंने फल-संरक्षण विभाग द्वारा फल-संर-क्षण की शिक्षा ली तथा परीक्षा में मुझे प्रथम श्रेणी प्राप्त हुई । एल० टी० में महिला-छात्राओं की मोनीट्रेस थी—विशेष अवसरों पर स्वागत संगीत के निर्माण एवं विदा-संदेश देने की मुझे साध सी रहती थी । काव्य-कुन्ज वोकेशनल डिग्री कालेज के अध्यापक संघ की सन् ५६ तक निरन्तर ज्वाइण्ट सेक्रेटरी रही हूँ । कलाकार एवं कला के बीच मुझे आनन्द सा प्राप्त होता है । मुझे भारतीय कला से विशेष लगाव है यद्यपि मैं इस कला में निरक्षर ही रही हूँ ।

मेरे जीवन का विशेष लक्ष्य साहित्य सेवा है । यह रुचि स्वाभाविक ही है । भविष्य भविष्य ही है । अब तक बालपन में मैं स्वयं अपने को भाग्य-विधाता समझती रही, पर अब मैं भाग्य-वादिनी-सी होती जाती हूं । वर्तमान स्थिति में तो मैं अपनी ही सेवा करने में असमर्थ रहती हूं ।

साहित्य-सेवा कैसे करूँ ? एम० ए० परीक्षा के बाद अनायास ही कम्पीटीटिव परीक्षाओं की ओर आकृष्ट हो गई थी। साहित्य से कुछ दिनों के लिए मोह हट-सा गया था। भाग्यवश आयु कम होने के कारण इन परीक्षाओं में अब तक सम्मिलित नहीं हो सकी हूं और अब साहित्य के समक्ष उनका आकर्षण समाप्त सा हो गया है।

हाई स्कूल उत्तीर्ण करने के बाद मैंने कुछ सामाजिक कहानियाँ लिखी थीं। उन कहानियों का स्तर एवं भाषा तथा भाव निम्न कोटि का रहा होगा। अतः सम्पादकों ने आपने सम्मान का ध्यान रखते हुए उन्हें अस्वीकृत किया तो उनका दोष ही क्या ? कहानियाँ फाड़कर तब तक लिखने का निश्चय किया जब तक कि मेरी स्थिति दृढ न हो जाय। साथ ही सर्वत्र प्रोत्साहन का अभाव तथा अपनी ही व्यवस्ताएं अन्य बाधाएँ थीं।

"रत्नाकर तथा उनका काव्य" नामक मेरी पुस्तक नवम्बर १९५७ में हिन्दी प्रचारक वाराणसी से प्रकाशित हुई। अपनी पुस्तक पर अपने ही विचार व्यक्त करने में अपने को असमर्थ पाती हूं। हाँ, पाठकगण के विचार जानने की जिज्ञासा सदैव बनी रहती है। इतना साहसपूर्वक कहना मैं अनुचित नहीं समझती हूं कि रत्नाकर जी के जीवनवृत पर मैंने प्रामाणिक प्रकाश डालने का प्रथम प्रयास किया है तथा पाठकगण इसमें अवश्य ही कुछ नवीन सत्य पक्ष प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही उनकी कला को पृष्ठभूमि में उनके काव्यगत सौन्दर्य एवं गुण पर विचार करने का इस पुस्तक में प्रयास किया गया है। कदाचित रत्नाकर जी के इन सभी पक्षों पर अब तक किसी ने विचार करने का प्रयास ही नहीं किया। यह मेरा प्रथम प्रयास है। अतः त्रुटियों का रहना अस्वाभाविक नहीं, वरन सम्भव है। सन् १९५६ में उत्तर प्रदेश द्वारा पुरस्कृत पुस्तकों में इसका भी स्थान होगा ऐसा मुझे विश्वास है, यद्यपि इसकी सूचना मुझे प्राप्त नहीं हो सकी है।[1]

[1] उत्तर प्रदेश सरकार की पुरस्कृत पुस्तकों की सूची में यह पुस्तक भी है। —सम्पादक

कान्य कुब्ज वोकेशनल डिग्री कालेज की पत्रिका में मैंने रत्नाकर एवं ब्रज-काव्य परम्परा के अन्य कुछ कवियों का संक्षेप में एक तुलनात्मक लेख दिया है। यद्यपि रत्नाकर जी के समकालीन ब्रज-काव्य परम्परा के कुछ कवियों के जीवन-वृत एवं काव्य सेवा पर मैंने प्रकाश डाला है यत्र-तत्र मेरे कुछ लेख प्रकाशित हुए हैं किन्तु मेरे उन लेखों का साहित्यिक महत्व नहीं के समान है।

मेरी अभिरुचि विशेष रूप से कहानी एवं स्वतन्त्र लेखों में है। सम्भव है भविष्य में हिन्दी साहित्य की कुछ सेवा कर सकूं।

मैं स्वतन्त्र प्रकृति की हूँ तथा विचारों की स्वतन्त्रता की मैं विशेष पक्षपाती हूं। अपने सत्य विचार पर दृढ़ रहने की तथा विषम परिस्थिति की डटकर उपेक्षा करने की मैं आदी हूँ। यदि कुछ सत् इच्छा कर लेती हूँ तो संसार की समस्त कठिनाइयों को ओटकर भी उस कार्य को करने में हिचकना मैं पाप समझती हूँ। वैसे मैं सामाजिक जीवन से नेह रखती हूँ किन्तु समाज के दूषित वातावरण से केवल-मात्र अपनी एक पवित्र एवं शान्त कुटिया की अभिलाषा रखती हूँ। समाज का सुन्दर नव-निर्माण में शिक्षित बालिकाओं का धर्म समझती हूँ। मुझे उस समय अत्यधिक खेद होता है जब मैं देखती हूँ कि भारतीय बालिकाओं की शिक्षा का उद्देश्य उनके लिए सुयोग्य वर प्राप्त मात्र ही समझा जाता है। शिक्षित बालिकाओं में मुझे मानसिक बल का अभाव व उनमें और अशिक्षित बालिकायों के मानसिक स्तर में कोई अन्तर न पाकर दुःख होता है। मैं शिक्षा का उद्देश्य न केवल मात्र साहित्याध्ययन ही नहीं वरन् जीवन के गम्भीर उद्देश्य एवं कर्तव्य की मूर्ति के लिए प्रस्तुत करना समझती हूँ। राष्ट्र के सांस्कृतिक विकास में नारी का विशेष हाथ है। अतः उसे इस कार्य के लिए सतर्क एवं समर्थ रहना आवश्यक सा है। आज उन्हें जातीयता एवं प्रांतीयता के संकीर्ण विचारों से उठना है। मुझे तो हर्ष तब हो जब वे राष्ट्र गर्व के साथ राष्ट्रीयता से भी परे जा सके। मेरा तात्पर्य पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण कदापि

नहीं है। भारतीय नारी—संसार के सामने अपना स्थान पूर्ववत् रखे तथा देश की वर्तमान सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृति जटिल समस्याओं के समाधान में सहायक सिद्ध हो, यही मेरी अभिलाषा है।

यों तो सभी परिचित मेरे मित्र बन जाते हैं। किन्तु मित्रता को मैं एक अत्यधिक पवित्र सम्बन्ध समझती हूँ जो इस स्वार्थरत संसार में कदाचित असम्भव नहीं, तो कठिन अवश्य है। अपनी ही भावनाओं तथा कल्पनाओं में मैं संसार से परे चली जाती हूँ—तथा प्रत्येक सम्बन्ध में एक पवित्रता का अनुभव करती हूँ। दूसरे शब्दों में मैं आदर्शवादिनी बन जाती हूँ, किन्तु शनैः शनैः मैं इस पवित्र भावना से हटकर इस निश्चय पर पहुँच रही हूँ कि इस संसार में आदर्श कल्पना ही है और रहेगी भी। हाँ, वह देवलोक की वस्तु हो सकती है। वास्तविकता तो यह है कि हम सभी सांसारिक जीव-मात्र हैं। आदर्श व्यक्ति देवता बन जाते हैं। हमें उस परम सत्ता तक पहुंचने के लिए साहस एकत्रित करने में निश्चय ही सांसारिकता से उठना पड़ेगा।

मैं मानवतावाद एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्" में विश्वास करती हूं। अपने इस विश्वास को कार्यरूप में परिणत करने की आकांक्षा रखती हूँ। यदि शिक्षा द्वारा मनुष्य में मनुष्यता न आए तो मैं उसकी शिक्षा को व्यर्थ समझती हूँ। अपने इन्हीं कुछ सिद्धातों पर मैं जीवन व्यतीत करना चाहती हूँ कदाचित इन्हीं कारणों से मैं जीवन अपने सार्वजनिक से सन्तुष्ट हूँ। और मैं कहीं भी किसी भी परिस्थिति में रह सकती हूँ यदि केवल मेरी मानसिक शान्ति भंग न हो तो। मनुष्य की स्वाभाविक प्रकृति का मुझे कुछ स्वाभाविक ज्ञान सा है तथा स्वयं को मैं उन्हीं के अनुरूप बना लेती हूं, यद्यपि मैं गर्विणी अधिक हूं तथा अपने सत्-गर्व को प्रयास करके भी झुका नहीं पाती हूं चाहे मुझे कितनी ही कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े।

मैं अपने जीवन से इस अर्थ में संतुष्ट हूं कि मैं अपनी अवस्था की अपेक्षा कुछ अधिक प्राप्त कर लिया है तथा इसी अर्थ में अपना जीवन

सार्थक एवं सुखी समझती हूं। मैं जीवन को कर्मों के अनुसार कर्तव्य पूर्ति की अवधि मात्र मानती हूँ। इस अवधि को सुख दुःख, शान्ति व अशान्ति तथा संतोष-असंतोष से व्यतीत करना हम पर निर्भर है। यदि मनुष्य ईश्वर द्वारा प्रदत्त सुख एवं दुख की अनुभूति समान बना ले तो दुःख शब्द ही शब्दकोष से दूर हो जावे और मैं यही जीवन का ध्येय समझती हूँ।

आशा है वर्तमान में मेरा इतना परिचय आवश्यकता से अधिक है इस समय में अपने माता-पिता एवं तीन छोटे भाइयों सहित १४, लाल बाग लखनऊ में रहती हूं।

डाक्टर उषा सक्सेना

वैसे नाम तो उषा सक्सेना है पर मेरी प्रायः सभी रचनाएं 'उषा' के नाम से प्रकाशित हुई हैं। बचपन से ही पढ़ने की ओर विशेष रुचि थी। और जो भी कुछ हाथ लगा, समझ में आया या नहीं पढ़ डाला। कुछ बड़े होने पर मेरी पाठ्य-सामग्री का चुनाव मेरे परिवार वालों ने किया। परिवार में सभी उच्च शिक्षित तथा साहित्यानुरागी हैं। मेरी शिक्षा के विषय चुनने और समय-समय पर प्रेरणा देने का श्रेय भी गुरुजनों तथा परिवार वालों को है। शिक्षा के दौरान में और रुचि के कारण भी मैंने विदेशी लेखकों को काफी पढ़ा है। मैं उन कथाकारों की ओर विशेष रूप से आकर्षित हुई जिन्होंने वर्तमान जीवन के विभिन्न पक्षों और तात्कालिक सामाजिक समस्याओं पर लिखा, जैसे टालसटॉय गोर्की, जेन ऑस्टेन, गाल्सवर्दी, हार्डी, डी० एच० लॉरेन्स, सोमरसेट, मॉम, स्टाइन बेक, हेमिंगवे, आदि। हिन्दी कथा साहित्य की यथार्थवादी धारा से मैं काफी प्रभावित हुई और उसमें प्रेमचन्द तथा यशपाल, अज्ञेय मेरे प्रिय लेखक हैं। मेरी विशेष अभिरुचि कथा-साहित्य की ओर है और शायद इसीलिए मेरा रचनात्मक क्षेत्र उसी तक सीमित है।

मेरी चेतना और अनुभूति मध्यम वर्ग नारी जीवन में केन्द्रित रही है और मेरी कहानियाँ उसी के चित्रण तक सीमित है। मैंने उसकी अनेक समस्याओं उसकी मौन, व्यथा, विवशता, निराशा और frustra-trons को वाणी देने का प्रयास किया है। मेरी कहानियों में नारी दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से उभरता है।

यद्यपि अब तक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में मेरी करीब तीस कहानियाँ निकल चुकी हैं। पर जब मैंने लिखना आरम्भ किया तब मेरा प्रकाशन का

विचार नहीं था। मेरी पहली कहानी 'लाल-चूनर' 'सरिता' में निकली थी जिसे मेरी एक मित्र ने बगैर मेरे जाने ही प्रकाशित होने को भेज दिया था। उसके Warm reception से मुझे कुछ आत्म-विश्वास हुआ। तब से समय-समय पर पाठकों के प्रोत्साहन से ही मैं लेखन कार्य में लगी रही। मेरी सभी कहानियां विद्यार्थी जीवन में लिखी गई हैं। भविष्य में कुछ आलोचनात्मक कार्य, उपन्यास-लेखन, और कुछ बाल साहित्य लिखने का विचार है।

मैंने इलाहाबाद यूनीवर्सिटी से इंगलिश में एम० ए० करने के बाद इसी वर्ष डी. फ़िल किया है। मेरी रिसर्च का विषय था, "हिन्दा कथा साहित्य पर आंग्ल-प्रभाव।"

मेरा वर्तमान पता है :—

इंगलिश डिपार्टमैंट, लेडी श्रीराम कालज

लाजपत नगर, नई देहली।

जन्म दिसम्बर १९३२ कानपुर।

श्रीमती उषादेवी मित्रा

जन्म स्थान—जबलपुर ।

शिक्षा—मैट्रिक ।

प्रोत्साहन प्रदायक वातावरण—बचपन से ही लिखती हूँ। क्यों और किसलिए सो मैं नहीं जानती ।

परिवार की साहित्यिक निधियाँ—मेरे मामा श्री सत्येन्द्रनाथदत्त जिनकी मृत्यु हुई ।

रचनाएँ—१ वचन का मोल ।
२ पिया ।
३ जीवन की मुस्कान ।
४ पथचार ।
५ सोहनी ।
६ नष्ट नीड़ ।
७ आवास ।

एवं छः सौ से ऊपर कहानियाँ लिखी हैं जिनमें सब ही पत्र-पत्रिकाओं में छपी हुई हैं जिनमें मात्र सात संग्रह निकले हैं। बाकी पचास कहानी संग्रह उपस्थित हैं।

१. आँधी के छन्द ।
२. महावर ।
३. सान्ध्य पूरवी ।
४. नीम चमेली ।
५. रात की रानी ।
६. रागिनी ।
७. मेघ मल्हार ।

११५ ब्योहार बाग, जबलपुर ।

श्रीमती कमला चौधरी

लखनऊ के नवाबी शासन के दीवान राजा अमृतलाल के घराने में आपका २२ फरवरी १६०८ को जन्म हुआ। श्रीमती कमला जी के पितामह का नाम राजा दीनदयाल था तथा पिता का नाम राम मनमोहन दयाल था, जो संयुक्त प्रदेश के एक प्रतिष्ठित लोकप्रिय डिप्टी कलक्टर थे। तथा आपके पति श्री जे० एम० चौधरी मेरठ के सुप्रसिद्ध होम्योपैथ हैं।

ग्यारह वर्ष की आयु से ही कमला जी के विचार क्रान्तिकारी हैं और उनको स्वदेशी तथा खादी के प्रति सदैव ही बड़ा प्रेम रहा है। दूरदर्शी और मेधावी होने के साथ-साथ कमला जी में अदम्य उत्साह और अनोखी कार्य क्षमता का मणि कांचन योग हुआ है जिसके परिणाम-स्वरूप उनके कार्य क्षेत्र की सीमाएं राष्ट्रीय, साहित्यिक और सामाजिक क्षेत्र में सुदूर फैली हुई हैं।

श्रीमती कमला चौधरी की ख्याति एक कहानी लेखिका और कवि के रूप में अधिक है। वे मूलत: एक कलाकार हैं और उनकी अटट साधना और अदम्य लग्न के कारण ही हिन्दी साहित्य जगत में उनका अपना ही विशिष्ट स्थान है। विभिन्न कारा प्रवासों एवं सार्वजनिक हलचलों के बीच लिखी गई अनेक रचनाएँ अत्यन्त लोकप्रिय तथा समादरणीय हुई हैं। उनकी कहानियों के अनुवाद अनेक भारतीय भाषाओं में हो चुके हैं। "काव्य-क्षेत्र में श्रीमती चौधरी ने हिन्दी, उर्दू तथा अवधी भाषा पर समानाधिकार पूर्वक विविध प्रयोग किए हैं तथा बाल साहित्य, आधुनिक मनोवैज्ञानिक कहानी तथा हास्य-व्यंग पर उनकी लेखनी के चमत्कार अनुपम हैं।"

श्रीमती कमला चौधरी ने अब तक मुख्यतः निम्न अनुपम कृतियों से हिन्दी साहित्य के कोष को भरा है :—

कहानी संग्रह :—

१. उन्माद (तीसरा संस्करण)।

२. पिकनिक (तीसरा संस्करण) चौथा प्रेस में।

३. यात्रा (तीसरा संस्करण)

४. बेलपत्र प्रथम संस्करण।

५. हिन्दी की चुनी हुई कहानियाँ (सम्पादित)

कविता संग्रह :—

६. खैयाम का जाम। (रुबाईयात उमर खैयाम का रूपान्तर सचित्र)

७. आपन मरन जगत कै हाँसी (हास्य व्यंग्य को त्रिविध कविताएँ)

८. गीतों का संग्रह।

९. उर्दू कविताओं का संग्रह।

बाल साहित्य:—

१०. चित्रों में लोरियाँ।

११. गाँधी बन जाऊँ।

उपन्यास (प्रेस में जा रहे हैं :—

१२. पीड़ा की खोज।

१३. देश की चिन्ता में !

विविध :—

१४. निबन्ध संग्रह।

१५. रेखा चित्र।

श्रीमती कमला जी का सार्वजनिक जीवन राजनैतिक, सामाजिक और साहित्यिक तीनों ही पक्षों में समुचित रूप से आदरणीय रहा है। राजनीतिक क्षेत्र में आपकी निम्नांकित गतिविधियाँ रही हैं।

१९२९ में महिला संघ की स्थापना हुई और आप उसकी मन्त्री निर्वाचित हुईं।

१९३०-३२ तक के आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और कारावास हुआ।

वर्षों तक महिला कांग्रेस की प्रधान रहीं और सुदीर्घ काल तथा जि़ला कांग्रेस की उपप्रधान व कोषाध्यक्ष रहीं।

१९३० से निरन्तर नगर कांग्रेस कमेटी की सदस्य थीं और ६-७ वर्ष प्रान्तीय कांग्रेस की सदस्या भी रहीं।

१९३९-४० में आपके भाषणों पर जिला अधिकारियों ने बारम्बार आपत्ति की और ४१-४२ में आपको नज़रबन्द कर दिया गया। इस बार ७-८ मास के शिशु को साथ रख कर आपने कारावास यातना सही।

१९४६ में मेरठ कांग्रेस अधिवेशन पर उपस्वागताध्यक्ष के रूप में पंडाल तथा निर्माण कार्य संभाला।

१९४७ में कास्टीट्यूएंट असेम्बली की सदस्या निर्वाचित हुईं और इसके अनन्तर लोक-सभा की सदस्या रहीं।

कांग्रेस कार्य के साथ-साथ आप मेरठ की प्रमुख शिक्षा-संस्थाओं में अग्रणी मेरठ कालिज की कार्य-समिति की सदस्या हैं।

महिला हितकारी केन्द्र की संस्थापिका तथा प्रधान हैं।

आजकल आप उत्तर प्रदेश राज्य के समाज-कल्याण बोर्ड तथा राज्य की लोक-साहित्य विकास समिति की सदस्या हैं।

कहानी लेखिका और कवि होने के अतिरिक्त श्रीमती कमला जी ने इधर कुछ काल से अपनी चित्रकला का अनुपम परिचय दिया है। उनकी चित्रांकन शैली मौलिक और सजीव है। आपके प्रकृति चित्र (Land-sncape) अनूठे हैं और ग्रामोद्योग वस्तुओं को कलापूर्ण ढंग से बनाने में आपकी विशेष रुचि है जिन्होंने प्रदर्शनियों में दर्शकों की भारी भीड़ को आकर्षित किया है।

अभी हमें इस सजीव सहृदय और कुशल चितेरी साहित्यकार से बहुत बड़ी आशाएँ हैं।

इनका पता है श्रीमती कमला चौधरी, विनीत कुञ्ज, ह्रीपी तालाब मेरठ।

श्रीमती कमला दीक्षित

जन्म स्थान तथा तिथि:—लखनऊ, २५ दिसम्बर १९१२।

शिक्षा—महिला कालिज लखनऊ।

परिवार की साहित्यिक निधियाँ तथा प्रोत्साहन प्रदायक परिस्थिति:—मेरे पिता जी पंडित देवदत्त वाजपेई की महफ़िल में यदा-कदा श्री निराला जी, श्री भगवतीचरण वर्मा, श्री हरि, श्री कृष्णकांत मालवीय, श्री वेंकटेशनारायण तिवारी, आदि के ओजस्वी तथा सरस भाषण, श्री सोहनलाल जी द्विवेदी की मधुर कविताएं आदि मेरे किशोर हृदय को प्रभावित करती रहीं।

मेरे मामा राष्ट्रकवि श्री सोहन लाल द्विवेदी की काव्यधाराओं ने मुझे साहित्यिक अभिरुचि प्रदान की।

विशेष अभिरुचि:—मेरी विशेष अभिरुचि गद्य-गीतों तथा कहानियों की ओर है। मैंने १९४५ से सक्रिय भाग लेना शुरू किया है।

रचनाएं:—मेरी रचनाएं क्रमशः अजन्ता, दक्षिण-भारती, भारती, मानव, रेखा, युवक, अणुव्रत, नारी, आरसी, दीदी, मस्ताना जोगी, युग-छाया, समाज, बालबोध, बाल-सखा आदि में आती हैं। शीघ्र ही चार पुस्तकें प्रकाशित करने का विचार है:—

१. अर्चना के पुष्प (गद्यगीत)

२. कटीला गुलाव (कहानियाँ)

३. सुनहला बौना (बाल-कहानियाँ)

४. दिवा स्वप्न (कविताएं)

सम्पादकीय अनुभव:—मुझे सम्पादकीय अनुभव नहीं है।

सार्वजनिक जीवन:—यदा-कदा क्लब, पूर्ति-अधिवेशन व कविता-

पाठ आदि तक ही सीमित ।

साहित्यिक योजनाएँ :—पठन के प्रति विशेष रुचि तथा मराठी, उर्दू, हिन्दी अंग्रेजी व थोड़ा-थोड़ा संस्कृत साहित्य में डूबने का प्रयास ।

वर्तमान पता :—कमल निवास, चाँदा, बाम्बे स्टेट ।

कुमारी कमलेश सक्सैना

जन्म स्थान :—दिल्ली की प्रतिभावान प्रगतिशील हिन्दी लेखिकाओं में कुमारी कमलेक्ष सक्सैना का एक मौलिक स्थान है। आपका जन्म १ जनवरी १९२८ को सम्पन्न और प्रसिद्ध कायस्थ घराने में हुआ। आपके पिता दिल्ली में दारोगा थे। पिता श्री बिहारीलाल पर लाल-किले की देख-रेख और व्यवस्था का भार सरकार की ओर से रहता था। आप अपने भाई बहनों में सबसे छोटी हैं इसी कारण सारे परिवार की स्नेहपात्र रहीं। आपकी माता श्रीमती गोपीदेवी जी की कुमारी कमलेश पर गहरी छाप है।

साहित्य सेवा के लिए प्रेरित करने वाला वातावरण :—हिन्दी कविता से तो कुमारी कमलेश को बालपन से ही प्रेम रहा है। परिवार का भक्तिपूर्ण वातावरण भगवान कृष्ण के प्रति गाए जाने वाले गीतों से बाल्यकाल से ही पूरित रहा। परिवार का वातावरण उर्दू मय था, लेकिन कुमारी कमलेश की अभिरुचि प्रारम्भ से ही मीरा, सूर और तुलसी की ओर रही। आरम्भ में वे मीरा की तरह प्रभावित होकर कृष्ण भक्ति की ओर आकृष्ट हुई और बाद में उनका काव्य महादेवी की तरह दुखवाद में मुखरित हो उठा।

परिवार की साहित्यिक निधियाँ :—उनकी माताजी श्रीमती गोपी-देवी स्वयं एक विदुषी हैं और उनका हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी भाषाओं पर सामान्य अधिकार है। अन्य परिवार की भी उर्दू साहित्य की ओर विशेष रुचि रही है।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें आपकी विशेष अभिरुचि है :—काव्यक्षेत्र कुमारी कमलेश का विशेष क्षेत्र रहा है। वे अत्यन्त

कोमल हृदय की कवयित्री हैं। वे दूसरों को दुखी देखकर सहज में ही द्रवित हो जाती है। इसीलिये उनकी रचनायें वेदनाशील हैं। वे बाहरी दिखावे के आंसू न बहाकर कविता के रूप में हृदय की वेदनाशील कविता को अधिक हृदयग्राही तथा प्रभावोत्पादक बताती है। काव्य की दृष्टि से भी उनके मतानुसार वेदनात्मक रचनाएं ही अधिक मर्मस्पर्शी और हृदय को छूने वाली होती हैं। उत्कृष्ट कोटि की बाल कविताओं और राष्ट्रीय तथा ऐतिहासिक कविताएँ भी उनकी लेखनी से समय-समय पर निकलती हैं। वे बहुत ही भावुक और चिन्तनशील प्रकृति की उदार महिला हैं। उनका मन प्राकृतिक, आकर्षक तथा मनहर उपवनों में घूमने में विशेष आनन्द अनुभव करता है। भावुक वे इतनी हैं कि महात्मा गांधी की हत्या का समाचार सुनकर कई दिनों तक बिना खाये-पीये शोक मग्न रहीं।

समाज की थोथी शृंखला के दुष्परिणाम स्वरूप ही उन्होंने आजीवन कुमारी रहने का व्रत लिया है। एक स्थान पर जब उनकी सगाई हो गई तो वरपक्ष वालों ने मुँहमांगा दहेज मांगा। इसी से क्षुब्ध होकर इन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करने का निर्णय किया।

रचनाएँ—गद्य में निबन्ध एवं कहानियाँ तथा सुन्दरतम कविताएँ जो, आकाशवाणी से प्रसारित हो चुकी हैं। इनके दो-तीन संकलन प्रेस में है। उत्कृष्ट कोटि की कहानियाँ लिखकर तथा गद्य को नया मोड़ प्रदान करके कुमारी कमलेश ने हिन्दी साहित्य का बहुत उपकार किया है।

सार्वजनिक जीवन—राजधानी के साहित्य-क्षेत्र में पूरा-पूरा सहयोग प्रदान करती हैं।

इनके प्रचार से ही 'हिन्दी साहित्य समाज' दिल्ली की स्थापना हुई।

'हिन्दी साहित्य समाज' दिल्ली की महिला शाखा की संगठन मंत्री।

'महिला साहित्य समाज' की स्थापना इनके प्रमाद से ही हुई।

प्रति वर्ष १०-१२ कवि गोष्ठियों का आयोजन।

'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की स्थायी समिति की सदस्या।

'कमलेश बालिका विद्यालय' की संस्थापिका एवं व्यवस्थापिका।

भावी योजनाएँ :—व्यस्त लेकिन प्रसन्नचित्त साधिका 'कमलेश' हिन्दी का अधिकाधिक प्रचार हर प्रकार से चाहती हैं। वे अधिकाधिक जन-साहित्य प्रदान करना चाहती हैं।

वर्तमान पता :—कुमारी कमलेश सक्सेना, व्यवस्थापिका कमलेश बालिका विद्यालय, बाजार सीताराम, दिल्ली।

(सम्पादक द्वारा कुमारी कमलेश से प्राप्त सामग्री के आधार पर।)

डाक्टर कंचनलता सब्बरवाल

जन्म स्थान व तिथि :—लखनऊ किन्तु शिक्षा दिल्ली में हुई। अट्ठाइस अगस्त, १६१८।

शिक्षा :—पी—एच० डी०—दर्शन-शास्त्र (Philosohy) लखनऊ विश्व-विद्यालय, एम० ए० (दर्शनशास्त्र) दिल्ली विश्व-विद्यालय, एम० ए० (भारतीय इतिहास एवं संस्कृति) बनारस हिन्दू विश्व-विद्यालय, एम० ए० (राजनीति) पंजाब विश्व-विद्यालय, शास्त्री।

साहित्यिक प्रोत्साहन व प्रेरणा :—बाल्यकाल से ही साहित्य से रुचि होने के कारण स्कूल की विभिन्न कक्षाओं में, पढ़ते हुए भूषण एव प्रभाकर की परीक्षाएं पंजाब विश्वविद्यालय से पास करलीं। विशेष प्रोत्साहन अपनी सहपाठनियों से ही मिला जिनकी विशेष प्रेरणा और पढ़ने की अत्यधिक उत्सुकता ही मुझे कहानी लिखने की प्रेरणा देती रही। वस्तुतः मेरी प्रारम्भिक कहानियाँ और कविताएँ केवल अपनी सखियों के तकाजे पूरे करने के लिए ही लिखी जाती थीं। उन्हीं में से एक दो ने चाँद आदि उस समय की पत्रिकाओं में भी भेजीं जो कि प्रकाशित भी हुईं। स्वयं अपनी रचना प्रकाशित देखकर इतनी प्रसन्नता कभी नहीं हुई, जितनी कि उन व्यक्तियों के हाथ में देकर होती हैं, जो कि उसके लिए निरन्तर तकाजे करते रहते हैं। श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी' ने मेरे कुछ प्रथम उपन्यास प्रकाशित करके प्रोत्साहित किया।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें रुचि है :—यूँ तो कभी मैं कविता भी लिखती थी, आज भी कभी-कभी गद्य-काव्य लिखती हूँ स्वान्तः सुखार्थ। लेकिन मेरी विशेष रुचि कथा साहित्य में ही है। मेरा उद्देश्य सुधार नहीं होता, होता है केवल हृदय में भाव आ जाते हैं, उनकी

अभिव्यक्ति वह भी इस लिए कि वह भीतर रह ही नहीं पाते हैं। अधिकतर मैं रुचि से कहानी या उपन्यास ही लिखती हूं। यूं कुछ नाटक भी लिखें हैं। निबन्ध भी लिखती हूँ। दर्शन शास्त्र, समाज शास्त्र, नागरिक शास्त्र आदि पर भी लिखा है।

सार्वजनिक जीवन :—समाज सेवा में रुचि भी है और कार्य भी करती हूँ। अनेकों समाज सेवी संस्थाओं की प्रधाना, मंत्रिणी अथवा सदस्या के नाते उनमें कार्य भी कर रहीं हूँ। हिन्दी रंगमंच की ओर रुचि है। इसी से लखनऊ मे "राष्ट्रीय नाट्य परिषद" की स्थापना भी की है।

विशेष रुचि :—चित्रकला और संगीत में रुचि है। सभी आर्थिक स्तर के लोगों से मिलना जुलना अच्छा लगता है।

सम्पादकीय ज्ञान :—किसी पत्र का सम्पादन तो नहीं किया किन्तु यहां 'आशा' और इससे पहिले फतहचन्द कालिज (महिलाओं के लिए) लाहौर में 'आभा' पत्रिकाओं का सम्पादन और प्रकाशन मेरी ही देखरेख में होता रहा है। कई पत्रिकाओं की सलाहकार समिति में भी रही हूँ।

मेरी रचनाएँ :—

उपन्यास

मूक प्रश्न, भोली भूल, संकल्प, मूक तपस्वी, स्वतन्त्रता की ओर, भटकती आत्मा, त्रिवेणी, पुनरुद्धार, पराया भार (प्रेस में), अनजानी राहें (प्रेस में)।

नाटक

आदित्यसेन गुप्त, लक्ष्मी बाई, अमिया, भीगी पलकें (प्रेस में)।

कहानी संग्रह

चयनिका (प्रेस में)

निबन्ध आदि

प्रगति की ओर। ईश्वर सम्बन्धी विचार। व्यवहारिक बाल मनो-

विज्ञान गृह विज्ञान ।

अन्य

समाज शास्त्र, आचार शास्त्र, नागरिक शास्त्र, शिष्टाचार ।

मेरे लिखन का ढंग तथा मेरी भावी साहित्यिक योजनाएँ :—अभी तो मेरा विचार हिन्दी में अनुसंधान कार्य के ढंग की निम्नलिखित पुस्तकें लिखने और प्रकाशित करने का है :—

सांस्कृतिक मानव-शास्त्र, क्रीड़ा-चिकित्सा ।

इनके अतिरिक्त एक उपन्यास भी लिख रही हूं । समाज में देखी, सुनी, अनुभव की हुई मानव की पीड़ा मुझे लिखने को बाध्य करती है । लिखने से पूर्व कोई योजना नहीं बन पाती । जान पड़ता है कि पात्र अपनी कहानी स्वयं कहते जाते हैं ।

पता :—प्रिन्सिपल, महिला विद्यालय, लखनऊ ।

श्रीमती कान्ति वर्मा

जन्म स्थान व तिथि :—मेरठ, ३ दिसम्बर १९१७।

शिक्षा :—एम० ए०, साहित्यरत्न।

साहित्य की ओर प्रेरित करने वाला वातावरण :—बचपन से ही रुझान, कुछ कहानियाँ विवाह से पहिले लिखीं। विशेष प्रोत्साहन विवाह के बाद अपने पति डाक्टर शान्तिप्रसाद वर्मा के विद्वतापूर्ण साहचर्य और निर्देशन में। विवाह की तिथि ३० जनवरी, १९३७।

पिता प्रोफेसर नन्दलाल भटनागर :—अध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, मेरठ कालिज, अर्थशास्त्र के विद्वान, अनेकों पुस्तकों के रचयिता।

पति, डाक्टर शान्ति प्रसाद वर्मा एम० ए०, डी० लिट्० हिन्दी साहित्य के सम्मानित लेखक व राजनीति शास्त्र के माने हुए विद्वान, अनेकों पुस्तकों के लेखक।

वर्तमान पता :—द्वारा डाक्टर शान्तिप्रसाद, अध्यक्ष राजनीति विभाग, महाराणा भूपाल कालिज उदयपुर।

रचनाएं :—१९४२ से अनवरत रूप से कहानियाँ लिखती रही हूँ। और वे सभी कहानियाँ हिन्दी के प्रमुख पत्रों में प्रकाशित होती रही हैं।

भावी साहित्यिक योजनाएँ :—कहानियाँ लिखने के अतिरिक्त आजकल अँग्रेजी और इण्डोनेशियायी भाषाओं से कुछ सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ तथा एक दो अच्छे उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद कार्य प्रारम्भ किया है।

श्रीमती किरण विचित्र

जन्म तिथि :—२० दिसम्बर १९१८।

शिक्षा :—मैट्रिक।

वातावरण जिसने प्रोत्साहित किया: —विवाहोपरान्त श्री विचित्र जी के सम्पर्क से और उससे पूर्व पैतृक गृह में भाइयों से।

साहित्य की निधियाँ :—भाई श्री जगदीशप्रसादजी व राजेन्द्रप्रसाद व पति-परिवार में श्री विचित्र जी स्वयं एक उच्चकोटि के लेखक व पत्रकार हैं।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें आपकी विशेष अभिरुचि है :—बाल-साहित्य।

रचनाएं प्रकाशित—१. सोने का नींबू।

२. यह मुँह मसूर की दाल आदि।

वर्तमान पता :—श्री सन्तराम विचित्र,
२७/२ शक्ति नगर,
दिल्ली ६।

भावी साहित्यिक योजनाएं :—१. बाल साहित्य की अधिकाधिक अभिवृद्धि।

२. महिला साहित्य में उत्कृष्ट और शिक्षाप्रद साहित्य की उत्पत्ति।

सुश्री कृपा कुमारी चतुर्वेदी

जन्म स्थान तथा तिथि :—फीरोजाबाद, १७ अगस्त १९३३ ।

शिक्षा :—हाई स्कूल, इण्टरमीजिएट, विशारद, साहित्य रत्न ।

पारिवारिक साहित्यिक विधियाँ :—घर में सभी पढ़े लिखे एवं हिन्दी प्रेमी हैं, यथा श्रीयुत पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी एम० पी०, व श्रीयुत पं० सुरेशचन्द्रजी चतुर्वेदी एम० ए०एल० एल० बी०, रिटायर्ट जज। श्रीयुत पं० सुशीलचन्द्र जी चतुर्वेदी बी० एस० सी० एल० एल० बी० इत्यादि ।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा :—श्री जयशंकरप्रसाद जी तथा भारतेन्दु बाबू हरिचन्द्र जी के ग्रन्थों में विशेष अभिरुचि ।

पता—वार्ड नम्बर १,
मकान नम्बर ३१७९ डैम्पीयर नगर,
मथुरा ।

कुमारी कृष्णा कृपा

कुमारी कृष्णा कृपा का जन्म २५ दिसम्बर १६२७ को जबलपुर में हुआ। आप प्रारम्भ से ही तीव्र बुद्धि की छात्रा रहीं। आपने हिंदी में नागपुर विश्वविद्यालय से एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की और विशेष स्थान भी प्राप्त किया। इसके बाद शासकीय महिला नार्मल कालिज में अध्यापिका नियुक्त हुईं, और इसी समय इन्होंने बी० टी० की परीक्षा उत्तीर्ण की। बाद में शासकीय सेवा से मुक्त हुईं, और राजनीतिशास्त्र में नागपुर विश्वविद्यालय से एम० ए० की परीक्षा पास की। इसी समय इन्होंने साहित्य-सेवा आरम्भ की। आपने विशेष रूप से शिक्षा विभाग के लिए पाठ्य पुस्तकें लिखीं जो मध्य प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत भी हुईं। राष्ट्रभारती गृह-विज्ञान-दीपिका और बीस ऐतिहासिक कहानियां—पुस्तकें उल्लेखनीय हैं। आप गम्भीर विषयों पर लेख लिखती है और रूपक-कथाएं लिखने में विशेष रुचि रखती हैं। ये अपना अवकाश का समय पुस्तक पठन और घर के बच्चों को पढ़ाने में व्यतीत करती है।

वर्तमान पता :—कुमारी कृष्णा कृपा एम० ए०, ३६५ गोल बाजार, जबलपुर।

(श्री नर्मदाप्रसाद खरे साहित्य-मंत्री मध्य-प्रांत-साहित्य-सम्मेलन के सौजन्य से प्राप्त)

सुश्री कृष्णा

मेरा जन्म मेरठ शहर में सन् १९३८ में १७ सितम्बर को हुआ। पारिवारिक जीवन में लेखन की प्रेरणा न मिलने पर भी मुझे लिखने का चाव काफी दिनों से था लेकिन प्रोत्साहन के अभाव में मेरे लेख प्रकाशित न हो सके। सन् १९५५ में 'नवभारत टाइम्स' में पहिला लेख छपा। उसके बाद अब तक हिन्दुस्तान, नवभारत और आदर्श, उजाला, नोकझोंक, जनजीवन, अणुव्रत आदि पत्र पत्रिकाओं में लगभग पचास लेख प्रकाशित हो चुके हैं।

कहानियाँ मैं बच्चों के लायक लिखती हूँ और लेख साहित्यिक, संकलन शैली में, या मेरी फिर विशेष रुचि के अनुसार कुछ व्यंग्यात्मक लेख प्रकाशित हो चुके हैं, यथा :—

(१) पढ़ी लिखी लड़कियाँ

(२) सूर के बालकृष्ण

(३) शरत के प्रति

(४) हम गरीब प्रोफेसर

(५) स्वतन्त्र भारत के स्वतन्त्र विद्यार्थी

(६) सावन आया रे

(७) जीवन साथी चुनने का अधिकार आदि आदि

आजकल मैं दिल्ली विश्वविद्यालय से एम० ए० फाइनल कर रही हूँ और भविष्य में पत्रकारिता की शिक्षा (ट्रेनिंग) प्राप्त कर सम्पादन कार्य करने की इच्छा है।

मेरा पता है ६०५६, देवनगर, करोलबाग दिल्ली—५.

श्रीमती कृष्णा कुमारी निकुंज

जन्म स्थान व तिथि :—सहारनपुर—२१ जून १९२१

शिक्षा :—एम० ए०, डी० टी०, सिद्धान्त शास्त्री

पिता :—श्री ईश्वरदास सरीन बी० ए० एल० टी० अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक गवर्नमेंट हाईस्कूल, सहारनपुर उ० प्र०।

पति :—श्री ललित निकुंज 'साहित्यालंकार' भूतपूर्व सह-सम्पादक 'प्रताप दैनिक', वीरभारत दैनिक, रामराज्य साप्ताहिक कानपुर।

साहित्यक अभिरुचि को प्रोत्साहित करने वाला वातावरण :—प्रथम प्रोत्साहन सन् १९४४-४५ में सहारनपुर में हुए हिंदी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन द्वारा मिला। प्रोत्साहन देने का प्रथम श्रेय आदरणीय भाई श्री ओमप्रकाश मीतल को है। तत्पश्चात् श्री बनारसीदास जी चतुर्वेदी, सर्वश्री रामनाथ सुमन, लक्ष्मीप्रसाद पाण्डेय, अवनीन्द्र विद्यालंकार व शम्भूनाथ 'शेष' द्वारा प्राप्त हुआ—

परिवार की साहित्यिक निधियाँ :—केवल पतिदेव।

साहित्यिक दिशा :—गवेषणात्मक निबन्ध।

रचनायें :—(१) प्रार्थना, (२) गांधी युग की महिलायें।

(३) आपका शिशु और सर्वोदय बाल-शिक्षा योजना।

सम्पादकीय ज्ञान :—भूतपूर्व प्रधान सम्पादिका "विधवा हितैषी" जालन्धर तथा सह-सम्पादिका "अरुणोदय" लखनऊ।

सार्वजनिक जीवन :—विदेशी कपड़ों के वहिष्कार के अवसर पर पिकेटिंग किया। सन् १९४७ में हुए पंजाब के दंगों में महिलाओं में तथा लेडा त्रिवेदी के साथ शरणार्थी कैम्पों में काम किया। सन् १९४१ से ही शिक्षण संस्थाओं में काम कर रही हूँ। इस समय श्रीमती निकुंज सर्वोदय बालनिकुंज लखनऊ का संचालन कर रही हूँ।

पता :—सर्वोदय बाल-निकुंज, बिलहरा हाउस, लखनऊ।

कुमारी कुमुद जैन

मेरा जन्म २७ जून १९३८ को मुरादाबाद में हुआ था। मैं द्वितीय वर्ष बी० ए० की छात्रा हूँ।

मैंने कहानियाँ लिखी हैं मेरी एक मौलिक रचना "साप्ताहिक हिन्दुस्तान" के बाल विशेषांक में छपी है। दो अनूदित कहानियाँ बाल-गोपाल और बालबोध में छपी हैं। मैं आपको यह भी बता दूँ कि मैंने केवल बच्चों के लिए ही छोटी छोटी कहानियां लिखने का प्रयास किया है। वास्तव में साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण करने की मेरी इच्छा तो बहुत है किन्तु पढ़ाई के कारण समय ही नहीं मिल पाता।

साहित्यिक क्षेत्र की ओर प्रेरित करने वाला यहाँ कुछ विशेष वातावरण ही नहीं है किन्तु हां, मुझे मेरी माता जी सदैव इस क्षेत्र में पदार्पण करने के लिए प्रेरित करती रहती है। उन्हीं से प्रेरणा पाकर मैंने सर्वप्रथम एक अँग्रेजी से अनूदित कहानी 'बालबोध' में प्रकाशनार्थ भेजी वह कहानी सम्पादक जी को पसन्द आई, अतः उसे उन्होंने अपनी पत्रिका में स्थान दिया। अपनी पहली ही रचना की सफलता से मुझमें उत्साह का संचार हुआ।

मेरी यह तीव्र अभिलाषा अवश्य है कि मैं इस वर्ष बी० ए० पास करके अपना सम्पूर्ण समय साहित्य सेवा में ही लगाऊँ।

मेरा पता :—कुमारी कुमुद जैन, सिविललाइन्स, मुरादाबाद है।

डा० कैलाश प्रकाश

व्यवसाय :— हिन्दी प्राध्यापिका इन्द्रप्रस्थ कालिज, दिल्ली।

शिक्षा :— दिल्ली विश्वविद्यालय से एम० ए० तक।

साहित्यिक कार्य :— प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास पर, पी.-एच. डी. की डिग्री—

सम्पादनादि :— लेडी हार्डिग मैडिकल कालिज दिल्ली की वार्षिक पत्रिका (पृष्ठ संख्या ७५) का सर्वप्रथम सम्पादन व प्रचलन।

लेख आदि :— साप्ताहिक हिन्दुस्तान दिल्ली, सरस्वती संवाद आगरा आदि में।

डाक्टर ओमप्रकाश एम० ए० एल० बी० पी. एच. डी. शक्ति नगर दिल्ली।

श्रीमती कौशल्या अश्क

मेरा जन्म सन् १६१६ ई० में गुजरात (पश्चिमी पंजाब) में हुआ था। मेरे पिता श्री परतूल चन्द्र मलहोत्रा मिलिट्री डिपो में चीफ क्लर्क थे। बचपन के दिन बेहद लाड प्यार, मुहब्बत के वातावरण में गुजारकर लड़कपन की समाप्ति पर मैंने अपने आपको मणि माणिक में और घिरे हुए उस विवश मानव-सा-पाया, जिसे किसी ने छू न सकने का अभिशाप दे दिया हो। मैं लगभग १२ वर्ष की थी, जब केवल २८ दिन के अन्तर से पहले मेरे पिता और फिर माँ दोनों इस लाड़ प्यार की गहन धुंधली सी किन्तु अमिट स्मृति में सौंपकर परलोक सिधार गए।

मेरा वातावरण वही रहा। उसमें प्यार भी था, लाड भी और बाहुल्य भी अन्तर यही था कि वह सब अब मेरे लिए न था।

उसके बाद की कहानी बड़ी लम्बी है। जीवन का एक एक दिन एक कहानी है। संक्षिप्त में यह कि जब सगे-सम्बन्धी मुझे किसी 'जरूरत मन्द' लेकिन सम्पन्न के हाथों सौंप कर इस भार से छुट्टी पाने की चिन्ता में थे मैंने अपनी नौका को अपने आप ही खेने का फैसला कर लिया। एक सहृदय और दयावान खेवट भी मिल गया। सबसे छोटे मामा ने मेरी हिम्मत को सराहा, मेरे साहस और निश्चय की प्रशंसा की, मेरा हाथ पकड़ा और मुझे माता-पिता के अभाव को महसूस नहीं होने दिया।

मैं केवल ४ कक्षा तक पढ़ी थी और पढ़ाई को छोड़े चार वर्ष हो चुके थे कि मैंने शिक्षा का टूटा तार पकड़ लिया। हिन्दी रत्न और 'भूषण' की परीक्षाएं पास कर मैंने मिडिल की परीक्षा दी। फिर दो वर्ष बाद हिन्दी छोड़ कर पढ़कर हाई स्कूल परीक्षा में उत्तीर्ण हुई। और

सौभाग्य से छात्रवृत्ति भी पा गई ।

इसके बाद मेरी जीवन-नौका को एक दूसरे खेवट ने संभाला । उससे मेरा कोई सम्बन्ध न था' लेकिन उसके प्यार और पथ प्रदर्शन में निकटतम सगे-सम्बन्धियों से अधिक चिन्ता और सदाशयता थी । जीवन सागर की बेपनाह मौजों के थपेड़े खाने के बावजूद मैं उसके पथ प्रदर्शन में बढ़ती चली गई । मेरी खेवट मेरे कालिज की प्रिंसिपल थीं, उन्हीं के संसर्ग से मैंने बहुत कुछ सीखा और बहुत कुछ पाया । १६३६ में मैंने बी० ए० पास किया और अपने कालिज में सर्वप्रथम रही ।

सन १६४० में मैंने मैकलैगिन कालिज लाहौर से बी० टी० की डिग्री ली और पंजाब से दूरस्थ कस्बे "रैनाला खुर्द" में हेड मिस्ट्रैस हो गई । 'रिनाला' खुर्द इसलिए प्रसिद्ध था कि वहाँ पंजाब के प्रसिद्ध दानी इंजीनियर सर गंगाराम के फार्म थे और सन्तरों का सात मील लम्बा बाग था । किन्तु मुझे वहां की जो चीज पसन्द आई वह शान्ति थी । मैं शान्ति में जैसे सागर के तट पर आ लगी और ठंडी रेत पर पांव पसारे हलकी मीठी धूप का आनन्द लेने लगी । किन्तु सागर को कदाचित मेरा यह सुख नहीं रुचा, एक तेज लहर आई और नाव को बेपनाह तूफान में ले गई ।

अब मेरी जीवन-नौका को एक और खेवट ने संभाला और एक बार तो ऐसा लगा कि वह अपने साथ ही नाव को सदा सदा के लिए सागर की अथाह गहराई में डुबा देगा । किन्तु मेरा भाग्य मेरे काम आया, अपने खेवट समेत मैं नाव को तूफान से निकाल लाई । अब भी यद्यपि लहरों के थपेड़े कम नहीं हुए हैं लेकिन उनका जोर कम हो गया और कभी-कभी उनमें से किनारा झलक उठता है ।······शान्ति, ठंडी रेत और हल्की मीठी-मीठी धूप !

लिखने का शौक मुझे तब से है जब मैंने सिर्फ अपने आपको अपना साथी पाया । कालेज में मुझे साल भर में सब अच्छे लेख और कहानियां लिखने पर पुरस्कार मिला था । मेरी पहली कहानी भी कालेज मैगजीन

में ही प्रकाशित हुई थी। फिर कुछ कहानियाँ "प्रीत लड़ी" में छपीं। हिन्दी में 'देशदूत' 'दीना' और 'हंस' में कहानियाँ छपीं। उर्दू में सिर्फ 'आजकल' में लिख पाई हूँ। मैं जानती हूँ मेरा लिखना अभी बच्चे के तुतलाने से ज्यादा महत्व नहीं रखता पर मुझे विश्वास है कि तुतलाहट पर अधिकार पाकर मैं भली भाँति अपनी भावनाओं को व्यक्त करना सीख जाऊँगी और वह सब कुछ लिख सकूँगी जिसे लिखने की लालसा मेरे हृदय में बहुत दिन से दबी है।

कहानियों में मेरी विशेष रुचि है। "दोधारा" में मेरी कुछ कहानियाँ पुस्तक रूप में प्रकाशित हुई हैं अप्रकाशित कुछ चीजें पड़ी हैं हैं जिनमें से कुछ सज-सँवर, मांज-धुलकर तैयार होने की बाट देख रहीं है, लेकिन जब तक वे चीजें निखरधुलकर पुस्तक के रूप में सामने न आ जायें, उनके सम्बन्ध में कुछ कहना बेकार है।

सम्पादीय अनुभव मुझे कुछ नहीं है। इधर पिछले आठ वर्षों से प्रकाशन का काम देख रही हूँ।

नीलाभ प्रकाशन, ५ खुसरोबाग, प्रयाग, १—यह मेरा वर्तमान पता है। इसी प्रकाशन का काम मैं देखती हूँ।

साहित्य सेवा सम्बन्धी योजनायें बहुत लम्बी चौड़ी हैं लेकिन पिछले आठ वर्षों में निरन्तर प्रकाशन के काम में लगी रहने के कारण वे योजनायें वैसी की वैसी पड़ी हैं।

श्रीमती गार्गी गुप्ता

जन्म स्थान तथा तिथि :—बरेली, २ अक्तूबर १९२८।

शिक्षा :—एम० ए० (हिन्दी) रिसर्च छात्रा दिल्ली विश्वविद्यालय

साहित्यिक दिशा :—आलोचना।

रचनायें :—केवल आधी थीसिस लिखी गई है। विषय "राम काव्य परम्परा में रामचन्द्रिका का मूल्यांकन" विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख (धर्मयुग, हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान साप्ताहिक, विशाल भारत, अमृत पत्रिका, सरस्वती संवाद इत्यादि में) कुछ अनुवाद कहानियों के हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

सम्पादकीय अनुभव :—एक वर्ष से अधिक। कई पुस्तकों का अनुवाद किया। "अशोक" (अतुलनाद चक्रवर्ती) पुस्तक का अनुवाद क्रमशः बालभारती में प्रकाशित हुआ है।

अब बाल भारती की सहायक सम्पादिका।

सार्वजनिक जीवन :—तीन वर्ष शिक्षिका जीवन का अनुभव!

पता :—सह-सम्पादिका 'बाल भारती' ओल्ड सैक्रेटेरियट, सूचना मन्त्रालय प्रकाशन, विभाग दिल्ली।

श्रीमती गोमती देवी रावत

जन्म स्थान तथा तिथि—टीकमगढ़ (वि० प्र० अब म० प्र०) १ अक्तूबर १९३०।

शिक्षा :—नान मैट्रिक पाठशाला में। इसके अतिरिक्त घर पर धार्मिक और साहित्यिक विषयों सम्बन्धी पुस्तकों एवं ग्रन्थों का अध्ययन घर पर ही प्राप्त किया है।

वातावरण :—टीकमगढ़ स्वयं साहित्यिक केन्द्र है। प्रारम्भ से ही मुझे छोटी छोटी लोककथाओं, हल्के फुल्के मनोरंजक लेखों के लिखने में रुचि थी। ससुराल आने पर मुझे पत्रों में लेख छपाने की प्रेरणा मिली।

परिवार की साहित्यिक निधियाँ :—श्री कृष्ण कुमार रावत मेरे पति स्वयं साहित्यिक हैं।

साहित्यिक दिशा :—ग्रामीण गीत, लोक कहानियाँ तथा सांस्कृतिक निबन्ध।

रचनाएँ :—प्रायः सभी प्रमुख दैनिक, मासिक तथा साप्ताहिक पत्रों में लगभग ३०० रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

अप्रकाशित पुस्तकें :—

(१) बुन्देलखंड के लोक गीत।

(२) बुन्देलखंड की कहानियाँ।

सार्वजनिक जीवन :—रिक्त।

पूर्ण पता :—द्वारा श्री कृष्णकुमार रावत, शुक्रवारी, सागर (म० प्र०)

ब्र० पं० चन्दाबाई

विक्रमाब्द १६४ की आषाढ़ शुक्ला तृतीया को बाबू नारायणदास जी अग्रवाल के यहाँ श्रीमती राधिका देवी जी की गोद में 'चन्दाबाई' का जन्म हुआ ! बाबू नारायणदास जी सम्पन्न ज़मीदार, प्रतिभाशाली एवं ग्रेजुएट विद्वान थे। आपने अपनी कर्मठता और सेवावृत्ति से वृन्दावन की जनता को अपने वश में कर लिया था। सन् १६२१ में जनप्रिय होने के कारण आप यू० पी० धारा सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। परन्तु कुछ समय पश्चात् ब्रिटिश शासन-प्रणाली से असंतुष्ट होकर आपने अपने पद से त्याग पत्र देदिया। जीवन के अन्तिम क्षण तक देश सेवा में लगे रहे।

अल्पावस्था में ही 'चन्दा' का धर्म-परायण, कुशाग्र और बुद्धि,सेवारत, आरा नगर के सम्भ्रान्त ज़मींदार जैन धर्मानुयायी प० प्रभुदास के पौत्र श्री धर्मकुमार जी के साथ विवाह कर दिया गया। धर्मकुमार जी संस्कृत और अंग्रेजी के प्रौढ़ विद्वान थे। लेकिन विवाह को एक वर्ष ही हुआ था कि धर्मकुमार जी तीर्थराज सम्मेदशिखर की यात्रा पर गए हुए थे। वहीं गिरी डीह में उन्हें प्लेग हो गया और उसी से उनका स्वर्गवास हो गया। और अब चन्दाबाई जी के सामने एक ही काम था—अध्ययन आरम्भ में धर्मशास्त्र और जैन संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया। शीघ्र ही अनेकों ग्रन्थों का अभ्यास कर लिया। शिक्षकों का समुचित सहाय्य मिला वे आसततसाधना में जुट गईं। वृन्दावन आकर आपने लघु और सिद्धान्त दोनों कौमुदियों का अध्ययन किया। और कुछ ही समय में राजकीय संस्कृत कालिज काशी की पंडित परीक्षा उत्तीर्ण कर ली, जो आज शास्त्री परीक्षा के समकक्ष मानी जाती है। जैन-दर्शन और

धर्मशास्त्र का अध्ययन भी उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था। उसी से उनका अन्तरदीप दैदीप्यमान हो उठा। ज्ञानदीप का प्रकाश चारों ओर फैल गया। आज वही चन्दाबाई मांश्री के नाम से प्रसिद्ध है।

उनको इस धार्मिक, साहित्यिक और आध्यात्मिक उत्थान में सबसे अधिक सहयोग उनके ज्येष्ट (जेठ) श्री देवकुमार जी ने प्रदान किया। उन्हीं से प्रोत्साहन और प्रेरणा पाकर चन्दाबाई अपनी सतत साधना, अटूट लग्न और अदम्य-उत्साह के कारण देश की प्रमुखतम विदुषियों, समाज सेविकाओं और साहित्यकारों में से एक बन सकीं। नारी जाति के उत्थान की लौ हर समय उनके अन्तर में जलती रही है। उन्होंने नारी की सिसकियों को, उसके हृदय की धड़कन को और उसके द्वारा भोगी जाने वाली नारकीय यातनाओं को देखा ही नहीं, समझा भी है।

आज 'मांश्री' का समस्त जीवन भारत की हर नारी के लिए एक जीता जागता उदाहरण है। उन्होंने बहुत भ्रमण किया है और भारत के समग्र जैन तीर्थों की कई बार वन्दना की है। इन यात्राओं द्वारा अर्जित लोकानुभव से लोक सेवा के कार्यों में मांश्री को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

मां श्री ने महिलोपयोगी साहित्य का सृजन कर चिर-सत्य और चिर-सुन्दर की आधार भूमि पर स्थित हो नारी को शिवहित का सन्देश सुनाया है। आपने नारी के अन्तस्तल की उस वीणा का वादन किया है जिसका मधुर रव आज भी समस्त दिशाओं में कर्ण गोचर हो रहा है। सदियों से पददलित नारी आपके द्वारा रचित साहित्य में जीवनोत्थान और कर्त्तव्य की प्रेरणा पाती है। वह अपने जीवन की यथार्थता से अभिज्ञ बनकर दायित्व और भावना से परिचित होती है।

मां श्री कथा-कहानी, निबन्ध और कविताएं लिखती हैं। जैन कन्या-शालाओं में श्राविका के आचार-व्यवहार का परिज्ञान कराने के लिए आपने कई पुस्तकें लिखी हैं। (१) उपदेश-रत्न-माला (२) सौभाग्य रत्न-माला, निबन्ध-माला, आदर्श-कहानियां, निबन्ध दर्पण प्रभृति आप

की प्रसिद्ध रचनाएँ है। आप लेखिका, संपादिका, कहानीकार और कवियित्री होने के साथ सफल पत्रकार भी हैं। सन् १९२१ से आज तक अ० म० दि० जैन महिला-परिषद् द्वारा संचालित 'जैन महिलादर्श' नामक पत्र का सम्पादन बड़ी योग्यता के साथ करती चली आ रही हैं।

पुस्तकें लिखने और पत्रों को सम्पादित करने के अतिरिक्त आपके अनेक विचारात्मक लेख जिनमें धार्मिक, साहित्यिक और आचारात्मक सभी प्रकार के होते हैं जैन एवं जैनेतर पत्रों में छपते रहते हैं।

आपने धनपुरा गाँव में अपने परिवार के सहयोग से ही जैन-बाला आश्रम(जैन महिला विद्या पीठ) १९२१ के बाद संस्थापित किया। उस संस्था में उच्च कोटि के लौकिक शिक्षण के साथ धार्मिक शिक्षण भी दिया जाता है। यह संस्था असत् से सत् की ओर तिमिर से ज्योति की ओर और मृत्यु से अमरत्व की ओर महिला समाज को लिए जा रही है। 'माँ श्री' ने इस संस्था में अपना तन मन और धन सब कुछ लगा दिया है। संस्था का अन्तरंग और बहिरंग सारा प्रबन्ध 'माँ श्री' के ऊपर है। महिलाओं के उच्च स्थान को सक्रिय बनाए रखने के लिए उन्होंने अथक यत्न किया है। समाज को चेतना दी है और "नारी जीवन और साहित्य के दो पृथक यंत्रों को फिर से जुटाकर एक विराट कनवास का निमाण किया है।"

१. इनके साहित्य में सहृदयता, सहानुभूति, और करुणा की त्रिवेणी के साथ आदर्श के कगारों का समन्वय भी यथास्थान मिलेगा। नारी सुलभ कोमल भावनाओं में चंचलता नहीं सौम्यता और गम्भीरता है। फलतः इनके साहित्य का धरातल पर्याप्त उन्नत है।

२. उनकी अपनी विचारधारा है जो कि उनके जीवन पर शासन करती है और उनके साहित्य पर भी! इसीलिए वे अपने जीवन में अपने साहित्य में पर्वत की तरह अचल हैं। उनके चिन्तन की स्पष्ट छाप उनके साहित्य में देखी जाती है। इन सब कारणों से महिला साहित्यकारों में इनका साहित्यिक व्यक्तित्व अपना एक पृथक महत्त्व रखता है।

३. इन्होंने जो कुछ लिखा है नारी उत्थान की प्रेरणा से; इसी कारण उपदेशात्मक शैली का रूप इनकी रचना में स्पष्ट लक्षित होता है !

आदर्श कहानियाँ, माँ श्री की कहानियों का संग्रह है। इसमें हम उनको कलाविद कहानीकार के रूप में प्रदर्शित पाते हैं। इस संग्रह की सभी कथाएँ अपने में किसी शिक्षाप्रद व्यक्तित्व और चरित्र को लपेटे है रोहिणी, वियोगिनी, पुनर्मिलन आदि कहानियाँ समाज से नया समझौता करने को प्रस्तुत हैं।

(उपर्युक्त सभी सूचना हमने माँ श्री पर प्रकाशित "ब्र० पं० चन्दा-बाई अभिनन्दन ग्रन्थ" के लेखों से ली हैं:—'माँ श्री चन्दाबाई जी; जीवन झाँकी' और "माँ श्री की साहित्य साधना।" हमने इसको प्रस्तुत करते समय अधिकांश उन्हीं लेखों की भाषा का भी उपयोग करने की चेष्टा की है। वस्तुतः उन्हीं लेखों का संक्षिप्त रूप प्रस्तुत किया गया है—संपादक)

श्रीमती चन्द्रप्रभा द्विवेदी

प्रथम अक्टूबर १६२२ ई० में दारागंज प्रयाग में कर्मकाण्ड के आचार्य पंडित गिरिजाशंकर जी मिश्र राजवैद्य के यहाँ द्वितीय कन्या के रूप में उत्पन्न हुईं। सात वर्ष की वय में पिता जी ने श्री विष्णु सहस्रनाम संस्कृत में कण्ठाग्र करा दिया और निकट के मिडिल स्कूल में नाम लिखवा कर थोड़ी हिन्दी की शिक्षा दिलाकर १६३४ ई० में शुभ-विवाह संस्कार सम्पन्न करा दिया। पाठशाला में सदैव सर्वप्रथम रहने एवं पुरस्कृत होने के कारण आंतरिक इच्छा ने विद्या की ज्योति प्राप्ति के लिए प्रेरणा भर दी। पति उस समय स्वयं ही विद्यार्थी थे। और प्रथम तथा विशेष ही पर अधिकार रखने के कारण चन्द्रप्रभा की अभिरुचि के वर्द्धक ही प्रमाणित हुए।

उच्च कक्षाओं के ग्रन्थरत्नों को चन्द्रप्रभा सहेज कर रखती और चुपचाप पढ़ती। उन पर निशान लगे छन्दों पर कुछ अपनी मौलिक पंक्तियाँ लिख देती! परिवार के लोग पर्दे के चिरपोषक थे और इस नव-दम्पत्ति को उसका पूर्णरूपेण पालन करने का ध्यान रहता। शीघ्र ही इस छोटी सी कामना को साकार सहयोग मिला और चुपचाप स्वाध्याय का नवीन पृष्ठ खुल गया; वयोवृद्धा सास जी समझती बहू घर के कामों से छुट्टी पाकर लड़के की लाइब्रेरी ठीक कर रही है और बहू कक्षाएं पास करने की धुन में है, बेटा शिक्षा विभाग में श्रेष्ठ पद प्राप्त करने में। अब वह शिक्षा अधिकारी है।

बहू ने पिता के घर से परीक्षा दी और विशेष योग्यता के साथ प्रथम श्रेणी में पास हुई। उत्साह बढ़ गया, पढ़ने के साथ लिखना भी आरम्भ किया जो कि निबन्ध के विषयों पर अच्छी लेखनी चला लेतीं,

और पति उसे अपने आफिस में रोचक पत्र की भाँति देखा करते, तथा लाल स्याही से सुन्दरता का प्रमाण अंकित कर देते।

यह समय १९३८-३९ का था। कहानी के दिए गए विषय भी सफल होने लगे और रचना साकार हो उठी। पत्नी की इस भावुकता को पत्रकारों के समक्ष रखने का साहस न हो रहा था। परन्तु चन्द्रप्रभा ने एक दिन एक कहानी 'देशदूत' में भेज दी, वह छप गई, फिर क्या था, चुपचाप कहानियाँ जातीं और छपतीं। १९४२ से "सरस्वती" "मंजरी", "माधुरी", "विश्वमित्र", "धर्मयुग" जैसे पत्रों में कहानियाँ छपने लगीं, और "खण्डहर" नामक उपन्यास लिखा। श्री प्रेमचन्द की "शान्ति" नाम की कहानी से अच्छी प्रेरणा मिली। एक दिन अपने भतीजे, श्री प्रभात शास्त्री, के प्रचार मन्त्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग पुस्तकालय से माईकेल मधुसूदन का लिखा "मेघनाद वध" का हिन्दी संस्करण लाकर पढ़ा। और वैसे ही छन्दों में विजय 'वैजयन्ती' नामक मौलिक प्रबन्ध काव्य लिखा जिसके कुछ सर्ग "चण्डी" में भी सादर प्रकाशित हुए हैं।

शिक्षा भी हाईस्कुल, इण्टर, विशेष योग्यता, विशारद तथा साहित्य रत्न तक प्रथमा तथा द्वितीय श्रेणी के परीक्षाफल के रूप में सम्पन्न होती रही। आगरा विश्वविद्यालय से दो बार बी० ए० की परीक्षा भी दी परन्तु एक बार अस्वस्थता के कारण जितने अंक प्राप्त हुए उतने ही दूसरे वर्ष पूर्ण स्वस्थ्य और स्वाध्याय पर भी परीक्षाफल विफल रहा। इधर परिवार में वयोवृद्ध माता जी का देहान्त हो गया। अब एक पुत्र और चार कन्यायें हैं जिनकी शिक्षा-दीक्षा भी आप दम्पत्ति को कर्तव्य के गुरुभार से दबा रही हैं। हाईस्कूल और इण्टर से लेकर नर्सरी तक के विद्यार्थी प्रस्तुत हैं। आगामी दो वर्षों में ये विश्वविद्यालयों के छात्र होंगे। ऐसे समय में आपको आज भी विश्वविद्यालय का सुअवसर मिल सकेगा। वही व्यक्तिगत। प्राइवेट बी० ए० और एम०ए० का विचार है। इधर कतिपय वर्षों से आपने भी राजकीय शिक्षा विभाग की हिन्दी

अध्यापिका के रूप में एक पद प्राप्त कर लिया है और सन् १९५० से १९५२ तक राजकीय उच्चस्तर माध्यमिक बालिका विद्यालय की पत्रिका "पद्मदल" की सफल प्रधान सम्पादिका भी आप ही रही हैं। प्रत्येक साहित्यिक और संगीत समारोह का सफल आयोजन भी आपके अनुशासन में सम्पन्न होता है।

वर्तमान भावी योजनाओं में विद्या का उच्चतम सोपान प्राप्त करते हुए अपने बच्चों को भी उसी प्रकार सुयोग्य बनाने और अपनी साहित्यिक प्रतिभा को जहाँ एक ओर श्री मैथिलीशरण गुप्त जैसी विभूतियों की समकक्षता तक पहुँचा देना है वहाँ राजकीय शिक्षा विभाग द्वारा अपनी छात्राओं में अपनी ऐसी उत्कृष्टता भर कर देश की भावी योजनाओं को उन्नत बनाने में सहयोग देना है ताकि प्राचीन ऋषियों की भाँति सदम्पति कुमारी कन्या से काश्मीर तक, अटक से कटक तक अपनी छाप भारत की भावीउत्तराधिकारिणियों में भर कर समस्त तीर्थ के दर्शन व्रत यज्ञादि कर्मानुष्ठान सम्पन्न कर अपनी हरी-भरी गृहस्थी को अपने उत्तराधिकारी को सौंपकर महाप्रयाण को प्राप्त करें।

प्रत्येक नवविवाहित कन्या के मस्तक पर आपका वरदहस्त गौरी-शंकर की जोड़ी बनाने के आशीर्वाद से उठता है।

आपकी रचनायें हैं :—

१—नगर के पथ पर (कहानी-संग्रह) प्रकाशित

२—खण्डहर (उपन्यास) अप्रकाशित

३—विजय वजयन्ती (प्रबन्ध काव्य) अप्रकाशित

४—तुलसीदल (,,) ,,

५—इन्द्रप्रस्थ (,,) ,,

अनेक निबन्ध, सैकड़ों कहानियाँ जो कि भारत के श्रेष्ठ पत्रों में प्रकाशित है, पर पुस्तकाकार नहीं हैं, एकांकीअभिनय, स्फुट काव्य, और व्यंग्य चित्रादि हैं, जिन्हें किसी ग्रन्थ में अभी ग्रथित नहीं किया गया है।

आगामी पंचवर्षीय योजनाओं में आपकी अनेक मंगल विभूतियां समाज और राष्ट्र को उच्चतम स्वरूप में प्राप्त हों यही धुन आपके कार्यों से ध्वनित होती है।

पता :—श्री रामप्रताप जी दुबे, अनिवार्य शिक्षाधिकारी, इलाहाबाद म्युनिसिपल बोर्ड, १९६ बहादुरगंज, वार्ड ८, इलाहाबाद (उ० प्र०)

श्रीमती चन्द्रवती ऋषभसेन जैन

बीसवीं सदी के आरम्भ से भारत में अनेक चेहरे चमक रहे थे। इनमें से कुछ वे थे जिनकी चमक भारत के ब्रिटिश शासकों को प्रिय थी। ऐसा ही एक चेहरा था—सर मोती सागर का जो पहले देश के लोकप्रिय वकील बने, बाद में पंजाब हाई कोर्ट के जस्टिस और साथ ही दिल्ली यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर भी। विद्या, सम्पदा, प्रतिभा, प्रतिष्ठा से सम्पन्न एक सहृदय महापुरुष।

उन्हीं के घर में सन् १९०७ में चन्द्रवती का जन्म हुआ दिल्ली में और शिक्षा लाहौर में। चन्द्रावती की आँखों ने जो कुछ सबसे पहले गौर से देखा, वह था अपने पिता का विशाल पुस्तकालय। आपके ही शब्दों में :— 'मैं सोचा करती, ये पुस्तकें कैसे बनती हैं, इन्हें कौन बनाता है। क्या मैं भी बना सकती हूं कोई किताब ? किताब को तब मैं क्या समझती। उसके ज्ञान तक मेरी पहुँच ही कैसे होती, पर उन कानूनी किताबों की सुनहरी जिल्दें ही मेरे आकर्षण और जिज्ञासा का रहस्य थीं।'

इन पुस्तकों के साथ ही :—"मैं देखती कि मेरे न्यायाधीश पिता अक्सर कुछ लिखते हैं अपने स्टैनों को लिखाते हैं। मैं सोचती कि क्या मैं भी लिख सकती हूँ ? मेरा मन कहता—क्यों नहीं लिख सकती मैं ? और एक दिन तो मैंने अपने पिता के लिखे कागजों पर भी बहुत कुछ लिख दिया था, लकीरें खींच दी थीं।

लेखन-कला की इस प्रथम साधना पर—"मेरे पिता के सैक्रेटरी ने मुझे डांटा था कि मैंने सरसाहब का क़ीमती क़लम खराब कर दिया है, पर मेरे पिता जी ने तो मेरी लिखाई पर मुझे दाद दी। कहा था तू तो बड़ा सुन्दर लिखती है बेटी।"

इस प्रकार चन्द्रवती अध्ययन की ओर लेखन के संस्कार लेकर बड़ी हुई और १६-१७ वर्ष की उम्र से कुछ लिखने लगी। लेखन के साथ आपकी कला प्रवृत्ति को जिन दिशाओं में प्रसार मिला, उनमें मुख्य हैं कढ़ाई बुनाई और बाद में पेंटिंग। आपके पति ऋषभसैन भगवानदास बैंक वाले भी कलाभि मनुष्य थे। उनसे आपको प्रोत्साहन भी, मिला और साधन भी जुटकर काम करना तो चन्द्रवती का जन्म संस्कार ही है।

१९३९-४० में आकर रुख अचानक कहानी लेखन रुचि की ओर हुआ और इसमें आपको काफी सहायता मिली। आपकी अंजनहारी कहानी की चर्चा तो साहित्य संसार में घर-घर ही हुई। १९४२ में आपका कहानी संग्रह "नीव की ईंट" छपा और १९४३ में उस पर साहित्य सम्मेलन से सेक्सरिया पुरस्कार प्राप्त किया। आपकी कहानियों की लोकप्रियता का रहस्य उनके मानवीय स्पर्श में है।

श्रीमती चन्द्रवती ऋषभसैन जैन की साहित्यिक कमजोरी यह है कि वे कहानी का प्लाट गढ़ नहीं सकतीं। इसके लिए उन्हें घटना का सहारा लेना पड़ता है यही कारण है कि उनकी कहानियों में संस्मरण और कहानी का अक्सर संगम हो गया है! भाषा की सरलता और अभिव्यक्ति की सादगी में उनकी साहित्यिक शक्ति दिखाई देती है!

दुर्भाग्यवश जब उनकी कलम पूरे वेग से चल रही थी, उनकी आत्मा की प्रतिनिधि सन्तान कुमारी शारदा जैन की मृत्यु हो गई। यह कन्या स्वयं बड़ी अच्छी कहानी लेखिका थी इस मृत्यु ने चन्द्रवती जी के मानस को झकझोर दिया और कुछ ऐसा आघात लगा कि उनका लिखना ही बन्द हो गया! यह समझिये कि साहित्यिक अभिरुचि ही कुंठित हो गई। इसके बाद न तो उन्होंने "नींव की ईंट" का ही दूसरा संस्करण कराया और न अपना दूसरा कहानी संग्रह ही प्रकाशनार्थ दिया।

इस काल में उन्होंने कुछ कविताएँ अवश्य लिखीं जिनमें उनका

नारीत्व मुखर हो उठा है।

लाला ऋषभसैन को किडनी का रोग हो गया। डाइविटीज़ का रोग तो उन्हें पहले से ही था। और अन्त में जुलाई १९५४ में उनकी मृत्यु हो गई। श्रीमती चन्द्रवती ने २॥ साल तक उनकी सेवा जिस अखंड निष्ठा से की, जिन परिस्थितियों में की, उसे सेवा का एक नया रूप माना जाना चाहिए।

उसके बाद से आपका जीवन मसूरी के पास वाले पहाड़ी गाँवों में लगा रहा है। जीवन की इस नई तल्लीनता का उनके मन पर अच्छा प्रभाव पड़ा है। उन्होंने अपने जीवन के संस्मरण लिखने का कार्य आरम्भ किया है और उनके कहानी संग्रह भी प्रकाशित होते रहे हैं—'नींव की ईंट' और (२) "आगोश की प्रर्दशिनी में"—

(एक कृपालु एवं सुविख्यात साहित्यकार के सौजन्य से प्राप्त)

श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल

जन्म स्थान तथा तिथि :—बिजनौर, २९ दिसम्बर १९०४

शिक्षा :—एम० ए०, बी० टी० ।

साहित्य की ओर प्रेरित करने वाला वातावरण :—पिता को शिक्षा से प्रेम था इसलिए उन्होंने ऊंची से ऊँची शिक्षा देने का प्रयत्न किया पति श्री सत्यव्रत सिद्धांतालंकार, गुरुकुल विश्वविद्यालयके उपकुलपति रहे और अनेक ग्रन्थों के रचयिता हैं।

परिवार की साहित्यिक निधियाँ—परिवार में मेरे पति एक प्रसिद्ध साहित्यकार हैं। उनकी निम्न रचनाएँ प्रसिद्ध हैं :—

(क) एकादशोपनिषद् का धारावाही हिन्दी में सचित्र अनुवाद (मूल-सहित) इसकी भूमिका हमारे उपराष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् ने लिखी है। इस पर उत्तर प्रदेश सरकार ने ८००) का पारितोषिक भी दिया है।

(ख) 'समाज शास्त्र के मूल तत्व' इस पर उत्तर प्रदेश सरकार ने १०००) का पारितोषिक दिया है।

(ग) समाज शास्त्र तथा बाल कल्याण।

(घ) ब्रह्मचर्य सन्देश (भूमिका लेखक स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज)

(ङ) आर्य संस्कृति के मूलतत्व।

(च) समाज कल्याण तथा सुरक्षा।

साहित्यिक दिशायें:—शिक्षा, मनोविज्ञान तथा सामाजिक समस्याएं।

साहित्यिक रचनायें :—शिक्षा-मनोविज्ञान—इस पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने १२०० का मंगलाप्रसाद पारितोषिक दिया था।

(ख) शिक्षा-शास्त्र ।

(ग) स्त्रियों की स्थिति (इस पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने सेक्स-रिया पुरस्कार ५००) का दिया था ।

सार्वजनिक जीवन:—पिछले ४ वर्ष से राज्यसभा की सदस्य थीं और अब फिर ६ वर्ष के लिए दुबारा चुनीं गई हैं ।

पता :—चन्द्रावती लखनपाल एम० ए०, विद्या-विहार, बलवरी रोड, देहरादून ।

श्रीमती ज्योतिर्मयी ठाकुर

सन् १९१५ ई० में मेरा जन्म लखनऊ के एक प्रतिष्ठित काश्मीरी ब्राह्मण परिवार में हुआ था और पालन पोषण से लेकर काश्मीरी परिपाटी के अनुसार शिक्षा और जीवन सम्पूर्ण अंग्रेजी सभ्यता की छाया में आरम्भ हुआ था। मैंने आरम्भ से ही विचारों की स्वतन्त्रता पाई थी। अनेक भाई बहिनों में मैं अपने मां-बाप की प्यारी लड़की थी। काश्मीरियों में लड़कों और लड़कियों का स्थान एक सा रहता है। इसीलिए मेरा बचपन भी वैभव के साथ सम्पन्न हुआ था।

मेरी शिक्षा का कार्यक्रम हाई स्कूल तक चला। काश्मीरी हिन्दुओं में उर्दू उनकी मातृभाषा के रूप में चलती थी इसीलिए मेरी बोलचाल की भाषा भी उर्दू ही थी। मैंने अंग्रेजी के साथ हिन्दी भाषा पढ़ी थी। लेकिन हिन्दी की अपेक्षा उर्दू अधिक जानती थी। लखनऊ से लेकर क्वेटा तक मैंने उस समय तक अनेक यात्राएँ की थी और ननिहाल के परिवार में वहाँ रहने के कारण अनेक बार मुझे क्वेटा में अरस तक रहने के अवसर मिले थे। क्वेटा में ही केशवकुमार ठाकुर से मेरी भेंट हुई थी। क्वेटा में जाने पर वे लगभग दो महीने के लिए मेरे बंगले पर ठहरे थे। उनसे मेरे ननिहाल का परिवार बड़ा प्रभावित हुआ था और उसी दशा में मेरा व्यक्तिगत सम्पर्क भी उनके साथ बढ़ गया था। उस सम्पर्क में हम दोनों ने एक दूसरे के साथ वैवाहिक सम्बन्ध का निर्णय कर लिया था। इस प्रकार का विवाह हमारी सामाजिक प्रथा के अनुकूल न था। इसलिए माता पिता ने अपनी परिपाटी के अनुसार मेरे विवाह का अन्यत्र निर्णय किया। परन्तु मैंने उसे स्वीकार न किया। और अपनी अभिलाषा के अनुकूल पूर्व निर्णय के आधार पर

मैंने अपना विवाह केशवकुमार ठाकुर के साथ कर लिया।

इस विवाह के बाद मेरे जीवन की नई दिशा आरम्भ हुई। विवाह करके हम दोनों इलाहाबाद चले गए। वहां पर मैंने आगे पढ़ने का क्रम आरम्भ किया। लेकिन अधिक दिनों तक वह चल न सका। मैंने सम्पत्ति से भरे हुए परिवार में जन्म लिया था और विवाह के पहले तक सुख और सम्मान के वैभव देखे थे। लेकिन विवाह के बाद साधु जीवन का आरम्भ हुआ। हम दोनों ही अपने माता-पिता के परिवारो से सम्बन्ध तोड़ चुके थे। जीवन की विलासिता से निकल कर मैंने साधु जीवन में प्रवेश किया था। इन दिनों में मेरा इतना ही सुख था कि अच्छी पुस्तकें पढ़ने को मिलती थी और साहित्यकारों के वाद-विवाद सुना करती थी। परन्तु इसका मेरे ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। जीवन निर्वाह का कोई साधन न होने के कारण आर्थिक कठिनाइयों की कोई सीमा न रही।

इन्हीं दिनों में इलाहाबाद के एक प्रकाशक ने मुझे छोटी-छोटी पुस्तकें लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। मुझे पुस्तकें लिखने का न तो कोई ज्ञान ही था और न शौक ही। लेकिन आवश्यकताओं के कारण मैंने स्वीकार किया। मैंने बच्चों की छोटी-छोटी पुस्तकें कहानी-कथाओं पर लिखी। उनसे मुझे कुछ आर्थिक लाभ हुआ। यहीं से मेरा उत्साह बढ़ा। शिक्षित और सभ्य वंश में जन्म लेने के कारण मेरी जानकारी बहुत थी लेकिन हिन्दी लिखने में मैं समर्थ न थी। मेरी भाषा हिन्दी उर्दू मिश्रित थी। इसलिए इसमें मुझे ठाकुर साहिब से बड़ी सहायता मिली। मैंने हिन्दी की अच्छी पुस्तकों का अध्ययन आरम्भ किया और धीरे-धीरे मैं बोल चाल की हिन्दी भाषा सीखने लगी। मैंने साधारण स्त्रियों के लिए जानकारी की पुस्तकें लिखी और उनसे मुझे आर्थिक लाभ हुआ। इसलिए मेरा लिखने का काम वैसा ही चला जैसा किसी की नौकरी का काम चलता है। मैं अंग्रेजी की पुस्तकें अच्छी तरह पढ़ लेती थी, इसलिए स्त्रियों के पढ़ने के लिए मुझे बहुत सी सामग्री

अंग्रेजी पुस्तकों से मिली। उर्दू का सम्बन्ध मेरा टूट गया और हिन्दी मजबूत होने लगी।

मनुष्य जिस प्रकार के काम में रहता है वही उसकी लाइन बन जाती है। लिखने का काम ही मेरा सदैव के लिए काम बन गया। मेरी पुस्तकों में न तो कविता थी और साहित्य की ऊँची भाषा। लेकिन उनमें काम की और जानकारी की बातें होती थीं। इसलिए एक-एक कर के कई प्रकाशकों से मुझे प्रोत्साहन मिला। कुछ लोगों ने तो मेरे साथ बड़ी उदारता का काम किया। पुस्तकों का लेखन-कार्य मेरी जीविका बन गई। मैंने स्त्रियों के लिए खुलकर लिखना आरम्भ किया। इससे आर्थिक कठोरता में कुछ सुविधा उत्पन्न हुई।

इसी प्रकार की परिस्थितियों में मेरे एक पुत्र उत्पन्न हुआ था मेरी दशा ऐसी न थी कि मैं बड़े परिवार का पालन कर सकती। इसलिए हम दोनों ने सन्तान-नियन्त्रण पर पुस्तकों का अध्ययन किया और निश्चय किया कि भविष्य में हम कोई सन्तान उत्पन्न न करेंगे। जो लड़का उत्पन्न हुआ था उसका नाम था कृष्ण कुमार। वह जब तीन वर्ष का हुआ, एक भीषण रोग से पीड़ित हुआ। उसके समस्त शरीर में छाले पड़ गए और एक महीने के भीतर ही उसका जीवन संकट में पड़ गया। इलाज के लिए मेरे पास पैसे न थे, इसलिए फ्री दवाखानों की औषधियाँ कीं। इससे कोई लाभ न हुआ। उस निराश अवस्था में हम दोनों ने प्राकृतिक चिकित्सा का आश्रय लिया। एक प्राकृतिक चिकित्सक के यहाँ हम लोग अपने उस बच्चे को लेकर गए। उसने देख कर निराशा के साथ तीन सौ रुपये एक साथ माँगे। मेरे पास दस रुपए भी न थे। इस दशा में वहाँ से निराश हम दोनों को लौटना पड़ा। बालक की चिकित्सा का अब कोई उपाय न था। मैंने प्राकृतिक चिकित्सा पर गाँधी जी के कुछ लेख पढ़े थे। उनके आधार पर मैंने बालक की चिकित्सा आरम्भ की। कुछ जानकारी न थी। फिर भी दो ही दिनों में बालक के निरन्तर रोने में कुछ अन्तर पड़ा। मैं निरन्तर उसी

चिकित्सा में लगी रही। धीरे-धीरे तीन महीने पूरे बीत गए। रोग के न घटने के कारण भय था कि मुझे उस चिकित्सा को छोड़ देना चाहिए। लेकिन—ग्रौरकोई रास्ता न मिलने के कारण मुझे उसी के आश्रय में रहना पड़ा।

कुछ दिन और बीत गए। एक प्राकृतिक चिकित्सक से भेंट हुई। उसने कुछ बातें बता दीं। मैंने उसका आश्रय लिया। लेकिन जल्दी कुछ लाभ न हुआ। बालक सूख कर लकड़ी हो गया था। उन दिनों में मेरा कोई सहायक न था। पास पैसे भी न थे इसलिए जल-चिकित्सा में हम दोनों लगे रहे। पाँच महीनों बाद नए छालों का पैदा होना बन्द हो गया और उसके बाद बालक की सेहत बननी आरम्भ हुई। पूरे आठ महीने से वह बालक रोग से छुटकारा पा सका। मेरे ऊपर प्राकृतिक चिकित्सा का बहुत प्रभाव पड़ा और मैंने नियमित रूप से उस चिकित्सा का अध्ययन आरम्भ किया।

विदेशी विद्वानों की पुस्तकों को मंगाकर मैंने पढ़ा और अपने परिवार के सभी लोगों का इलाज मैं स्वयं करने लगी। मेरा अभ्यास बढ़ता चला गया। अनेक भयानक रोगों को भी दूर करने में मुझे सफलता मिली।

इलाहाबाद में रहकर हम दोनों ने प्रकाशन का कार्य आरम्भ कर दिया। उसमें कुछ सफलता मिली। मेरी स्त्री-उपयोगी पुस्तकों को पढ़-कर कुछ लोगों ने मुझे स्त्रियों की एक मासिक पत्रिका निकालने के लिए तैयार किया। मैं स्वयं इसकी आवश्यकता को अनुभव करती थी। इसलिए कुछ दिनों में तैयारी करके मैंने 'कमलिनी' नामक एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। इन्हीं दिनों में मैंने अपना प्रेस भी खोला। मैं, कमलिनी, का सम्पादन भी करती थी और प्रेस की सम्पूर्ण छपाई का काम देखती थी। पूरे दो वर्ष तक मैंने सफलता के साथ 'कमलिनी' का प्रकाशन किया। कुछ लोगों के परामर्श पर तीसरे वर्ष हम दोनों को अपना प्रेस और प्रकाशन लेकर सन् १९३७ ईसवी के अन्तिम

दिनों में कानपुर चला आना पड़ा। अतः प्रेस का काम रुक गया और कई महीने तक पत्रिका का प्रकाशन न हो सका। उसका परिणाम यह हुआ कि पत्रिका को अनिश्चित समय के लिए स्थगित कर देना पड़ा।

इन दिनों प्राकृतिक चिकित्सा पर मेरा विश्वास बहुत बढ़ गया था। मैंने कई वर्ष तक उस विषय में अध्ययन और अनुभव किया था। कानपुर में मैंने प्राकृतिक चिकित्सा का दवाखाना खोला था। उससे बहुत सफलता मिली। लेकिन ठाकुर साहिब की राजनैतिक गिरफ्तारी के साथ साथ मकान और प्रेस की कुड़की हुई उसमें मेरे दवाखाने का सब सामान जिसे मैंने कई वर्षों में बहुत व्यय करके इकट्ठा किया था चला गया और वह फिर न मिल सका। उसका नतीजा यह हुआ कि मेरा दवाखाना टूट गया। फिर भी जो लोग मेरी चिकित्सा का लाभ उठा चुके थे वे बराबर यहाँ आते रहे। उस चिकित्सा का काम अब तक मेरे द्वारा चल रहा है।

पुस्तक लेखन और प्राकृतिक चिकित्सा—दोनों कार्य आज मेरे साथ चल रहे हैं। इन दोनों कार्यों की उपयोगिता ने मुझे स्वयं अपनी ओर आकर्षित किया और उनसे मिलने वाली सुविधाओं के कारण उनके साथ मेरा गहरा सम्बन्ध हो गया।

उपन्यास और कुछ कहानियों के साथ-साथ मैंने बहुत सी पुस्तकें स्त्रियों के सामाजिक जीवन पर लिखी है। छोटी और बड़ी मिलकर उन पुस्तकों की संख्या चालीस से अधिक है। उन पुस्तकों में से 'स्त्री-शिक्षा', 'स्त्री और सौंदर्य', 'स्वामी के पत्र', 'सौभाग्यवती, मधुबन, 'आहार और आरोग्य', 'घर की लक्ष्मी', 'स्त्री-विनोदिनी', 'सन्तान-निग्रह और 'उपवास' प्रमुख हैं। मेरी पुस्तकों का दृष्टिकोण सदा सामाजिक सुधार रहा है। आडम्बर से भरे हुए धर्म पर मैं विश्वास नहीं करती। मेरा पारिवारिक जीवन स्वयं इसी तरह का है। मेरी लिखी हुई पुस्तकें बोल चाल की भाषा में हैं। उनको लिखकर मैंने अपने यहाँ का जीवन विशुद्ध बनाने की चेष्टा की है। इसलिए वे ऐसी भाषा में लिखी गई

हैं, जिसे प्रत्येक स्त्री पढ़ सके और लाभ उठा सके।

प्राकृतिक चिकित्सा को व्यवसायिक रूप देने के स्थान पर प्रचार करना मैं अधिक आवश्यक समझती हूँ। उसके व्यवसाय से व्यक्तिगत और प्रचार से समाज का कल्याण है, ऐसा मेरा विश्वास है। हमें अपने स्वार्थों की पूर्ति के साथ-साथ समाज कल्याण की भावना भी रखनी चाहिए। देश को नीरोग बनाने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक परिवार की स्त्रियों को नीरोग रखने और नीरोग बनाने का ज्ञान कराया जावे। इस विषय में एक योजना को लेकर काम करने की बहुत दिनों से सोच रही हूँ। मेरा विश्वास है कि औषधियों की दुकानों से देश नीरोग नहीं रह सकता। इसके लिए प्रत्येक मनुष्य को ज्ञान लेने की आवश्यकता है। इस विषय में मेरी एक योजना है। मैं रोज वही काम करने की बात सोचती हूँ। आर्थिक कठिनाइयाँ मेरे सामने बाधक हैं। मैं उनको पारकर के आगे बढ़ना चाहती हूँ। मेरे भविष्य के कामों की यही योजना है।

कमलिनी-कार्यालय,
पुराना कानपुर, कानपुर

श्रीमती तारा पाण्डेय

(सेक्सरिया पुरस्कार विजेता)

जन्म स्थान व तिथि :—दिल्ली दिसम्बर १९१५।

१९२८ में श्री डाक्टर पी, पाण्डेय से विवाह हुआ।

शिक्षा :—शिक्षा सब घर पर ही हुई है; वैसे हिन्दी, अंग्रेजी और बंगाली का अच्छा ज्ञान है।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें विशेष अभिरुचि है :—कहानियों और कविताओं में विशेष अभिरुचि है। रेडियो से कविताएं प्रसारित की जाती हैं। स्वयं रेडियो में कविताएं पढ़ने से मना कर चुकी हैं।

सरस्वती, विशाल भारत, कर्मयोगी इत्यादि में इनकी कविताएं १९२९ से प्रकाशित होती रही हैं।

रचनाएँ प्रकाशित :—सीकर, उत्सर्ग (कहानी संग्रह), शुकपिक, वेणुकी, आभा, रेखाएँ (गद्यकाव्य), अन्तर्रागिनी, काकली, गोधूली, विपंची।

सम्पादकीय ज्ञान व अनुभव :—१९३६ से ४० तक प्रथम कांग्रेस सरकार के तत्वावधान में उत्तर प्रदेश सरकार से प्रकाशित होने वाले पत्रिका 'हक' के सम्पादक मण्डल में रही।

सार्वजनिक जीवन :—(१) नैनीताल म्युनिसिपल बोर्ड की १९३८ से सदस्या हैं।

(२) पिछले छः वर्ष से वे बोर्ड की वरिष्ठ उपाध्यक्षा हैं।

(३) पाँच मास तक म्युनिसिपल बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में भी काम कर चुकी हैं।

(४) डिस्ट्रिक्ट प्लानिंग कमेटी की सदस्या हैं।

(५) किंग एडवर्ड मैमोरियल सैनीटोरियम भुवाली की प्रबन्ध-कारिणी की सदस्या है।

(६) नैनीताल में १६०६ में "महिला शिल्प कला भवन" संस्थापित किया और १६५५ तक निरन्तर संचालित करती रहीं। इस संस्था को बाद में १६५५ में सरकारी-उद्योग-विभाग को सौंप दिया गया।

(७) १६४२ में सेक्सरिया पुरस्कार प्रदान किया गया।

पता :—C/o श्री डाक्टर पी० पाण्डेय, साकेत, नैनीताल।

श्रीमती ताराराानी

मेरा जन्म बिहार के एक गाँव में कायस्थ परिवार में हुआ। मेरे पिता का नाम रघुवंश सहाय, माता का नाम राधिका कुमारी था। मेरा विवाह सीवान के पास एक पचलखी ग्राम है वहीं हुआ था। मेरे पति प्रथम श्रेणी के देशभक्त थे। १९४१ के व्यक्तिगत सत्याग्रह में हम दोनों पति-पत्नी लखनऊ जेल में नजरबन्द रहे। १९४२ के जून में वे उन्नाव जेल से और मैं फतहगढ़ जेल से हम दोनों ही छूटे। और १९४२ में ही १६ अगस्त को गोली लगने पर वे वीरगति को प्राप्त हुए। हमारी माता जी घायल हुई थीं और मैं भी एक जलूस को संचालित करते समय घायल हुई थी। फिर मैं और माता जी पकड़ी गई और भागलपुर जेल में अढ़ाई वर्ष बन्द रही। वहीं सर्वप्रथम मैंने अपने पति की स्मृति लिखी और उसके बाद मेरे अनुभव ही मुझे लिखने की प्रेरणा देते रहे। पुस्तकाकार अभी केवल उनकी स्मृति छपी है और सरिता, हिन्दुस्तान, विशाल भारत आदि पत्रिकाओं में कहानियाँ। अनेक पुस्तक तैयार है। 'कल्पना' उपन्यास प्रकाशक ओंकार शरद जी को दिया है, छपने के लिए। और अब भी लिखती ही हूँ। हिन्दी बंगला, गुजराती भाषाएँ जानती हूँ किन्तु मेरी रचना का मूल स्रोत मेरी दुःखद स्थिति, पीड़ित जीवन ही है। यही मेरा संक्षिप्त इतिवृत्त है।

पता :—बाल बंगारा, महराज गंज, छपरा।

कुमारी दमयन्ती

जन्म स्थान तथा तिथि :—मेरा जन्म हापुड़ ज़िला मेरठ में २२ सितम्बर १९१८ ई० को हुआ था।

शिक्षा :—हिन्दी प्रभाकर और राजनीति विज्ञान में एम० ए० की परीक्षाएँ घर रह कर ही पास कीं। किसी स्कूल अथवा कालिज में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मुझे प्राप्त नहीं हुआ!

साहित्यिक निधियाँ वातावरण व निर्दिष्ट दिशा :—डेढ़ वर्ष काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में शिक्षक के पद पर काम करने के अतिरिक्त मेरा सारा जीवन ही संसार के कोलाहल से दूर माता-पिता के वात्सल्य की शीतल छाया में घर पर ही व्यतीत हुआ है। इसलिए मेरी मानसिक शक्तियाँ अन्तर्मुखी हो गई हैं मैं साहित्य का अध्ययन करती थी और कल्पना की दुनियाँ में रहती थी। समुद्र के तट पर खड़ा हुआ दर्शक जिस प्रकार तल्लीनता के साथ समुद्र की लहरों का उत्थान-पतन देखा करता है उसी प्रकार विश्व में प्रतिदिन होने वाली राजनैतिक सामाजिक और प्राकृतिक घटनाओं को दूर से देखा करती थी और उनकी बड़ी ही भीषण प्रतिक्रिया मेरे मस्तिष्क पर होती थी। मेरी मनोवृत्ति तुलनात्मक हो गई। जो कुछ मैं पुस्तकों में पढ़ती थी उसकी वास्तविक संसार में होने वाली घटनाओं से तुलना करती थी। सीता-परित्याग, द्रौपदी चीर-हरण के समय आत्मीय-जनों की अवहेलना, भरत पर राज्य के लोभ का सन्देह आदि प्रसंगों में मैं मानव हृदय पर चिरकालीन वेदना और असहाय अवस्था का अनुभव करती थी। इस प्रकार मेरी रुचि साहित्य की ओर बढ़ती गई और करुण एवं शान्त रस में मेरी विशेष अभिरुचि हो गई। साहित्यिकों के सम्पर्क में आने का मुझे कभी अवसर

नहीं मिला। मेरी बहिन सीता देवी को छोडकर मेरे परिवार में और कोई साहित्यिक नहीं है।

रचनाएँ :—"धूल-धूसरित-मणियाँ, नामक पुस्तक का सम्पादन मैंने अपनी बहिन के साथ मिलकर किया है। १५ से १८ वर्ष की आयु तक मैं पत्र-पत्रिकाओं में समाज सुधार सम्बन्धी लेख लिखा करती थी, जो उस समय काफी पसन्द किए गए थे।

सम्पादकीय अनुभव :—सम्पादकीय अनुभव बड़े ही सरस थे। मुझे ग्रामीण महिलाओं के निकट सम्पर्क में आने और उनकी मानसिक विचारधारा को अध्ययन करने का अवसर मिला। उनके तेज़ आत्म-गौरव की अनुभूति और मनोभावों को अभिव्यक्त करने की शक्ति देखकर नारीत्व के गौरव से मेरा हृदय परिपूर्ण हो उठा है। जिला करनाल इलाहाबाद और हापुड़ के गीत एकत्र करने में मुझे ज़रा भी कठिनाई नहीं हुई। ग्रामीण महिलाएँ बड़े उल्लसित स्वर में गीत गा गा कर सुनाती थीं। पुस्तक प्रकाशित कराने में जरूर कुछ कटु अनुभव हुए और वह बीस वर्ष तक प्रकाशित न हो सकी। भविष्य की योजनाएँ अनिश्चित हैं।

पता :—प्रताप-भवन, हापुड़ जिला मेरठ।

सुश्री दयावती पाराशर

मेरा जन्म गाजियाबाद के एक साधारण ब्राह्मण परिवार में १९२७ में हुआ। शिक्षा केवल कक्षा सात तक हो पाई।

ऐतिहासिक दृष्टि से "विभिन्न कालों में नारी की स्थिति क्या रही ?" यही सब कुछ जानने के लिए पत्र-पत्रिकाओं तथा ऐतिहासिक किताबों के स्वाध्याय में मेरी दिलचस्पी रही। इसके अतिरिक्त बच्चों की हास्य कहानी लिखने-पढ़ने का मुझे चाव रहा।

मेरा पहला लेख वीर अर्जुन साप्ताहिक में "सौंदर्य और अधिकारों से लदी ईरानी नारी," छपा था। उसके बाद बच्चों की कुछ कहानियाँ और लेख और छपे।

कुछ दिन बाद मैंने अपना ध्यान सिलाई-कटाई में लगाया और साहित्य लिखने की अपेक्षा पढ़ने मात्र की वस्तु रह गया। उसके ४-५ साल बाद फिर साहित्य सेवा का शौक आरम्भ हुआ। वर्तमान काल में मेरे कुछ लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपे हैं।

मेरा पता :—दयावती पाराशर राकेश पब्लिकेशन्स गाजियाबाद।

श्रीमती दिनेश नन्दिनी डालमिया

जन्म स्थान व तिथि :—उदयपुर (राजस्थान) १६ फरवरी १९१५

शिक्षा :—एम० ए०

प्रोत्साहन प्रदायक वातावरण :—भावुक हृदय

साहित्यिक पारिवारिक निधियाँ :—पूज्य पिता (श्री श्यामसुन्दर लाल जी चोरडिया)

साहित्यिक दिशा :—कविता—गद्य और गीत

रचनाएँ :—वंशीरव, शवनम, उरवाती, दुपहरिया के फूल शारदीया, उनमन, स्पन्दन, मौक्तिक माल, सारंग परिछाया और मनुहार।

वर्तमान पता :—३ सिकन्दरा रोड, डालमिया हाऊस नई दिल्ली।

कुमारी दुर्गा मेहरोत्रा

जन्म स्थान व तिथि :—फतेहगढ़, ७ अप्रैल १९३५।

शिक्षा :—प्रयाग विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य लेकर एम० ए० किया।

साहित्यिक अभिरुचि को प्रोत्साहन प्रदान करने वाला वातावरण :—साहित्यिक अभिरुचि को प्रोत्साहन परिवार ने दिया सब से अधिक। घर का छोटा-सा पुस्तकालय, पिता जी तथा माता जी द्वारा दिया गया प्रोत्साहन, पूज्य भ्राताओं तथा भाभी से मिली हुई प्रेरणाएं तथा अत्यन्त तीव्रता से अनुभूत भावों को व्यक्त करने की अन्त: प्रेरणा। इन सब से साहित्य सृजन की ओर अधिकाधिक ध्यान और झुकाव होता गया और उसमें योग दिया शिक्षा ने।

विशेष रूप से एम० ए० में लिए विशेष पत्र 'लोकसाहित्य' ने। थोड़े बहुत साहित्यिकों से परिचय पाकर इस वातावरण में रचनात्मक शक्ति ने कुछ रचनाओं का रूप लिया।

परिवार की अन्य साहित्यिक विभूतियाँ—(१) पूज्य पिता जी श्री भगवती प्रसाद सिंह (अवकाश प्राप्त जिला मैजिस्ट्रेट) जिनकी एक पुस्तक "बनारस के व्यवसायी" निकल चुकी है तथा दर्शन, यात्रा, धर्म आदि से सम्बन्धित लेखादि समय समय पर प्रकाशित होते रहे हैं। विशेष रूप से कल्याण में।

(२) सब से बड़े भैया श्री बैकुण्ठनाथ मेहरोत्रा एम० ए० एल० एल० बी० जिनकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। (अ) मौन-निमंत्रण (कहानी-सग्रह) (ब) 'धरती और धुआं' (कहानी-संग्रह) ऊँचे और ऊँचे (लघुकथा संग्रह)।

(३) बड़ी भाभी—श्री बैकुण्ठनाथ जी की पत्नी, श्रीमती शान्ति मेहरोत्रा एम० ए० जिन्हें हिन्दी जगत कवियित्री के अतिरिक्त कथाकार, निबन्धकार, के रूप में भी मान्यता दे चुका है तथा जिनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है।

(४) उनसे छोटे भाई श्री त्रिलोकीनाथ मेहरोत्रा भी लेख और कहानियाँ लिखते हैं।

(५) बहिन कुमारी लक्ष्मी मेहरोत्रा एम. ए. पूरी लग्न से कहानियाँ, लेख शब्द चित्र आदि लिखकर साहित्य सृजन के क्षेत्र में बढ़ती जा रही हैं। लगभग सभी प्रतिष्ठित पत्रों में उनकी रचनाएँ स्थान पाती जा रही हैं।

(६) और छोटे भाई-बहन और नन्हा भतीजा तक साहित्य सृजन की ओर प्रवृत्त हैं।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें आपकी विशेष अभिरुचि है :— यूँ तो रचना क्षेत्र से अभी एक सीमा रेखा नहीं खींच सकती कि किस किस प्रकार की रचनाओं की ओर अधिक झुकाव है पर हाँ, लोक-साहित्य का अध्ययन तथा इस विषय पर मौलिक सामग्री एकत्र कर लेखादि इस विषय पर लिखना यही विशेष अभिरुचि का पथ है। यूं विविध चरित्रों तथा भावनाओं का सूक्ष्म अध्ययन कर के उनके आधार पर शब्द चित्र लिखने का प्रयास भी कर रही हूँ।

रचनायें :— रचनायें अभी पुस्तक के रूप में प्रकाश में नहीं आई हैं। पर अब तक लिखे गये निबन्धों में अधिकांश लोक-साहित्य के विविध अंगों—लोकगीत, लोकनृत्य, लोक-कथा आदि पर है। बाल-मनोविज्ञान से सम्बन्धित कुछ लेख भी लिखे हैं। मानवी प्रवृत्तियों को शब्द-चित्रों में चित्रित करने की तीव्र इच्छा के परिणाम स्वरूप ही कुछ शब्द चित्र भी लिखे हैं।

सम्पादकीय अनुभव :— सम्पादकीय अनुभव प्राप्त करने का अवसर अभी नहीं पा सकी हूं। लेकिन उसकी इच्छा रखती हूँ।

सार्वजनिक जीवन :— साहित्यिक संस्थाओं के कार्यक्रमों में रुचि

रखती हूं। आकाशवाणी प्रयाग के कार्यक्रमों के विशेष रूप से हिन्दी तथा संस्कृत के नाटकों में भाग लेती हूँ।

पता तथा भावी साहित्य-सम्बन्धी योजनायें :—१७, बी मोतीलाल नेहरू रोड इलाहाबाद। भविष्य में साहित्य सेवा की भावना निश्चित रहेगी यह बता सकना तो कठिन है फिर भी अनुभव करती हूं कि अधिकाधिक झुकाव लोक-साहित्य के अध्ययन की ओर इसी पर निबन्ध आदि लिख कर मौलिक सामग्री एकत्र कर के यथा शक्ति रचनात्मक शक्ति को बढ़ाने का प्रयत्न करती रहूंगी।

श्रीमती नारायणी कुशवाहा

जन्म स्थान तथा तिथि :—महेशपुर, मुंगेर, जन्म १६३१ ।

शिक्षा :—मैट्रिक ।

वातावरण व प्रेरणा :—वातावरण परिवार से ही मिला है, और प्रेरणा भी ।

परिवार की साहित्यिक निधियाँ :—(१) छोटा भाई ब्रह्मदेव 'मधुर'-चित्रकार और कथाकार है । उसकी कई पुस्तकें प्रकाशित हैं । हिन्दी के विख्यात उपन्यासकार स्वर्गीय कुशवाहा कान्त मेरे अपने परिवार के थे ।

निर्दिष्ट दिशा :—विशेषत: कथा साहित्य में अभिरुचि है । निर्दिष्ट दिशा भी वही है ।

रचनाएँ—'पराये बस में' उपन्यास, प्रकाशित, लगभग तीन दर्जन कहानियाँ विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित, एक पारिवारिक उपन्यास शीघ्र ही प्रकाशित होगा ।

सम्पादकीय ज्ञान :—कुछ दिनों तक 'चिन्गारी' में 'महिला मन्दिर' नामक स्तम्भ का सम्पादन किया था । अनुभव कोई विशेष नहीं ।

सार्वजनिक :—सार्वजनिक जीवन में प्रगति करना चाहकर भी नहीं कर पाती । पारिवारिक उलझनें बाधक सिद्ध होती है ।

भावी योजनाएँ :—साहित्य के प्राय: सभी अंगों में रस मिलता है । भावी साहित्यिक योजनाएं अनिश्चित हैं । हाँ, कथा-साहित्य में भारतीय परिवार का विशेष चित्रण कर सकूँ इसके लिए सचेष्ट रहती हूँ ।

स्थायी पता :—C/o मधुर, बी० ६/१ फ़ीलखाना, वाराणसी ।

श्रीमती देवव्रती शर्मा

जन्म स्थान व तिथि :—पलवल जिला गुड़गावां, १ मार्च १९२१

नाम पिता का—श्री शिवचरण शर्मा ।

कविता करने की तिथि :—३१ जनवरी १९४८ ई०, बापू का स्वर्ग-वास का दिन ही मेरी कविता का जन्म दिन है, उससे पूर्व भी मैं कुछ गीत लिख लेती थी ।

लिखने की प्रेरणा :—(१) पद्य साहित्य में अधिक रुचि का होना ।

(२) दादा के द्वारा भक्ति साहित्य में रुचि पैदा करना ।

(३) मेरे दादा की और मेरी साथिन कुमारी कमलेश सक्सेना की साहित्यिक प्रवृत्ति से प्रेरणा प्राप्त हुई !

परिवार की साहित्यिक निधियां—मेरे बाबा पंडित रामनारायण जो कि संस्कृत साहित्य और हिन्दी के विशेष प्रेमी थे ।

(२) इधर मेरे पतिदेव श्री प्यारेलाल शर्मा को उर्दू और पारशियन साहित्य के बड़े प्रेमी है ।

रचनायें :—मेरा अभी तक कोई संग्रह नहीं निकला है । परन्तु दो कहानी संग्रह पूर्णतया तैयार है । मुझे बाल साहित्य में भी बड़ी रुचि है । उसकी दो पुस्तकें, एशियाई बच्चे और पांच बाल एकांकी आत्मस पब्लिशर के यहां गये हुये हैं ।

अध्यापन कार्य के साथ-साथ मेरा मुख्य कार्य साहित्य और समाज की सेवा करना भी है ।

पता :—म्युनिसिपल बालिका विद्यालय, सीताराम बाजार, दिल्ली ।

श्रीमती पद्मा रानी वैश्य

जन्म स्थान व तिथि :—मेरठ, १९१६ ।

शिक्षा :—रघुनाथ गर्ल्स स्कूल में पढ़ी, विवाह होते ही स्कूल छोड़ दिया । घर पर ही पढ़ती रही । परीक्षा देने का झंझट नहीं किया । सब बच्चों की पढ़ाई का प्रबन्ध दसवीं तक घर पर ही किया है । प्राइवेट ट्यूटर रखने के बहुत खिलाफ हूं । एक पुत्री, चार पुत्र ।

प्रेरणा प्रदायक वातावरण :—घर का वातावरण, अच्छा पुस्तकालय ।

निर्दिष्ट दिशा :—गृह-विज्ञान, स्वास्थ्य, और प्राकृतिक चिकित्सा ।

रचनाएं प्रकाशित :—

सरल गृह विज्ञान (राजस्थान में कक्षा ६ में छात्राओं की शालाओं में पढ़ाया जाता है) सफल-गृह विज्ञान, राष्ट्रीय-गीतमाला, हमारा राष्ट्रीय गीत, कालीचरन का हार्दिक प्रेम (एकांकी), घर कैसे हों ? (एकांकी), मोन्टेसरी शिक्षा पद्धति ।

सार्वजनिक जीवन :—बीकानेर में महिला जागृति परिषद में सक्रिय भाग लिया । काफी समय तक उसकी मन्त्री रही ।

भावी साहित्यिक योजनाएं :—(१) परिवार नियोजन पर एक सरल पुस्तक ।

(२) 'बिना डांटे' 'बिना पीटे' बच्चों का लालन पालन कैसे करें ?

(३) बच्चों को क्या खिलावें और कैसे ? ये तीन पुस्तकें लिखना चाहती हूं ।

पता :—द्वारा श्री जे० डी० वैश्य, इन्स्पैक्टर आफ स्कूल्स, उदयपुर (राजस्थान) ।

कुमारी पुष्पा सक्सेना

जन्म स्थान तिथि :—कानपुर में दीपावली के दिन १८ अक्तूबर १९३२।

शिक्षा :—एम० ए० (आगरा विश्वविद्यालय) साहित्य रत्न, (हिन्दी साहित्य सम्मेलन) सरस्वती (प्रयाग विद्यापीठ) एल० टी०।

वातावरण व परिवार :—पिता जी ऊँचे पद पर अफसर रहे हैं, पढ़ाई, लिखाई में उनकी बहुत रुचि रही। पिता जी व माँ के उच्च विचारों से परिवार का वातावरण बहुत सांस्कृतिक रहा। इसी वातावरण में हम सब की शिक्षा दीक्षा हुई और इसका प्रभाव भी पड़ा। कविता में मुझे रुचि बचपन से ही बहुत थी और मन की यह मधुर कल्पना तब साकार हो उठी जब मेरी भावनाओं का मौन गीतरूप में मुखरित हो उठा।

रुचि :—साहित्य के सभी अंगों में रही है पर विशेष कविता में।

रचनाएँ :—प्रायः सभी प्रमुख पत्र पत्रिकाओं में मेरी कविताएँ व लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

पिछले पाँच वर्ष से आकाशवाणी लखनऊ केन्द्र से अनेकानेक कवि सम्मेलनों में भाग ले चुकी हूँ—एवं कविताएँ भी प्रसारित हो चुकी हैं। 'कम्पन' (कविता संग्रह) शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है।

सम्पादकीय ज्ञान :—कुछ पत्रिकाओं के सम्पादक-मण्डल में भी रह चुकी हूँ।

पता :—११२/३६२ स्वरूपनगर, कानपुर।

कुमारी प्रभारानी

मेरा जन्म २१ मार्च १९३६ को मेरठ में एक सम्पन्न राजपूत परिवार में हुआ था। हमारे परिवार में पाँच सदस्य हैं माता, पिता, मैं तथा मुझसे छोटे दो भाई। मेरे पिता जी वकील हैं मेरे दादा, दादी भी अभी जीवित हैं। हम यहाँ संयुक्त परिवार में दादा, दादी, ताऊ जी आदि के परिवार के साथ रहते हैं।

संयुक्त परिवार में रहने के कारण तथा दादा दादी के जीवित होने के कारण मेरी स्कूली शिक्षा प्रायः नहीं हुई। और जो हुई भी वह घर पर ही हुई क्योंकि परिवार में प्रायः सभी सदस्य रूढ़िवादी पुराने विचारों को मानने वाले हैं परन्तु मेरे माता-पिता आधुनिक विचारों के हैं अतः उन्होंने ही मेरी शिक्षा की ओर ध्यान दिया। उच्च शिक्षा पाने की तीव्र लालसा ने मुझे रूढ़ियों को तोड़ने एवं बड़ों की आज्ञा का उल्लंघन करने को विवश किया। सबके विरोध के बावजूद भी मैंने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए कालिज में प्रवेश ले लिया। अपनी इसी आकांक्षा के लिए सबके विरोध से संघर्ष करते हुए मैं आज विश्व-विद्यालय की उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सफल हुई। एम० ए० फाइनल में अर्थशास्त्र का अध्ययन कर रही हूं। अपने इस संघर्ष में मुझे बस माता-पिता का सहयोग मिला है, और मिल रहा है।

मुझे साहित्य, अर्थशास्त्र एवं राजनीति में बहुत रुचि है। साथ ही गृहकार्यों आदि में भी रुचि रखती हूं। अध्ययन से बचे हुए समय में कुछ लिखने का प्रयास करती हूं। साहित्य सेवा की ओर प्रेरित करने वाला मुझे कोई खास वातावरण नहीं मिला क्योंकि परिवार की साहित्यिक निधि कोई भी नहीं है। इस ओर प्रेरित करने वाला बस एक ही कारण है। और वह है बचपन में स्कूल न जाने के कारण घर पर हर

समय पढ़ते ही रहना। सभी भाई-अपने दोनों भाई व ताऊ जी के लड़के भी-स्कूल व दफ्तर चले जाते थे अतः मुझे घर पर अकेले दिन काटना दूभर रहता था। इससे छुटकारा पाने के लिए मैं जहाँ तहाँ से कहानियों की पुस्तकें उपन्यास, पत्र-पत्रिकायें आदि एकत्रित करके पढ़ती रहती थी। इस समय में मैंने बहुत सी कहानियाँ एवं उपन्यास पढ़े। इसी से मुझे साहित्य से प्रेम हो गया। मुझे केवल हिन्दी साहित्य से ही प्रेम नहीं है वरन विदेशी एवं भारत की अन्य प्रान्तीय भाषाओं से भी प्रेम है। इसीलिए मैं जहाँ तक हो सकता है और जितना भी विदेशी तथा अन्य भाषाओं का साहित्य मिल पाता है, खोज खोज कर पढ़ती हूं। आरम्भिक दिनों में मुझे कई लेखकों ने प्रभावित किया उनमें से उल्लेखनीय—प्रेमचन्द, भगवती चरण वर्मा, जयशंकर प्रसाद, वृन्दावन-लाल वर्मा, आचार्य चतुरसेन, रवीन्द्रनाथ, शरतचन्द्र, बंकिमचन्द्र, जैनेन्द्र कुमार आदि। इन साहित्यकरों की मैं काफी सारी रचनाएँ पढ़ चुकी हूँ। अब जब मेरी साहित्यिक रुचि की सीमाएँ बढ़ गई हैं तो उसमें मुझे रूसी साहित्य ने अधिक प्रभावित किया है। यद्यपि अन्य देशों का भी थोड़ा सा साहित्य पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। परन्तु अभी विदेशी एवं अन्य प्रान्तीय साहित्य का ज्ञान बहुत ही थोड़ा है। मैं इसे और अधिक विस्तृत करना चाहती हूँ।

उत्कट साहित्य प्रेम के कारण ही आज मैं अध्ययन के पश्चात साहित्य सेवा करना चाहती हूँ। यद्यपि मुझे साहित्य के सभी अंगों से कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी आदि से प्रेम है परन्तु तो भी मैं कहानी एवं उपन्यास में विशेष रुचि रखती हूँ। साहित्य की इसी दिशा में कार्य करना चाहती हूँ। कालिज के अध्ययन से समय बचता है; उसमें अधिकांशतः कहानी ही लिखती हूँ। अभी तक मेरा कहानी-संग्रह तो नहीं छपा है। अभी इतनी कहानियाँ नहीं लिखी है जिनसे संग्रह बन सके। हाँ जो लिखी है वे समय-समय पर कालिज, पत्रिका, भारतवासी, विश्वज्योति, युग-पथ, वीर गुजरे तथा अमर ज्योति आदि

में प्रकाशित होती रहती हैं। मेरी निम्न कहानियां प्रकाशित हो चुकी हैं :—ऊँचा नीचा, पतंगा, निरर्थक कहानी, कन्या जन्म, सौन्दर्य का मूल्य कम्बखत।

अप्रकाशित :—किसके प्रति, निमन्त्रण, प्रेम, हत्यारा कौन !

मैं अपनी कहानियों में शोषित, निर्धन, पद्दलित एवं दुखी व्यक्तियों का ही चित्रण करने का प्रयत्न करती हूँ। मुझे इनसे बहुत सहानुभूति है। इनके दुःखों को पाठकों तक पहुँचाना चाहती हूं जिससे वे इनकी ओर देखें, इनके दुःखों को समझे और उनके निवारण के प्रयत्न में सहयोग दें।

सम्पादकीय ज्ञान व अनुभव मुझे नहीं है क्योंकि अभी तक ऐसा कोई मौका ही नहीं आया है। हाँ, एक बार कालिज पत्रिका में सम्पादकीय विभाग में अवश्य हुई थी। परन्तु उसमें कोई विशेष अनुभव नहीं हुआ ! सार्वजनिक जीवन में मैं बहुत रुचि रखती हूँ परन्तु अध्ययन के कारण इसमें अधिक भाग नहीं लेती। हाँ अध्ययन के पश्चात इस दिशा में भी कार्य करने की आकांक्षा है। अतः अध्ययन समाप्त होने पर ही इस दिशा में सामर्थ्यानुसार कार्य करूंगी।

साहित्यिक अनुभव विशेष नहीं है। जो कुछ है ऊपर बता चुकी हूँ। भावी योजनाएँ भी अभी तक कुछ नहीं है। मैं प्रगतिशील विचारधारा की हूँ। जाति-पाँति, ऊँच-नीच लिंग के भेद-भाव आदि में बिश्वास नहीं करती, रुढ़िरिवाजों का बन्धन नहीं मानती। अपने इन्हीं विचारों को अपनी कहानियों द्वारा प्रसारित करके वर्तमान समाज के दूषित नियमों को बदलने का तथा शोषित दुखित पद्दलित लोगों के जीवन में सुख का संचार करने का प्रयत्न करूंगी। अगर मैं अपने इस वर्तमान दूषित समाज में से जिसमें शोषण, धोखा, रिश्वत, दहेज आदि जहरीले कीड़े घुसे हुए हैं इन बुराइयों को दूर करने में कुछ भी सफल हुई तो अपने को धन्य समझूँगी। यही मेरी भावी योजना व उद्देश्य है।

पता :—४०३ देहली रोड, मेरठ।

सुश्री प्रिया कपूर

मेरा जन्म कराची में सन् १९३४ में हुआ था और १९५० में मैंने लखनऊ विश्वविद्यालय से एम० ए० इतिहास में पास किया।

साहित्य की ओर प्रेरित करने वाला वातावरण कुछ नहीं मिला। यह तो केवल आंतरिक प्रेरणा है। और न हीं अब तक परिवार में कोई साहित्यिक विभूतियां ही हुई हैं।

मेरी अभिरुचि बहुमुखी ही है—साहित्य और इतिहास की ओर, संगीतकला इत्यादि।

मेरी रचनाएँ केवल कहानियां ही हैं। इनमें से कुछ आकाशवाणी दिल्ली से प्रसारित भी हो चुकी हैं। रचनाएँ ये हैं :—

आंखें और तिल, सुबह का भूला, जिन्दगी के मोड़, सेल्समैन, कबूतरी के बच्चे, कहानी नहीं समस्या, छाते की छांह में, हम-सफर, कहानी का थीम, सफेद चप्पल, मिट्टी के घाट, प्राचीन भारतीय कला में बुद्ध पूजा के आधार (लेख)।

यों तो भावी साहित्यिक योजनाएँ कुछ भी नहीं—किन्तु कहानी कला का विकास करने एवं एक प्रसिद्ध कहानी लेखिका बनने की इच्छा बलवती है!

पता :—९/१२ ईस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली—१२.

श्रीमती प्रेम ज्योतिसेन

मेरा जन्म बुलन्दशहर के जनाने हस्पताल में आज से लगभग ३० वर्ष पूर्व हुआ था। मेरे पिता जी श्री दुर्गाप्रसाद जी अनूपशहर के सुप्रसिद्ध समाजसेवी हैं और वहाँ उन्होंने लक्ष्मण-प्रसाद डी० ए० वी० कालिज की स्थापना की तथा अनेक अन्य संस्थाओं का संचालन किया है और वे म्युनिसिपल चैयरमैन भी रहे हैं। वे हिन्दी, संस्कृत, फारसी, उर्दू और अंग्रेजी के प्रकाण्ड विद्वान हैं।

मेरे जीवन को हिला डालने वाली घटना थीं पांच साल की उम्र में हमारी माताजी श्रीमती लीलावती जी का देहान्त। वे स्वयं एक अति विदुषी महिला थीं और मोह, ममता, दया, पवित्रता धार्मिकता तथा सत्य की तो वे मानों अवतार ही थीं। उनके दो एक चित्र स्मृतिपटल पर अँकित है। वे अक्सर बीमार रहा करती थी। और मुझे लेटे लेटे ही पढ़ाया करती थीं। उन्होंने मेरी सबसे बड़ी बहिन (श्रीमती शांता जी) को संस्कृत साहित्य एवं आयुर्वेद की पूर्ण शिक्षा दी थी और वे चाहती थीं कि मै अंग्रेजी का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करूँ। अपनी मृत्यु से पूर्व पांच वर्ष की अवस्था में ही वे मुझे चारपाई में लेटी-लेटी अच्छी-अच्छी कहानियाँ और कविताएँ सुनाया करती थीं। उनकी अन्तिम स्मृतियों में से एक वह सर्वोपरि है जब रुग्ण होते हुए भी वे सन् १९३० में खद्दर की साड़ी पहिने तिरंगा झण्डा हाथ में लिए एक बड़े जुलूस के आगे आगे चली जा रही थीं। आगे जाकर जुलूस सभा की शक्ल में बदल गया। और उन्होंने वहाँ पुलिस की हाजरी में ही जो भाषण दिया वह उनकी निर्भीकता और देशप्रेम का द्योतक था। उन्होंने स्वयं अपने हाथ से बहुत से विदेशी कपड़ों की होली जला दी। मैं भौंचक्की

सी देखती रही लेकिन अगले दिन हमारे पिता जी ने इस सब का अर्थ समझाया।

माँ के अनेक चित्र स्मृतिपटल पर अंकित हैं उन्हीं सब ने मुझे शब्द चित्र बनाने में सफलता प्रदान की है। बचपन से ही जो निराशा, और उदासी मुझमें भर गई उसके परिणाम स्वरूप ही मेरे अन्तर के विद्रोह से शब्द फूट निकले हैं और यही मेरी कविता बन गई हैं। रुग्णावस्था में माँ का हस्पताल दूर शहर में ले जाया जाना, एक पखवाड़े तक हम नन्हें-मुन्ने भाई भाई बहनो का दूर रिश्ते की एक नानी के पास रहना, हम भोले-भाले, आदर्शवादी और कम बोलने वाले भाई-बहनों का अपने बुड्ढे नौकर—दुल्ली और रेवती से था उन्हीं नानी से यह पूछना—नानी, माँ और पिता जी कब तक आवेंगे ? और चिट्ठी आशाजनक आने पर उनका उत्तर "जल्दी से जल्दी ठीक होकर" तथा हमारा नित्य प्रति अपने नन्हें नन्हें हाथों को जोड़ कर नन्हीं-नन्हीं आँखें मूंद कर भगवान से माँ को ठीक कर देने की प्रार्थना करना तथा इस ड्रामा के अन्त में सब को झकझोरने वाली घटना का होना। कई दिन तक माँ का कोई समाचार नहीं आया। हाँ और एक दिन अनायास सब वापस आए और साथ में आई माँ नहीं—उनकी लाश !

सब रो रहे थे, सब उदास थे, हम सहमें-सहमें थे। मामा की आँखों से भी जिन्होंने आज मुझे कन्धे पर चढ़ा रखा था टप-टप आँसू बह रहे थे। हम सब हक्के-बक्के थे कि क्या बात है। और तब मैंने पाँच वर्ष की निरीह बच्चे ने माँ का अन्तिम दर्शन किया-लाल कपड़े में लिपटा उनका सौम्य शरीर, बन्द आँखें लेकिन तब भी चेहरे पर प्राप्त शान्त आभा ! ऐसा मालूम पड़ता था कि किसी निरीह लम्बी यात्रा से आकर माँ सो गई ! हाँ-हाँ माँ सो गई, माँ सो गई, और सदैव के लिए सो गई ! चारों ओर अजीब भय, विषाद और आतंक का सा वातावरण था। मुझे याद है उसी क्षण की एक घटना। लोग जब मुझे

दूसरी ओर हटाकर उनके शव से दूर ले जाने लगे तो मैं चिल्लाई लेकिन आज जब पीछे मुड़कर देखती हूँ तो ज्ञात होता है कि बहुमत के विरोध में भी मेरे पिता जी ने मुझे उस समय मेरी माँ के पास लाकर खड़ा कर दिया, वह उन्होंने सबसे अधिक समझदारी कर कार्य किया था।

इस प्रकार मेरी माँ—मेरी स्वप्नों की साझीदार, मेरी योजनाओं की सलाहकार और मेरी बाल-हठों की पूरक मेरी माँ—सदैव के लिए मुझे भावुक बनाकर छोड़ गई। उन्हीं का मेरे विचारों और मेरे जीवन पर अत्यन्त गहरा प्रभाव है।

मेरे जीवन पर अनेक व्यक्तियों का प्रभाव पड़ा है। मेरी बहिन श्रीमती शान्ता जी भी आज संसार में नहीं है दूसरी बहिन मनोरमा जी भी महाप्रयाण कर चुकी हैं। हम अपने में अब दो बहिन और तीन भाई हैं। भाइयों में तीनों ही सुपठित एवं विद्वान हैं। श्री डाक्टर ओ३म् प्रकाश जी गुप्त एम० ए० पी० एच० डी० मेरे सबसे बड़े भाई ने मेरी साहित्यिक रूप-रेखाओं के निर्माण में काफी योग दान दिया है। सबसे छोटा भाई बुद्धि-प्रकाश गोयल है। वह भी साहित्यिक रचनाएं करता है—कविताएँ एवं कहानियाँ। लेकिन सबसेअधिक प्रभाव मुझ पर मेरे पतिदेव श्री कान्तिचन्द्र सेन का है जो डिस्ट्रिक्ट पब्लिक रिलेशन्स आफिसरके व्यस्त जीवनके रहते हुए भी सदा साहित्य की ओर झुके रहे हैं। उनके अनेक लेख छपे हैं और भाषण तोवे रोज ही देते हैं। सेन ने मुझे क्या कुछ नही दिया। उन्होंने मुझे यह साहस संबल और प्रोत्साहन प्रदान किया है कि मैं साहित्योपार्जन करसकूँ। दूसरे सेन के चाचा जी श्री रुद्रसेन जी का जो स्कॉलर थे मुझ पर बड़ा भारी प्रभाब पड़ा है। पिता जी ने तो मिल्टन, और शेक्सपीयर और प्रसाद को मेरे अन्तस में ऐसा कूट-कूट कर भरा है कि वे आज भी मेरे मानस से नहीं निकल पाते !

शादी के बाद मुझे सार्वजनिक क्षेत्र में काम करने का बहुत अवसर मिला है। किशनप्रसाद आर्य कन्या महाविद्यालय (गर्ल्स डिग्री कालिज) अम्बाला की वर्किंग कमेटीकी ज्वाइंट सैक्रेटरी की हैसियतसे कोई एक साल

किया है। उस दौरान में शिक्षित महिला सम्प्रदाय और साहित्यिक वातावरण के सम्पर्क में आने से साहित्य को पुनः प्रोत्साहन मिला। उसके उपरान्त राजपुरा शरणार्थी शिविर में लग गयी। दो वर्ष तक नई तालीम शिक्षा केन्द्र में काम किया। उस अरसे में भी मुझे अध्ययन का अवसर मिला। नई तालीम प्रशिक्षण की ट्रेनिंग प्राप्त की। शरणार्थी बच्चों को नहलाने-धुलाने और बुनियादी शिक्षा प्रणाली से पढ़ाने में भी मुझे बहुत चाव आता था। राजपुरा में बुनियादी शिक्षा चालू होने के उन वर्षों में मैं श्री आर्य नायकम्, श्रीमती आशा देवी जी व राधाकृष्ण जी के सम्पर्क में आई और उनका मुझ पर प्रभाव पड़ा। किन्तु सबसे अधिक प्रभाव मुझ पर पड़ा—बीबी अमतुस्सलाम का। सेन को, मुझे और मेरे बच्चों को अपने बीबी बच्चों की तरह ही स्नेह करती हैं। मेरी बच्ची को उनसे उपहारस्वरूप मिला बापू का एक चमचा उनकी दी हुई मेरे लिए एक खादी की साड़ी और सेन को मिली एक गाँधी टोपी। मेरे पुत्र के जन्म पर बीबी जी का मिला प्रेमोपहार मेरे जीवन की उस स्थिति की अमिट निशानियों में से एक है उन दिनों हमारा जीवन विन्यास पूरी तरह से सेवा ग्राम पद्धति पर ढाला जा चुका था वही वातावरण, वही प्रशासन तथा वही अनुशासन।

उसी बीच जो शिक्षकवर्ग वहाँ आए थे मुझे उनकी संस्कृति-मन्त्री भी बनाया गया था। मीटिंग, ड्रामा तथा अन्य सांस्कृतिक कार्य-क्रमों का आयोजन करना मेरा ही दायित्व था। वहीं मैंने अपनी कविताएँ और लेखों को अनेक सांस्कृतिक सम्मेलनों में सुनाया था।

मेरी विशेष अभिरुचि कविता, लेख, संस्मरण और बाल साहित्य में है।

मेरे दिमाग में यह आ रहा है कि हम सब लेखिकाएँ मिलकर ऐसी योजना बनावें जिससे कि देश का वास्तविक कल्याण हो और नारी जाति अपने दुर्गुणों को छोड़ सकें।

पता :—श्रीमती प्रेमज्योति सेन द्वारा श्री के० सी० सेन डिस्ट्रिक्ट पब्लिक रिलेशन्स आफ़िसर (पंजाब सरकार) पटियाला।

सुश्री प्रेमलता 'दीप'

जन्म स्थान व तिथि :—हरिद्वार १९२५।

शिक्षा व साहित्यिक वातावरण :—एम० ए० बी० टी०, प्रभाकर परिवार के सभी सदस्य शिक्षित हैं। कविता और कहानी लेखन की ओर बहन भाइयों का झुकाव था। थोड़ी बहुत ख्याति सब ने पाई। बहन की एक पुस्तक प्रकाशित भी हुई "कल और आज"। पिता जी ने एक चिकित्सा सम्बन्धी लिखी।

विशेष अभिरुचि :—व्यंग्य लेख व हास्य कथायें—वैसे समीक्षायें भी की। वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक आदि सभी विषयों में रुचि है।

रचनायें :—एक हज़ार के लगभग लेख प्रकाशित हैं। श्रेष्ठ हास्य-कथाओं में एक कहानी भी प्रकाशित हुई है। रेडियो रूपक लगभग पचास की मात्रा में प्रसारित हो चुके हैं। पत्र-पत्रिकायें जिनमें रचनायें प्रकाशित हुई—आजकल, धर्मयुग, हिंदुस्तान, समाज, आज, भारत, अमर ज्योति, वसुधा, वासन्ती, सुप्रभात, नवभारत टाइम्स आदि।

सम्पादकीय ज्ञान :—कालिज में संस्था के पत्र का सम्पादन करती थी। उसके बाद धर्मयुग में एक वर्ष के लगभग उप-सम्पादिका का काम किया।

सार्वजनिक जीवन :—समाज सुधार का कई वर्ष तक काम किया। इसके अन्तर्गत नौकरों को पढ़ाया और उनका इलाज आदि करवाया।

अन्य प्रवृत्तियाँ :—चार वर्ष का चित्रकला में कोर्स किया। पांच वर्ष तक अध्यापन कार्य किया जिसमें दो वर्ष तक मुख्याध्यापिका रही। पत्रकारिता पांच वर्ष से कर रही हूँ।

भावी योजनायें :—हास्य कथाओं का एक संग्रह व एक उपन्यास निकट भविष्य से निकल रहा है !

पता :—हिन्दी विभाग, आकाशवाणी बम्बई।

कुमारी प्रेमलता द्विवेदी

जन्म—सन् १६२६ में कानपु जिले के बीबीपुर नामक ग्राम के जमींदार परिवार में हुआ !

शिक्षा—आगरा विश्व विद्यालय से एम० ए० और प्रयाग महिला विद्यापीठ से 'सरस्वती'।

वातावरण—साहित्य की ओर प्रेरित करने वाला कोई विशेष वातावरण मुझे मिला हो ऐसी बात नहीं; साहित्य जैसे मेरे जीवन में में पहिले से ही प्रविष्ट था जब मैं छोटी थी और रात में जल्दी सोने से इन्कार करके खूब शोर करके घर भर की नींद हराम करा देती थीं तब माँ मुझे सुलाने के लिए कहानियों का प्रयोग किया करती थी बड़े होने पर सुनने का शौक पढ़ने ने ले लिया। मेरे पिता पं० रामेश्वर दयाल द्विवेदी अधिकांश जमींदारों के समान ही बहुत कम पढ़े हैं फिर भी उन्हें पढ़ने का शौक बहुत था और मेरे लिए पुस्तकें खरीदने में उन्होंने कभी संकोच नहीं किया। मुझे अच्छी तरह याद है जब मैं सातवीं या आठवीं कक्षा में उत्तीर्ण हुई तो उन्होंने मुझे प्रेमचन्द जी की पुस्तकों का सैट लाकर दिया था। इस प्रकार पढ़ने की ओर मेरी रुचि बढ़ती गई किन्तु लिखने की कल्पना मैंने नहीं की था, यहाँ तक कि स्कूल की मैगजीन में भी मेरा नाम कभी नहीं आया। लिखने के लिए प्रेरणा व उत्साह मुझे श्री इलाचन्द्र जी जोशी से मिली। तब मैं शायद इण्टर में पढ़ती। एक बार पिता जी के साथ इलाहाबाद जाने का अवसर आया। उन्हीं दिनों मैंने उनका उपन्यास 'सन्यासी' पढ़ा था। उसकी याद मस्तिष्क में ताजी थी। इलाहाबाद पहुँचते ही मैं अपनी इच्छा को रोक नहीं सकी। वे उन दिनों इलाहाबाद से निकलने

वाले 'संगम' (साप्ताहिक) का सम्पादन करते थे।

हमारी यह भेंट भी अपने ढंग की निराली ही थी। किसी भी साहित्यकार से मिलने का मेरा यह पहला ही मौका था मैं पहुंच तो गई किन्तु संकोच के कारण बातचीत करना प्राय: असम्भव सा ही हां। उठा और बोलने का काम जोशी जी को ही करना पड़ा। उस विचित्र परिस्थिति को याद करके आज इतने दिनों बाद भी हँसी फूट पड़ती है। इसी अवसर पर जोशी जी ने कहा था कि मुझे लिखना चाहिए। पता नहीं यह उन्होंने ऐसे ही कह दिया था अथवा कुछ सोचकर कहा था पर यह वाक्य मुझे वहाँ से लौटकर भी याद रहा और पूरे पाँच दिन जुट कर मैंने एक लेख लिख ही डाला और जोशी जी के पास भेज दिया। इस प्रकार 'संगम' में मेरा पहिला लेख प्रकाशित हुआ जिसने मेरी दिशा मोड़ दी।

परिवार की साहित्यिक निधियाँ तथा साहित्यिक वातावरण :—गाँव के अधिकाँश घरों की तरह ही हमारे परिवार में साहित्य की ओर किसी की अभिरुचि न थी। पिता जी को यद्यपि पढ़ने का शौक है पर उनके पास समय बहुत कम है। उनका सारा समय जमींदारी से सम्बन्धित मुकदमों और गाँव के झगड़ों को निबटाने में ही बीत जाता था। माँ की शिक्षा तो रामायण, महाभारत पढ़ लेने तथा पत्रादि लिख लेने तक ही सीमित है। प्रति दिन सन्ध्या समय हमारे यहाँ नियम पूर्वक रामायण का पाठ होता है पर आज धार्मिक भावना अधिक रहती है।

विशेष रुचि :—बचपन से ही मेरी रुचि गद्य की ओर अधिक रही है। आरम्भ के दिनों में ऐसा याद पड़ता है मैंने एक दो कविताएँ भी रची थीं पर अब तो उनकी पूरी तरह याद भी नहीं है। मेरी अपनी धारणा है कि साहित्य का वास्तविक सौंदर्य गद्य में है पद्य में नहीं। विचारों की अधिक अच्छी अभिव्यक्ति गद्य में हो सकती है। गद्य में भी कहानी-लेखन मेरी विशेष रुचि है।

रचनाएं :—मेरी अधिकतर रचनाएँ साप्ताहिक हिन्दुस्तान, युग-

प्रबोध, नई सुबह निर्झर, और सरस्वती आदि पत्र-पत्रिकाओं में छपती रही हैं। इस समय मैं "साहित्यकारों की पत्नियाँ" शीर्षक व अन्तर्गत कुछ इन्टरव्यू एकत्रित कर रहीं हूँ जिन्हें मैं पुस्तकाकार प्रकाशित करूंगी।

सम्पादकीय ज्ञान व अनुभव :—कुछ दिनों तक एक पाक्षिक 'भारत-वर्ष' का सम्पादन किया किन्तु आर्थिक कठिनाइयों के कारण पत्र बन्द हो गया।

सार्वजनिक जीवन :—बहुत अधिक मिलने जुलने की मेरी आदत नहीं है। बचपन से ही मैं एकान्त प्रिय स्वभाव की हूँ। एकान्त के अरसे में भी कुछ पढ़ना अथवा सोचते रहना मेरी आदत बन गई है। सार्व-जनिक कार्यों में कम भाग लेती हूँ।

श्रीमती विमला लूथरा

जन्म स्थान व तिथि :—लाहौर २१ अगस्त १९१६।

शिक्षा :—१९३७ में पंजाब यूनिवर्सिटी (गवर्नमैन्ट कालिज लाहौर) से राजनैतिक शास्त्र (पोलिटिकल सायन्स) में एम० ए० पास किया। प्रथम क्लास में उत्तीर्ण हुई और यूनिवर्सिटी में प्रथम पद प्राप्त किया जिसके उपलक्ष में स्वर्ण-पदक भी मिला।

साहित्य सेवा के लिए प्रेरित करने वाला वातावरण :—एम० ए० पास करने के पश्चात पांच साल तक लाहौर के एक महिला कालिज में पढ़ाती रही। १९४३ में विवाह हो जाने पर लाहौर छोड़ कर दिल्ली आना पड़ा। इतने वर्षों तक पढ़ने लिखने में व्यस्त रहने के बाद घर में अकेले बैठना कुछ जंचा नहीं। घर में अकेले रहने से अवकाश बहुत था। और पति आॅल इण्डिया रेडियो में काम करते थे, इसलिए साहित्यिक लोगों का आना जाना भी रहता था। अतः मैंने भी सोचा कि इस ओर ध्यान दूं। कुछ समय का उपयोग होगा और कुछ घर में बैठे-बैठे पैसे कमा सकूंगी। लड़ाई का ज़माना था, महंगाई जबरदस्त और आवश्यकताएं बहुत—और फिर अपने परिश्रम से जो पैसे कमाए जावें उनका अपना ही स्वाद होता है। इन्हीं सब बातों से प्रेरित होकर मैंने लिखना प्रारम्भ किया "पहिले दो तीन वर्ष तक केवल अंग्रेजी में ही लिखती रही—बहुधा कलकत्ते की एक साप्ताहिक पत्रिका—" ओरियेन्ट इलस्ट्रेटड वीकली" के लिए। उसके अतिरिक्त दिल्ली की "कारवान" और साप्ताहिक 'इलस्ट्रेड वीकली' में भी मेरी रचनाएँ जब तब प्रकाशित होती। जब देश आजाद हुआ और हिन्दी को राष्ट्र भाषा का पद मिला तो मैंने भी इस ओर अधिक ध्यान देना शुरु किया।

इसका बहुत सा श्रेय 'सरिता' के सम्पादक हैं जिन्होंने अपने प्रोत्साहन से मेरी हिम्मत बधाई।

परिवार की साहित्यिक निधियाँ :—मैं एक ऐसे मध्यवर्गीय परिवार में पैदा हुई और पली जो साहित्य सेवा का दावा नहीं कर सकता। केवल एक ही बात महत्वपूर्ण साबित हुई—वह है मेरे पति की पढ़ने-लिखने की ओर रुचि क्योंकि रेडियो में काम करने के कारण उन्हें बहुत से लोगों की रचनाओं को काटने छाटने का अवसर मिलता रहता है। इसलिए मुझे भी जैसे घर में ही अपनी रचनाओं का एक कड़ा आलोचक मिल गया है।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें विशेष अभिरुचि :—नाटकों की ओर मेरी विशेष प्रवृत्ति है, हालांकि महिलाओं की समस्याओं के बारे में भी लिखती रहती हूँ। बच्चों के लिए भी नाटक और कहानियाँ मैंने लिखी हैं।

मेरा लिखने का उद्देश्य बड़ा सरल है। मैं उच्चकोटि के साहित्यिकों में अपनी गणना न ही करती और न ही उनमें से हूं जो समाज-सुधार के उद्देश्य से लिखते हैं। मैं लिखती हूं एक ही विचार से—अपना भी मन बहलाऊँ और पाठकों का भी। इसलिए भाषा भी बोलचाल की ही प्रयोग करने का प्रयत्न करती हूँ।

रचनायें (क्रम से)—मेरे एकांकी नाटकों का एक संग्रह भारतीय ज्ञानपीठ बनारस वाले प्रकाशित कर रहे हैं। और बालकों के खेलने के नाटक "बाल नाट्य-ग्रंथमाला" हिंदी प्रचारक पुस्तकालय बनारस वाले छाप रहे हैं। ये दोनों किताबें आजकल में ही छपने वाली हैं। दो किताबें और एक कहानियों की, और दूसरी नाटकों की (दोनों बच्चों के ही लिए) हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद (दक्षिण) ने छापी हैं।

सार्वजनिक जीवन :—पिछले चौदह वर्ष से देश विदेश घूमने का अवसर मिला है। हिन्दुस्तान में दिल्ली, लखनऊ, कलकत्ता, हैदराबाद इत्यादि कई जगह दो-दो, तीन-तीन वर्ष रहने का अवसर मिला है। गत वर्ष छः महीने तक योरुप का भ्रमण किया है। भाँति भाँति के लोगों से

परिचय हुआ है, जगह जगह के रहन-सहन और सामाजिक समस्याओं का अनुभव हुआ है और इनसे लिखने में भी प्रेरणा मिली है।

भावी साहित्यिक योजनायें :—तीन अंकों के पूरे नाटक लिखने का बहुत दिनों से विचार है परन्तु परिस्थितियाँ कुछ ऐसी रही हैं कि जम कर काम नहीं कर पाई। अब बच्चे बड़े हो रहे हैं और अन्य पारिवारिक जिम्मेदारियाँ कुछ पूर्ण हो रही हैं—तो सम्भव है कुछ कर सकूं।

पता :—कमल-विला, सोनवार बाग, श्रीनगर (कश्मीर)।

डाक्टर बुलबुल मित्रा (चौधरी)

जन्मस्थान :—जबलपुर।

शिक्षा :—एम० ए०, पी—एच० डी०

अभिरुचि :—गद्य काव्य।

रचनायें :—संगीत-प्रदीप कोर्स-बुक के रूप में सब स्थानों में पढ़ाई जाती है। होम-साइन्स की कई पुस्तकें हैं।

पता :—द्वारा श्रीमती उषामित्रा ११५ कोहारबाग, जबलपुर।

[सम्पादक पूज्या श्रीमती उषादेवी जी मित्रा का अत्यधिक आभारी है कि उन्होंने अपने खराब स्वास्थ्य के रहते हुए भी अपना और अपनी पुत्री डाक्टर बुलबुल मित्रा (चौधरी) का परिचय—१९५७ में भेजा था। श्रीमती बुलबु‌ल अपने पति मेजर चौधरी के साथ उस समय सीलोन जा रहीं थीं। अस्तु श्रीमती उषादेवी जी ने ही परिचय भेजा जिसके लिए सम्पादक विशेषरूपसे अनुगृहीत है।]

श्रीमती भगवती देवी शर्मा 'विह्वल'

जन्म स्थान :—होडल नाम का बड़ा कस्बा, मथुरा की ओर, जिला गुड़गांवा, उच्च ब्राह्मण कुल में जन्म। संवत् १६०६ मार्ग शीर्ष सुदी २ दूज +

शिक्षा :—साधारण (स्कूली)—मिडिल श्रेणी तक, विवाह पश्चात् स्वयं अध्ययन करके।

संस्कृत 'प्रथमा' हिन्दी में प्रयाग म० वि० पी० से विदुषी ऑनर्स।

प्रभाकर—पंजाब यूनीवर्सिटी से।

साहित्यरत्न—हिन्दी साहित्य सम्मेलन से।

वातावरण :—उच्च श्रेणियों का अध्यापन कार्य तथा प्रयाग महिला सेवा सदन में दो मास रह कर साहित्यरत्न की परीक्षा दी। वहां निराला, रामकुमार वर्मा, महादेवी आदि कवियों (अधिकतर महादेवी जी) के प्रभाव से साहित्यिक अभिरुचि को प्रोत्साहन मिला, इनकी अधिक कृतज्ञ हूँ।

परिवार की साहित्यिक विभूतियां :—पितृपरिवार में केवल पिता जी ही वेदान्त के प्रकांड पण्डित थे। रचना कोई नहीं। उनका स्वर्गवास हो गया। पति परिवार में पति के बड़े भाई (ज्येष्ठ) ने 'कर्म-प्रभा' नाम की एक पुस्तक लिखी जो साहित्यिक नहीं हैं। मनुष्य के स्वास्थ्य और स्वच्छता के लिए बहुत ही उपयोगी हैं (स्वर्गवासी है)

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें विशेष अभिरुचि है :—मेरी अधिक रुचि कविता में ही है, यों मैंने लेख तथा निबन्ध भी लिखे हैं जो बहुत

(+'आज के हिन्दी सेवी' से साभार)

पहले पत्रों में प्रकाशित हो चुके हैं। दो तीन एकांकी नाटक लिखे हैं जिनका (लक्ष्मी कन्या पाठशाला खारी बावली के वार्षिकोत्सव पर) सफल अभिनय भी हो चुका है। दुर्भाग्यवश पाठशाला के पुस्तकालय में संहस्रों रुपयों के पुस्तकों के साथ उन नाटकों को भी दीमक ने खा लिया।

रचनाएँ :—'भावना' नाम का कविता-सग्रह जो अभी अप्रकाशित है।

सम्पादकीय अनुभव :—किसी पत्र-पत्रिका का सम्पादन तो नहीं किया है पर इस बौद्धिक युग में काट छांट तथा सार-ग्रहण की विशेषता तो सब में ही होती है। सम्भवतः वह मुझमें भी हो।

सार्वजनिक जीवन :—सामाजिक नियमों का पालन करती हूं। यथा योग्य सब के साथ मिलकर रहती हूँ। कई संस्थाओं की सदस्या हूँ। और सनातन-धर्म-युवक मंडल के महिला-मंडल की प्रधान हूँ जिसमें 'हिन्दू-कोड-बिल' के विरोध में वर्षों काम किया। पार्लियामैंट के मुख्य सदस्यों और जवाहरलाल जी के निवास-स्थान पर डेप्युटेशन लेकर जाती रही। १९४८ में नेहरू जी इस बिल को तुरन्त समाज में लागू करना चाहते थे स्वयं नेहरू जी से उसे कुछ दिनों के लिए स्थगित कराया।

"छात्र-संघ" की उपप्रधान हूँ। छात्र-संघ की ओर से शिमला गवर्नर से मिल कर आई। इस प्रकार अपना सार्वजनिक जीवन व्यतीत कर रही हूँ। यथा शक्ति समाज सेवा करती रहती हूँ परन्तु समाज ने भी आवश्यकता से अधिक मानकर मुझे लज्जित किया है। रेडियो स्टेशन से 'सिलिप' आने पर १५-२० वर्ष से बोलती रही हूं। अतः मैं समाज की कृतज्ञ और ऋणी हूं।

पितृ परिवार में माता भाई आदि सब हैं। उधर पति हैं (जो अपने स्वभाव-वश प्रथक रहते हैं) दो पुत्र और दो पुत्रियां हैं।

देहली की महिलाओं में साहित्यिक अभिरुचि पैदा की। घरेलू परिस्थितियों के कारण साहित्य सेवा जैसी चाहती थी, नहीं कर पाई हूँ। यह सब विवाहोपरान्त ही हुआ है।

भावी योजनाएँ :—मनुष्य जीवन भावी योजनाओं पर ही

निर्भर है—वह क्या नहीं चाहता ? नित्य नई कल्पनाएँ करता रहता है परन्तु मेरे सम्मुख अभी गृहस्थ सम्बन्धी अनेक कार्य हैं और अनेकों को कर चुकी हूं। अतः अपनी भावी योजनाएँ अभी निश्चित नहीं कर पाई हूं। अब से पूर्व जो योजनाएं निर्मित कीं उनमें मुझे पूर्ण सफलता मिलती रही। ईश्वर की मेरे ऊपर विशेष कृपा रही है। वह मुझे नहीं भूलता। मैं उसे भूल जाती हूँ। आज तक मेरे कार्यों में ईश्वर के अतिरिक्त किसी ने तिनके का सहारा भी नहीं दिया।

पता :—३४६ हैदरकुली, चांदनी चौक, दिल्ली।

श्रीमती डी० मंजुलता

जन्म स्थान व तिथि :—दोण्डपाडु, गुडिवाड़ा तालूका, कृष्णा जिला आन्ध्र प्रदेश ।

शिक्षा एवं शिक्षण—विशारद पास करने के बाद दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की 'प्रवीण' व 'प्रचारक' परीक्षाओं का अध्ययन कर कुछ खंडों में उत्तीर्ण । कुछ समय के लिए अध्यापिका (हिन्दी) का काम किया ।

साहित्य सेवा :—मातृभाषा तेलगू, कुछ मौलिक कहानियाँ, कई तेलगू कहानियों का हिन्दी अनुवाद किया ।

अभिरुचि :—तेलगू लोक-गीतों का संकलन कर उनका हिन्दी में अनुवाद कर रही हूँ । हिन्दी में तेलगू साहित्य पर एक पुस्तक प्रकाशित करने की योजना बना रही हूँ ।

परिवार की अन्य साहित्यिक विभूतियाँ :—मेरे भाई हैं श्री अर्जुन राव—साहित्य-रत्न और प्रभाकर, जो दिल्ली में श्री के० डी० मालवीय, मिनिस्टर फॉर नेचुरल रिसोर्सेज एण्ड साइंटिफ़िक रिसर्च, के निजी सचिव हैं । उन्होंने मुझे हिन्दी भाषा की तरफ आकृष्ट करने में सहायता पहुँचाई ।

हिन्दी साहित्य में अभिरुचि पैदा करने का श्रेय मेरे पति श्री दण्डमूडि महीधर जी को है जो आजकल "हिन्दी चन्दा मामा" के सह-सम्पादक हैं । इन्होंने अपनी मातृभाषा तेलगू में कई कहानियाँ लिखीं और इनके अनुवाद भी पत्र पत्रिकाओं में आ चुके है ।

भावी साहित्यिक योजना :—दक्षिण भारत की तामिल, तेलगू कन्नड और मलयालम साहित्य की रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद करा कर हिन्दी की विविध पत्र-पत्रिकाओं में भेजने की योजनाएँ बना रही हूँ। और 'सुषमा सिन्डीकेट' की स्थापना कुछ मित्रों की सहायता से की है।

पता :—सुषमा सिन्डीकेट, १३ राजा-बाजर स्ट्रीट, मद्रास १७।

कुमारी मधु

नाम कुमारी सरस्वती वार्ष्णेय है पर प्रारम्भ से ही कुमारी मधु के नाम से लिखती हूँ।

जन्म स्थान व तिथि :—चन्दौसी के सुप्रसिद्ध 'साहू' घराने में २ जनवरी १९३३ को।

शिक्षा :—१९४९ में प्रयाग महिला विद्यापीठ की सरस्वती, तथा १९५० में साहित्य सम्मेलन प्रयाग की 'साहित्य रत्न' परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। इस वर्ष हिन्दी एम. ए. का फाइनल वर्ष है।

साहित्य की ओर आकृष्ट करने वाला वातावरण :—साहित्य की ओर बचपन से ही झुकाव रहा है। शहर में होने वाले साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समारोहों में बचपन से ही संगीत, कविता पाठ एवं भाषण करती रही हूँ।

परिवार की साहित्यिक विभूतियाँ :—परिवार का सम्मान साहित्य की ओर रहा है, पर मेरे परिवार में कोई साहित्कार नहीं हुआ।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें आपकी विशेष अभिरुचि है :— कविता और कहानी।

रचनाएँ :—१९५० से अब तक १५० गीत लिख चुकी हूँ। सभी गीत धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, नव भारत टाइम्स, हिन्दुस्तान, आजकल, समाज, नया समाज, ज्ञानोदय, सुमित्रा, भारती, सरिता, उत्तर बिहार, अजन्ता, रानी, विविधा आदि में प्रकाशित हो चुके हैं। तीन वर्ष से दिल्ली तथा जयपुर के आकाश वाणी के केन्द्रों से गीत प्रसारित किए जाते हैं। लखनऊ रेडियो से होने वाले कवियित्री-सम्मेलनों में भाग लेती रही हूँ। इस वर्ष कविता-संग्रह प्रकाशित हो रहा है।

सम्पादकीय ज्ञान :—कालिज मैगजीन का सम्पादन किया है।

सार्वजनिक जीवन :—मैं अपने व्यक्तित्व को किसी संघ आदि की संकुचित सीमा में बांधना मुझे प्रिय नहीं है, यों बचपन से ही सार्वजनिक समारोहों में सम्मिलित होती रही हूँ।

पता :—८४, ब्रह्म बाज़ार, चंदौसी (उत्तर प्रदेश)

श्रीमती मनोरमा महाजन

जन्म स्थान तथा तिथि :—चोपडा, पूर्व खान देश (बम्बई राज्य) ३१ अक्टूबर १९२३ ।

शिक्षा :—बी० ए० प्रभाकर, बेसिक ट्रेनिंग, सेवा-ग्राम (वर्धा)

साहित्य सेवा के लिए प्रेरित करने वाला वातावरण :—पूज्य पिता जी की साहित्यिक रुचि का प्रभाव तथा सेवाग्राम वातावरण से प्रेरणा ।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें विशेष अभिरुचि है :—समाज सुधार, शिक्षा, तथा पिछड़े वर्ग के कल्याण से सम्बन्धित लेख !

रचनाएँ :—कुछ मराठी तथा अंग्रेजी से अनुदित कथाएँ "स्वास्थ्य-सुधार" नामक मासिक पत्र में प्रकाशित हुई थी। गत तीन वर्षों में

१. "सेवा ग्राम में एक दिन"

२. "राष्ट्रमाता कस्तूरबा"

३. "अहिल्याबाई"

४. "प्रोढ़ शिक्षा"

५. "बेसिक शिक्षा प्रणाली"

६. समाज सेवक के जीवन में एक दिन।

७. खादी। आदि कई भाषण आकाशवाणी दिल्ली से प्रसारित कर चुकी हूं।

सार्वजनिक जीवन :—पूजनीय माता रामेश्वरी नेहरू जी के सीधे

मार्ग दर्शन में १९४९ से करौल बाग की शरणार्थी बस्ती "रामेश्वरी-नेहरू नगर" में हरिजन बालकों की शिक्षा का विशेष काम। "बापू आदर्श विद्यालय" का संचालन।

साहित्यिक अनुभव तथा भावी साहित्यिक योजनाएँ :—भविष्य में बालोपयोगी साहित्य तथा शिक्षा, समाज सुधार सम्बन्धी लेख पिछले कई वर्षों के प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर लिखने का विचार है।

पता :—७०८७—रामेश्वरी नेहरू नगर, न्यू पूसा रोड, करौल बाग दिल्ली।

कुमारी मनु भंडारी

जन्म स्थान व तिथि :—१ अप्रैल सन् १९३० अजमेर।

शिक्षा :—बनारस यूनीवर्सिटी से हिन्दी में एम. ए.।

साहित्य :—मनु भंडारी पिछले कई वर्षों से छोटी कहानियाँ लिखती आ रही हैं। आपकी 'मैं हार गई' या 'श्मशान' कहानियाँ जिसने पढ़ी हैं वह उन्हें भुला नहीं सकता। किसी की प्रतिभा को आँकने के लिए आँकड़ों की नहीं, ठोस सामग्री की आवश्यकता होती है। मनु भंडारी का न कोई कहानी-संग्रह है और न कोई उपन्यास और न ही इन्होंने अधिक लिखा है, लेकिन जितना भी है उसी से उनके अन्तर का परिचय मिल जाता है और यह कहा जा सकता है कि वे साहित्य को थोड़ा भी समय और दे सकें तो एक उज्ज्वल सितारे के रूप में चमक सकती हैं।

मनु भंडारी की रचनाओं में पाठक को एक कमी मिलती है। वह है कथानक का अभाव। इस कमी को वे अपने चुभने वाले व्यंग से पूरा करने का प्रयत्न अवश्य करती हैं, पर वह व्यंग भी इतना उभर नहीं पाता कि उससे कथानक का अभाव पूरा हो जावे। दूसरी चीज, जीवन के प्रति जो उनकी मान्यताएँ हैं वे भी भारतीय संस्कृति से मेल नहीं खातीं। एक हिसाब से उन्हें प्रतिक्रियावादी लेखिका भी कहा जा सकता है, प्रगतिवादी भी, प्रयोगवादी भी नहीं यदि कहा जा सकता तो नारीत्ववादी है। (यदि नारीत्व की भावना को 'वाद' विशेष के अन्तर्गत माना जावे) मनु भंडारी की रचनाओं में नारीत्व के वे स्वाभाविक गुण नहीं है जिनकी अपेक्षा एक नारी-लेखिका की लेखिनी से की जाती है। लगता है कोमलता में जैसे इन्हें विश्वास नहीं है। बंधे हुए नियम का पालन उन्हें अच्छा ही नहीं लगता और वे विद्रोह कर उठती हैं। विद्रोह अनुचित

नहीं यदि उसके पीछे नवीन मूल्य हो, समाज की अव्यवस्था में परिवर्तन करने की मूल-भावना हो। मनु भंडारी का विश्वास 'देने' में नहीं है, आत्म-संतुष्टि में है और उसकी झलक 'श्मशान' में इतनी गहरी है कि बरबस कहना पड़ता है—"अजीब विश्वास है।" ऐसे विश्वास जो भारतीय परम्पराओं के एक दम विरोधी हैं। वे यदि इस इकतरफ़ा दृष्टिकोण को छोड़ कर जीवन के नवीन मूल्यों को उचित मापदण्ड पर स्वीकार कर सकें तो अधिक उचित है।

सार्वजनिक जीवन में वे गहरी रुचि रखती हैं। पत्रकारिता में भी उनकी रुचि है। सब से अधिक चाव है बच्चों को पढ़ाने का। कलकत्ता के मारवाड़ी स्कूल में पिछले चार वर्षों से पढ़ा रही हैं। कलकत्ता रेडियो की 'रेग्युलर टॉकर' हैं।

आपके पिता सुखसम्पतिराय भंडारी तथा चाचा चन्द्रराज भंडारी से हिन्दी जगत् अपरिचित नहीं। बड़ी बहन स्नेहलता बोर दिया भी साहित्य में गहरी रुचि रखती हैं। स्पष्ट है कि परिवार का साहित्यिक वातावरण ही आपमें साहित्य के प्रति अनुराग उत्पन्न कर गया है।

अभी अविवाहिता हैं।

स्थायी पता :—१६५/१ लैंसडाउन रोड कलकत्ता २६

स्वभाव से बहुत ही मिलनसार और निर्द्वन्द्व प्रकृति की हैं। हमेशा उन्हें आप हँसता हुआ ही पायेंगे। कम से कम यह स्वीकार करने में हिचकिचाहट नहीं कि मनु भंडारी वह हैं जो आँसू की जगह भी मुसकरा सकती हैं। और यही उनका सब से बड़ा, सब से ठोस परिचय है। छोटे से कद की दुबली-पतली मनु सहज ही अपने प्रशंसकों और मित्रों का हृदय जीत लेती हैं।

विचार तो बहुत करती हैं उपन्यास आदि लिखने का लेकिन वह बस हो नहीं पाता, फिर भी हिन्दी जगत् भविष्य में उनकी लेखनी से निसृत सुन्दर प्रसूनों को अपने आँचल में झेल सकेगा, ऐसी आशा है।

(बहिन विमल वैद, के सौजन्य से १३५७ में प्राप्त)

देवी महादेवी

सुश्री महादेवी वर्मा का जन्म फर्रुखाबाद जिले में संवत् में हुआ था। शुरू में इनकी शिक्षा-दीक्षा इन्दौर में हुई पर अल्पावस्था में ही शादी हो जाने के कारण आपकी विद्यालयों की शिक्षा की गति अवरुद्ध सी हो गई, पर अपनी अटूट-साधना और अदम्य-लग्न के कारण ही महादेवी जी एम० ए० तक पास कर सकीं। अब वर्षों से आप प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाध्यापिका हैं।

प्रमुखतम रचनाएँ :—नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्य गीत, दीप-शिखा, यामा, अतीत के चल-चित्र, श्रृंखला की कड़ियां, हिन्दी का विवेचनात्मक गद्य, स्मृति की रेखायें क्षणदा, पथ के साथी, आदि।

विशेष :—देवी महादेवी आज के युग की सर्वोत्कृष्ट हिन्दी कवियित्री है। इनकी भाषा शुद्ध मधुर और कोमल होती है। दर्शन का पुट होने के कारण इनका काव्य भारतीय जनजीवन के बिल्कुल सन्निकट है। वे भावनात्मक रहस्यवाद की प्रेरणास्रोत है तथा उनकी रचनाओं में छटपटा देने वाली विरह तथा आध्यामिक वेदना का बाहुल्य रहता है। इनकी चितेरी तूलिका में अमूर्तभावों को मूर्तरूप प्रदान करने की पूर्ण क्षमता है। वेदना, पीड़ा और सिहरन द्वारा ही इस कुशलतम साहित्यकार ने वैयक्तिक अनुभूति-प्रधान-कृतियों में 'आँसुओं की माला' पिरो डाली है। ऐसा मालूम पड़ता है वे अपनी साधना में इतनी निरत हो जाती है कि पाठक को मालूम पड़ती है कि कि "प्रिय का चिरविरह ही उनका सुहाग है।" भावना की प्रमुखता, कल्पना का सामञ्जस्य, और निराशा का साम्राज्य और टीस, वेदना और कसक की पीड़ा उनके अनन्त साहित्य के अनमोल चरणचिन्ह है।

"युग-युग से अधीर" इस कवियित्री की रचनाओं का ध्वनि-चमत्कार, उनकी गेय-प्रियता एवं "मिस्टिक"-पकड़ हर पाठक को बरबस मोह लेती हैं।

देवी महादेवी निस्संदेह आज की सर्वोत्कृष्ट महिला साहित्यकार हैं। उनका जीवन ही "ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बांध रखने की क्षमता रखता है।"

पता :—श्रीमती महादेवी वर्मा, प्रिंसिपल प्रयाग महिला विद्या-पीठ इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)।

श्रीमती महामायादेवी चतुर्वेदी

जन्म स्थान व तिथि :—भरतपुर, फाल्गुण दि० वि० सं० १९५९।

शिक्षा :—घर पर।

साहित्यिक वातावरण व साहित्यिक विभूतियां :—मेरे खानदान में प्रसिद्ध महाकवि सोमनाथ जी चतुर्वेदी हुए हैं। मेरे पूज्य पिता स्वर्गीय मिश्र अमरनाथ चतुर्वेदी—सरदारराज तथा महाराज के आचार्य तथा दानाध्यक्ष थे। यह खानदान ही सरस्वती देवी का मंदिर था। मेरे पति श्री रावत चतुर्भुज दास जी चतुर्वेदी हैं। वे प्रसिद्ध साहित्यकार हैं; अनेक पुस्तकों के रचयिता हैं। प्रत्येक देशी-विदेशी पत्रों में इनके भी लेख छपते रहते हैं। आपने हर प्रकार की लगभग ३८ पुस्तकें लिखी है। आपकी खोजपूर्ण पुस्तक "ज्योतिष चिन्तामणि" है जो अभी प्रकाशित नहीं हुई है। यह आठ सौ पृष्ठ का ग्रन्थ है। हिन्दी में इससे बड़ा ग्रन्थ नहीं। मेरे स्वसुर स्वर्गीय रावत राधामोहन जी चतुर्वेदी थे। यहां भी मेरा पठन होता रहा। वे भी बड़ी साहित्यिक अभिरुचि के व्यक्ति के थे। यही वातावरण था। जिससे मेरी रुचि बराबर रहती आई है।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा : धार्मिक, साहित्यिक, कलाकौशल तथा गृह विज्ञान।

रचनाएं : 'कन्या धर्म शिक्षा' (चार भाग) देहली से प्रकाशित तथा 'पाक-प्रभाकर' प्रकाशन के पास है।

योजनाएं : बच्चों को सह-शिक्षा गृह विज्ञान तथा अन्य कला की

शिक्षा देना । यही सद्भावना है कि स्त्री समाज ऊपर उठकर भारतीय कलाकौशल तथा हिन्दी-संस्कृत की सेवा करें। भारतीय संस्कृति की रक्षा होती रहे और नारीत्व में भी अमरत्व है इसका विस्मरण न हो।

पता :—द्वारा रावत चतुर्भुज दास चतुर्वेदी, उपाध्यक्ष-स्टेट म्युजियम भरतपुर।

कुमारी मालती परुलकर

परिचय देने की बात जब आपने कही तो पहले बहुत संकोच हुआ। परिचय लिखने की मैं अधिकारी नहीं हूं। हिन्दी भाषा का प्रथम परिचय हुए अभी कुछ वर्ष ही हुए हैं और साहित्य क्षेत्र में आए १॥-२ साल ही। साथ ही आत्म परिचय देना जितना सरल है उतना ही कठिन। बाह्य जीवन के जो मोड़, जो गति दीखती है, उसके पीछे इतना अधिक गतिमान, चंचल क्लिष्ट और बार बार रूठने मुड़ने वाला, गिरने उठने वाला आतंरिक जीवन प्रवाहमान रहता है कि उसका सही नक्शा उसकी अनुपात में, उसी Perspective में रखना पाठकों को 'टैक्स' करना है, और बढ़ा-चढ़ाकर लिखना ईमानदारी के खिलाफ किन्तु फिर भी साहस बांधा और जिन लक्ष्य-बिन्दुओं को आपने सम्मुख रखा उन्हीं के सहारे यह लिखना प्रारम्भ किया है।

मेरा जन्म १९३२ में ४ मई को हरदा के एक अत्यंत सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। किन्तु अपनी उस जन्म भूमि का मेरा सबसे पहिला संस्मरण १९३६ का है। सर्विस के गांव से पिता जी हम लोगों को लेकर हरदा आये-तब का। रसोई वाले पंडित से लेकर हरेक का आत्मीयता प्रदर्शित करने का एक ही तरीका था—खूब प्रश्न पूछे या पास खींचकर चूम लें। फिर भी मालूम नहीं क्यों जी इस कदर घुटता मचलता था। जैसे मुक्ति की सांस न मिलती हो।

पिता जी के साथ नौकरी के गांव वापस लौटने पर यह वातावरण एक दम बदल जाता था। छोटा सा परिवार मां-बाप की छत्र छाया में मिलने वाला हर प्रकार का सुख। सबसे अधिक कुछ चीज भाती थी तो वह थी बंगले के आस पास, दूर दूर तक फैली शान्ति, निस्तब्धता और

पेड़ों की छायाएं।

पिता जी के ट्रांसफर से पढ़ने में विक्षेप पड़ने की संभावनाएँ थीं अतः हमें इन्दौर होस्टेल में रख दिया गया। तब मेरी आयु सिर्फ आठ साल की थी। बोर्डिंग में फिर वैसा ही कोलाहल, वैसी ही हलचल। हर बात पर बंधन, हर बात के नियम। सुबह उठने से लेकर सोने तक बैल के इशारे पर काम करना। घर थे तो कभी अपने हाथ से नहाये धोये तक न थे। और यहाँ अपने से डेढ़ गुने ऊंचे कँकरीट के बम्बे से (heater) से पानी निकालकर बाथरूम की बारी लगाकर नहाना, कपड़ों को साबुन लगाना। नियम के अनुसार छोटी लड़कियों को अन्य लडकियों के लिए थाली पाटिये भी लगाने होते थे। और चूंकि वे बड़ी थी इसलिए मर्यादापालन के लिए उनके आदेश भी मानने ही पड़ते थे। जी घबड़ा उठा। पहले कुछ दिन तो २४ घंटे आंसू बहते रहे। सिसकियाँ उमड़ती रहीं फिर रोने का आवेग हफ्तों से माहो में बहने लगा। किन्तु इस रुलाई से न मा-बाप पसीजे, न बोर्डिंग के चालक ही। कारण दो थे: एक तो मुझसे बड़ी बहिन कुछ ही दिनों में वहाँ रम गई थी और दूसरी यह कि संस्था ऊंची-ख्याति प्राप्त थी। संस्कृत के आचार्य भांडारकर की रिश्तेदार वहाँ प्रिन्सिपल थीं जिनकी देख रेख में बच्चों को सौंपकर मा-बाप निश्चिंत हो जाते थे। गजब था रुलाई का कोई परिणाम न निकला तो आंसुओं को सूखना ही हुआ लेकिन मन अत्यधिक ग्रस्त व्यस्त रहता—जैसे कहीं कुछ टूट गया हो···।

नियम और बन्धन की पकड़न में प्राण चटखते थे। चारों ओर ममता-शून्य, हमदर्दी-हीन वीरान नजर आता था जहां घंटी टगी है पट्टियों की थालियों की कर्ण कटु आवाज है, बाथरूम की कतारें हैं बास्केट बाल के खम्भे हैं, मसहरी के पलंग हैं और बहुत जल्दी बीतने वाली शांत प्यारी रातें और लम्बे चौड़े रुखे कोलाहल भरे दिन।

स्कूल में सहेलियाँ मिलीं, पर किसी को मुझ जैसी वीरानेपन की भावना महसूस नहीं हुई, अतः जो कुछ मुझे लगा उसे भीतर २ सहने

सोचने के सिवाय और कोई चारा ही न था।

मैट्रिक होने तक आयु के पन्द्रह वर्ष तक मुझे वहीं रहना पड़ा बड़ी ग्लानि में वे दिन बीते लेकिन अब लगता है कि बड़ा अच्छा हुआ—वरना जीवन का बहुमुखी अनुभव कैसे होता ? मन के खिलाफ वक्त के इशारे से दैनिक जीवन को टालने का बहुमूल्य सबक और संयम कैसे आता ? भिन्न स्वभाव, आयु, रुचि की लड़कियों के बीच चौबीसों घंटे रह कर व्यवहार-सहकार्य करने की क्षमता कैसे प्राप्त होती? आंतरिक जीवन की गठन में इस वातावरण का बहुत बड़ा हाथ रहा। हेमन्त में धरा में छिपे बीजों के अनुसार साहित्यिक उद्‌गार इसी उमस में सुप्त पड़े थे।

पिता जी रिटायर होकर मेरे मैट्रिक करने से पूर्व ही हरदा आये थे। इसी बीच में यहाँ के वातावरण में जमीन आसमान का फर्क था। पिता जी के सगे भाई और चचेरे भाइयों में जायदाद के बटवारे की हो गये थे। देखभाल के अभाव में घरबार की रोशनी धीमी पड़ गई थी। मुझ से बड़ी दो बहनों का विवाह होने को था। इतने बड़े कारोबार को फिर एक बार आबादी की राह पर लाना था। इस सबका परिणाम यह हुआ कि जीवन में दूसरा आघात सहना पड़ा।

मैट्रिक के बाद होस्टेल से निकल कर मुक्ति की सांस ले रही थी—विद्याध्ययन के, कलापूर्ति के हौसले बांध रही थी कि उसी वक्त पिता जी ने मुझे आगे पढ़ाने से इन्कार कर दिया। इस अस्वीकृति का सब से बड़ा कारण मेरे विचार से विद्याकला के प्रति घर में घुसी हुई उदासीनता थी। तरह-तरह से कहकर देखा! पर कोई उपाय नहीं चला। चुपके-चुपके रोने में कुछ माह बीते। उसी वक्त जिन्दगी ने फिर मोड़ लिया—

यहाँ गर्ल्स का मिडिल स्कूल खुला। गणित के लिए उन्हें अध्यापिका की भी जरूरी थी। मुझे पूछा गया। अभी तक पूरे परिवार की किसी स्त्री ने सर्विस नहीं की थी। पिता जी से सम्मति मिलना मुश्किल

था। बहुत रोने कहने के बाद, जिद्द देख कर सहमति मिल गई। १६ वर्ष की कच्ची अवस्था से सर्विस और उसके साथ आने वाली हर स्वभाव, व्यवहार से नाता जुड़ गया। सर्विस करते हुए ही इन्टर और बी० ए० पास किया और फिर एम० ए० के लिए कालेज ज्वाइन कर लिया।

सर्विस में सबसे बड़ी समस्या भाषा की पैदा हुई। १९५० में सब से पहली बार हिन्दी की पुस्तक हाथ में ली। शायद रामनाथ सुमन की 'वेदी के सुमन' वाली। उसी वर्ष इलाहाबाद साहित्य सम्मेलन द्वारा नियोजित प्रथमा की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

मिट्टी के, साबुन के, कागज के चित्र बनाना, कार्ड बोर्ड के घर तैयार करना, तिनकों से कृत्रिम घोंसले तैयार करना आदि बाल सुलभ क्रीड़ाओं के अतिरिक्त नृत्य और चित्रकारी ने भी मेरे मन को पूरी तरह टांक लिया। संगीत का अजीब खिचाव महसूस होता था किन्तु नृत्य की मुद्राओं में, पद-विन्यासों में, यही नहीं बल्कि तालीम के बाद आने वाली थकावट में भी रसात्मक तृप्ति—एक विश्राम मिलता था। चित्रकारी में भी मन बहुत रमा। कई बार किसी पोर्ट्रेट के सामने उसकी रेखा, रंग को परखते हुए बिना हिले डुले घंटों बैठी रहती थी। रेखा और रंग के गठन में, उसके संकेत के प्रभाव में चिरपरिचित स्पर्श का, आर्द्र-ममता का आभास मुझे होने लगा था। यों स्कैचेज और लाइफ साइज़ के पोर्ट्रेट रिप्रोड्यूस करने में मेरी तूलिका समर्थ है किन्तु उससे भीतरी कलाकार शांत नहीं हुआ।—चित्र खींचने से कोई कलाकार नहीं होता जब तक कि उसके चित्र के पीछे बहुत स्पस्ट सजीव स्वप्न (Vision) का स्पन्दन न हो या जब तक कि ऐसे स्पन्दन को रंग और रेखा द्वारा प्रस्तुत करने में उसकी तूलिका समर्थ न हो। नृत्य और चित्र के क्षेत्र में अधूरापन महसूस हुआ। सौंदर्य, सुषमा और बाह्य माध्यम से मिलने वाली एक आंतरिक तल्लीनता-शाश्वत शान्ति की शोधक समस्त प्रवृत्तियाँ अभिव्यक्ति के साधन के

प्रभाव में भीतर-भीतर छहराने लगी। इसी समय बिल्कुल आगंतुक उतरी यक्ष कन्या के जैसी मेरी कलम मुझे सांत्वना देने लगी। मेरी कल्पना को वहन करने लगी और मेरे विचारों को रूप देने लगी। सिर्फ कागज और स्याही के जरिये भावों को व्यक्त करना सम्भव है यह अनुभव दिनों तक मुझ में विस्मय और सन्तोष भरता रहा। सुप्त क्षुब्ध मंथन में सुसंगति आने लगी। जिस भावुकता को, जिस कौतुहल को विश्वबोधक करुणा की उपेक्षा के भय से मैं छिपा कर अब तक रखे हुए थी वही अब पल्लवित हो उठी।

इसी अवस्था में महाराष्ट्र के अत्यन्त लोकप्रिय लेखक तथा निष्ठावान गांधी-दर्शन के प्रेमी स्वर्गीय श्री साने गुरु जी से मेरा परिचय हुआ। गुरु जी का हृदय विशाल था। स्नेह की वेगवती धारा उनके अन्तर में अखंड बहती थी! महाराष्ट्र के बच्चे और सोशलिस्ट विचार के लोग गुरुजी की सम्मोहक वाणी से पागल हो उठते थे। स्नेह का और पारस्परिक मतैक्य का सबसे पहला और प्रगाढ़ आश्वासन उनके पत्रों में मिला जिनमें से कुछ पत्र उन्हीं के 'साधना' नामक साप्ताहिक में (साधना, आर्थर रोड, बम्बई) उनकी मृत्यु के उपरान्त प्रकाशित हुए हैं। एक साहित्यिक के नाते मुझ पर गुरुजी का प्रभाव पड़ा या नहीं यह तो मैं नहीं जानती, किन्तु Conscious मन पर तो नहीं हुआ ऐसा ही कहना पड़ेगा। गुरू जी से प्रेरणा मिली, शैली या अनुरेखा नहीं? उसी अर्से में बिनोवा जी से भेंट हुई। उस वक्त तक भूदान की चर्चा उठी भी न थी। उनके भावों विचारों के संतुलन को देखकर मैं श्रद्धारत होकर आकृष्ट हो गई। विनोवा जी ने अपने किसी पत्र में लिखा है, "मालन : जब तक भावना का आधार शुद्ध बुद्धि है तब तक वह तारक है—शक्ति प्रद है... वरना मारक।" फिर विनोवा जी भूदान में जुट गए और मुझे उनके फैले कार्य की महानता को देखकर पत्र देने में संकोच होने लगा। विनोबा जी ने भी पूज्य गुरू जी के समान ही मेरे सीधे जीवन को स्पर्श किया, मेरे साहित्यिक या कलात्मक उद्‌गारों को नहीं।

बालपन में जो भावनात्मक एवं जिज्ञासात्मक प्रयास और उमस रही वही मुझको साहित्य की ओर खींचने वाली मूलाधार प्रेरणा रही।

वातावरण का परिचय देने पर यह कहना होगा कि मुझे साहित्य की ओर प्रेरित करने वाली धारा में किसी व्यक्ति विशेष का—लेखक या कलाकार का हाथ नहीं है। न मुझमें साहित्यिक बनने की कोई अदम्य महत्वाकांक्षा ही है। जो कुछ मैंने देखा, सुना, सहा, चाहा, सोचा, उसे व्यक्त करने की लालसा से विभोर होकर कलम का साथ पाकर मैंने लिखा और शायद आगे लिखती रहूँगी। हाँ, यह ज़रूर है कि समय-समय पर मिले साहित्यिकों ने कलाकारों ने और दैनिक जीवन में मिलने वाले आबाल वृद्धों ने मेरी अभिलाषा को अनजाने ही विकसित किया। कश्मीर और पंजाब को छोड़कर सफ़र के कारण हर प्रान्त के शहरों से देहातों से प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित हुआ। उसी से जन जीवन के दर्शन हुए और अनुभव में व्यापकता आई।

अब शेष रहा—सार्वजनिक जीवन का सवाल—क्या कहूँ ? शान्ति-प्रिय होने के नाते बहुत कम अवसरों पर समाज के यानी Mob के सम्पर्क में आती हूँ। शादी त्योहार पर या सार्वजनिक महत्व के किसी कार्य में जब सम्मिलित होना पड़ता है, तब अपने को भूलकर काम में जुट जाने में, हास्य-विनोद की ऊपर सतह पर रह कर जीवन उपयोग में भी सफलता मिल जाती है।

सार्वजनिक जीवन लगभग नहीं के बराबर है। यों उत्सुकतावश छुट्टियों में भूदान की पैदल यात्रायें सम्मिलित हो गई थी किन्तु कोई सेवा या यज्ञ की दृष्टि से वह कदम नहीं उठाया था। हाँ, एक मजे की बात लिखूं—मेरी कुण्डली देखकर हरेक ने प्रायः अंकित किया है कि तीन चार वर्षके बाद मैं सार्वजनिक जीवन में आ रही हूँ। विशेषकर राज-नैतिक क्षेत्रों में। किन्तु उन्हीं ग्रहों के आधार पर मेरा interpretation अलग है। (मैं भी सशास्त्र कुण्डली देखना जानती हूँ) राजनीति में पड़ू ऐसा एक भी कीटाणु मेरे अन्दर नहीं है। यह हो सकता है कि आर्थिक-

दैन्य और विषमता का नग्न दर्शन बार-बार होने लगा—तब तो राज नीति में या समाज कार्य में मुझे बिना लाए मेरी आत्मा मानेगी नहीं।

एकान्त-प्रियता के बावजूद समाज के विभिन्न स्तरों के, जातियों के, धर्मों के, देशों के, विभिन्न आयु के लोगों से अनौपचारिक स्नेह मुझे मिलता रहा है। मैं अपने को भाग्यशाली समझती हूं। परिचित आत्मीयजों से बार-बार मिलते रहने की अपेक्षा दिनों, व बरसों बाद मिलने में अधिक सुख मिलता है। नहीं मालूम क्यों ?

मैंने अभी तक जितना लिखा है उससे बहुत अंशों में मुझे संतोष मिला है किन्तु भविष्य की कौन कहे ? आपने ठीक कहा है कि साहित्य सेवा का विचार करना सतत्-साधना मोल लेना है। यह साधना मुझसे न होगी—न होगी कैसे कहूं ? यों प्रेरणा मिली तो आज जैसी ही कथा कविता, उपन्यास लिखती रहूँगी। इधर एक उपन्यास लिख रही हूँ। सन्यासिनी के जीवन पर—कथा का नायक Sound Common Sense को उपस्थित करता है और वह स्वयं जटिल प्रवाह को Psychic तथा intellect आदि के बीच में उलझा हुआ रहने के बाद भी रहस्यात्मक और प्रभावशाली होता है। इसमें फ्रॉयड के interpretation पर तथा अरविंद के Vital और Spiritual की चर्चा होगी। देखिए कब पूरा होता है।···जीवन की गर्मी, स्वास्थ्य और ईमानदारी जिसमें नजर आती है, वह हरेक अंग चाहे काव्य, नाटक, उपन्यास, विडम्बना या निबन्ध हो मुझे पसन्द आता है।

साहित्य बहुत ऊंचा है, पर जीवन उससे भी अधिक। अतएव रन्ध्र-रन्ध्र से, श्वास-श्वास से अपने को, अपने पास पड़ोसियों को, स्नेही-साथियों को, शत्रु-मित्रों को समझने की लग्न रखकर हर समस्या का हल निकालकर निश्चिन्त एवं अभय मन से जीवें—यही जीवन की सार्थकता के सम्बन्ध में मेरी धारणा है। देखिए—भविष्य में इस राह पर चलते हुए साहित्य की सेवा कर पाऊंगी या नहीं ? अभी से कैसे कहूं।

मेरा पता :—कुमारी मालती एस. परुलकर परुलकरों का बाड़ा,

कुमारी मालती परुलकर

हरदा (मध्य प्रदेश)[1]

---

१ मालती बहिन ने हमारे आग्रह पर यह सब परिचय भेजा था ; मुझे खेद है कि स्थानाभाव के कारण इसमें कुछ अंश निकाल देने पड़े है। उनके लिए क्षमा चाहता हूं। आपकी पुस्तक "तुम बड़ी पागल हो" बड़ी ही सुन्दर लिखी गई है। —सम्पादक

श्रीमती यमुना शेवड़े

जन्म स्थान व तिथि :—२ अक्तूबर १९१७, नागपुर (बम्बई राज्य)

शिक्षा :—पूना के कर्वे विश्वविद्यालय की जी० ए०, बी० ए० (म्यूजिक) भातखण्डे संगीत विश्वविद्यालय, लखनऊ।

साहित्य सेवा के लिए प्रेरित करने वाला वातावरण :—पारिवारिक वातावरण ही उसके अनुकूल है। पति श्री अनन्त गोपाल शेवड़े हिन्दी के उपन्यासकार एवं कथा—लेखक है, पत्रकार है।

साहित्य का निर्दिष्ट दिशा :—कहानियाँ, ललित निबन्ध एवं लेख। स्वस्थ सात्विक, सुरुचिपूर्ण दृष्टिकोण पारिवारिक जीवन की कहानियाँ तथा हास्य-कथाएँ। नारी जाति समाज तथा राष्ट्र के उत्थान के प्रति विशेष आस्था, सहानुभूति पूर्ण, मानव-निष्ठ दृष्टिकोण।

रचनाएँ :—मूलतः मराठी में लिखती है। अनुवाद हिन्दी में प्रकाशित हुए है। श्री वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यास "झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई" का मराठी में अनुवाद किया है स्वतन्त्र कहानी संग्रह 'प्रेमपत्र' प्रेस में है।

सार्वजनिक जीवन :—पति-पत्नी ने राष्ट्रीय आंदोलन में हिस्सा लिया है। लेखिका झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के बन्धु स्व० चिन्तामणराव तांबे की पौत्री है। अतएव राष्ट्रीय स्वातंत्र्य की लालसा बचपन से ही है। सेवा सदन तथा अन्य नारी कल्याण के आन्दोलनों में हिस्सा लिया है। संगीत में विशेष रुचि है—और उनके शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम नागपुर रेडियो पर नित्य हुआ करते हैं। भजनों को शास्त्रीय

एवं रोचक पद्धति में गाना उनकी विशेषता है। मराठे की वक्ता भी हैं।

साहित्यिक अनुभव एवं भावी साहित्यिक योजनाएँ :—लेखिका की धारणा है कि जीवन ही साहित्य की सबसे बड़ी प्रेरणा है। सजीव साहित्य का निर्माण जीवन की अनुभूतियों से होता है।

पता :—खुर्शिद विला, धरमपेठ, नागपुर, (बम्बई राज्य)।

श्रीमती रजनी पनिकर

ऊँचा पूरा कद, खुलता हुआ रंग और स्थूलता की ओर झुका शरीर। श्रीमती रजनी पनिकर से मिलने जब मैं आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र पर गई जहाँ वे कार्य करती हैं तो स्वतः ही मन में कुछ संकोच सा उत्पन्न हुआ, मात्र यही विचार था कि वे बहुत बड़ी, विदुषी और प्रसिद्ध उपन्यास लेखिका हैं, मुझसे मिलना कदाचित पसन्द न करें लेकिन जब उनसे मिली तो यह धारणा निर्मूल सिद्ध हुई। प्रथम परिचय के पश्चात ही मैंने पाया, सरल स्वर की स्वामिनी रजनी जी अपने व्यवहार में भी उतनी ही सरल, मधुर और स्नेहशीला हैं।

साधारण शिष्टाचार के पश्चात रजनी जी ने पूछा—क्या पियेंगी, चाय या कॉफी ? और मेरे उत्तर की अपेक्षा किये बिना ही उन्होंने कैन्टीन को फोन कर दिया, न जाने क्या क्या मंगवाया। मैंने 'न' करना चाहा लेकिन उन्होंने सुना ही नहीं, बोलीं—यह नहीं हो सकता, आपको खाना ही पड़ेगा।

विवश; चुप हो जाना पड़ा किन्तु जब तश्तरियाँ सामने आयीं, उनमें भरी सामग्री देखी तो मैं सचमुच में घबरा गयी। इतना सब मैं खा ही नहीं सकती थी। उनके रोकने पर भी मैंने थोड़ी-थोड़ी सी मिठाई और नमकीन अलग निकाल कर रख लीं, बची हुई रजनी जी की ओर खिसका दीं। उन्होंने हाथ से रोका और इस गड़बड़ में मिठाई का रस मेज पर फैल गया। झेंप तो अवश्य आई पर करती क्या, हंसकर रह गई। उन्होंने मेज साफ करके कहा—बड़ी अजीब हैं आप। देखती नहीं यह शरीर ? मैं "डाइटिंग" कर रही हूँ आजकल "कहते हुए उन्होंने रसगुल्ला उठाकर मुख में रखा और खिलखिलाकर हंस पड़ीं।

११ सितम्बर सन् १९२४ को लाहौर के पंजाबी नायर परिवार में जन्म लेकर त्रावनकोर के एक फौजी व्यक्ति के साथ विवाह सूत्र में बंधकर हिन्दी जगत की परिचिता रजनी नायर श्रीमती रजनी पनिकर बन गयी हैं। अंग्रेजी और हिन्दी में एम० ए० करने के पश्चात अब डाक्टरेट करने का विचार रखती हैं।

मैंने पूछा—डिग्रियों का कोई विशेष चाव है आपको ?

उन्होंने सरल भाव से कहा—विशेष तो नहीं लेकिन आरम्भ से हीमुझे अपने आपको "सपोर्ट" करना पड़ रहा है और आप जानती हैं नौकरी के क्षेत्र में डिग्रियों का बहुत महत्व है।

मेरे यह पूछने पर कि स्त्रियों के नौकरी करने के बारे में आपका क्या विचार है, वे बोलीं—यह तो देखिए मन की रूचि का प्रश्न है। यदि आप यह सोचती हैं कि नौकरी करके आप अधिक सुखी और प्रसन्न रह सकतीं हैं तो अवश्य कीजिये लेकिन इतना अवश्य कहूंगी कि बाहर में फंसकर घर को एक दम ही मत भुला दीजिये। मैं स्वयं नौकरी कर रही हूँ, आज से नहीं पिछले कई वर्षों से और इतना अनुभव मैं कर चुकी हूँ कि इसमें सरलता नहीं है। बहुत कम ऐसी हैं जो नौकरी करके अपना "व्यक्तित्व" बनाये रख सकती हैं विशेष कर आफिस में कार्य करने वाली महिलायें। जिनमें इतनी शक्ति और साहस है कि सुविधा, असुविधाओं का सामना करके भी वे अपने 'व्यक्तित्व" को सुरक्षित रख लेंगी वे ही इस क्षेत्र में आयें, अन्यथा नहीं। "और फिर कुर्सी की पीठ से टिककर बोलीं सच में नौकरी करना बड़ी टेढ़ी खीर है।

बात बढ़ते बढ़ते वैवाहिक सम्बन्ध पर आ टिकी, बोली—देखिये स्थिरता का सभी जगह मूल्य है। यह जानती हूँ कि बड़ी उम्र हो जाने पर अपरिचित व्यक्ति के साथ एडजस्ट करने में कठिनाई अनुभव होती है। अपने इतने वर्षों के संस्कार एकाएक मिटाये नहीं जा सकते और स्वभाव को पलटना भी मुश्किल है लेकिन इसका यह मतलब नहीं

है कि "ऐडजस्ट" करने की कोशिश किये बिना ही आप सम्बन्ध का खात्मा करने पर उतर आयें। यह भारत है, युरोप नहीं और यहाँ विवाह सम्बन्ध मात्र छींक देने से नहीं तोड़े जा सकते। विवाह आखिर क्या है ? दो प्राणियों के बीच मित्रता और आदान-प्रदान की भावना मात्र ही न ? कोशिश करके इस मित्रता को, आदान-प्रदान को मधुर नहीं बनाया जा सकता ?" कुछ हँस कर बोलीं—यह मत सोचियेगा कि पतिव्रत धर्म का पाठ पढ़ा रही हूँ फिर भी भावना मेरी यही है कि विवाह एक हद तक आवश्यक है और जो स्त्रियाँ यह कहती हैं कि वे बिल्कुल स्वतन्त्र रह कर चल सकती हैं वे झूठा दम्भ भरती हैं। एक के सहयोग के बिना दूसरा आगे नहीं बढ़ सकता इसे तो आपने भी माना है। मन में इस भावना को लेकर विवाह कीजिये कि आप अपने और दूसरे का जीवन सुखी बनाने जा रही हैं। यह मत सोचिये कि त्याग आपको ही करना पड़ रहा है, पति को भी करना पड़ता है। हां यदि आप किसी भी तरह बनाकर चल ही नहीं सकतीं तो अलग हो जाइये लेकिन इतना अब भी कहूँगी कि कोशिश करने पर "ऐडजस्टमैन्ट" करना कठिन नही है। अपने "अहं" को दबाकर "स्व" को इतना ही उठाइये जितने से न वह आपकी राह का रोड़ा बने और न आपके पति के मार्ग का पत्थर।

इस चर्चा से हटाकर मैंने विषय को साहित्य पर ला टिकाया। रजनी जी का परिचय, उनकी मान्यतायें और उनकी भावनायें उनके उपन्यासों में बिखरी पड़ी हैं। श्रीमती ऊषा देवी मित्रा और कंचन लता सब्बरवाल की परम्परा से हटकर उन्होंने अपने लिये स्वतन्त्र क्षेत्र चुन लिया है और वह क्षेत्र है मानव, विशेषकर नारी मनोविज्ञान का जिसकी वे कुशल चित्रकर्त्री हैं। उनके उपन्यास पढ़ कर ऐसा ही लगता है जैसे वे स्वयं अपने पात्रों के साथ चल रही हैं, उन्हें देख रही हैं और कदाचित इसी कारण उनके खींचे हुए चित्र इतने सजीव बन पड़े हैं। एक बात मैं अवश्य कहना चाहूंगी। कहानी—लेखिका रजनी पनिकर से उपन्यास लेखिका रजनी पनिकर अधिक सफल हैं। कहानी एक मिनट की भी हो

सकती है और एक दिन की भी। अधिक समय उसमें नहीं बांधा जा सकता। उसे छोटी कहानी के रूप में ले सकना कठिन हो जाता है। कलेवर छोटा होने के कारण न उसे उपन्यास कहा जा सकता है न कहानी ही इस परिभाषा पर मैं विश्वास करती हूं। इससे अधिक विस्तृत क्षेत्र की मैं हामी नहीं हूं। रजनी जी ने अधिकांश कहानियों में इस सीमा का उल्लंघन किया है, इसी कारण मैं कहानीकार के रूप में उन्हें विशेष महत्व नहीं देती। हां, उपन्यास-लेखिका के रूप में वे सचमुच अद्वितीय हैं।

रजनी जी के प्रथम उपन्यास 'ठोकर' को पढ़कर इतना भर अनुभव होता है कि मनोविज्ञान में उनकी गहरी रुचि है और मन के भावों को वे कलम-बद्ध भी कर सकती हैं, लेकिन विशेष आशा उससे नहीं बंधती। घटना और भावों में जो तारतम्य होना चाहिये उसका "ठोकर" में अभाव है पर चूंकि वह उनके शिक्षाकाल की रचना है अतः क्षम्य है। दूसरी पुस्तक "पानी की दीवार" जब पढ़ी तो लगा नारी हृदय के अन्तर्द्वन्द्व का जितना सजीव चित्रण वे कर सकी है उससे अधिक की आशा किसी से नहीं की जा सकती। रस, भाव और भाषा की सम्बद्धता "पानी की दीवार" की विशेषता है। "पानी की दीवार" के पश्चात उनका "मोम के मोती" और "प्यासे बादल" भी पाठकों के हाथों में आया पर जितनी सफल वे "पानी की दीवार" में हुईं उतनी अन्य में नहीं। वस्तुतः इसी पुस्तक को पढ़कर मैंने उनसे मिलने की इच्छा की थी। मन में कसक थी और करुणा का हल्का सा पुट भी था, पूछा—उपन्यास में मार्मिक और कोमल अनुभूति के चित्रण आपको प्रिय हैं यह तो समझ में आया लेकिन आप अपने पात्रों को यों भटकता हुआ क्यों छोड़ देती हैं। कुछ भी हो उपन्यासकार से यह आशा तो की ही जाती कि समस्या को उठाकर वह उसका निदान भी ढूंढ देगा लेकिन आपने इस सीमा को माना ही नहीं, यह क्यों ?

रजनी जी मुस्कराकर बोलीं—क्यों निदान दिया तो है, नीना

राज को पा लेती है और संतुलित हो जाती है।

"और दिलीप ?"

"उसकी राह खोजना अनधिकार चेष्टा हो जाती। देखिये मैं नारी हूं, नारी मनोविज्ञान को जितनी अच्छी तरह समझ और चित्रित कर सकती हूं उतना दूसरे पक्ष को नहीं, इसी कारण दिलीप को मैंने नही छुआ।"

रजनी जी ने मिथ्या नहीं कहा था। अनुभव से परे होकर उन्होंने कहीं भी नहीं लिखा है। इसका आभास उनकी रचनाओं से मिल जाता है। रजनी जी में प्रेमिका सबल है मां निर्बल। प्रेमिका के कोमल को छूकर ही वे रह गयी हैं मां की ममता को उन्होंने नहीं छुआ। उनकी प्रायः सभी रचनाओं में नारी को प्रेमिका के रूप में ही स्पष्ट पाया है। यह उनकी निर्बलता अवश्य है लेकिन मैं कह ही चुकी हूँ, अनिधकार चेष्टा उन्हें अखरती हैं।

यथार्थ और आदर्श के बारे में उनके विचार तो स्पष्ट थे पर कदाचित लेखनी नहीं। उनके अपने विचार से "मोम के मोती" उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना है। उसमें उन्होंने जहां घोर यथार्थ को उघाड़ा है "प्यासे बादल" में उसी को आदर्श का गहरा पुट देकर अतिरंजना कर दी है। यथार्थ को उभारने के प्रयत्न में उन्होंने उसे बहुत गहरा ढंक दिया है। असल में रोज शीला को वे निभा नहीं पायीं। उसके चित्रण में उन्होंने अति कर दी है यद्यपि इसे वे स्वीकार नहीं करतीं। हां नारी के कोमल और ममत्व को यहाँ उन्होंने खूब स्पष्ट कर दिया है। रोजशीला के प्रेम, उसके त्याग और सेवा में नारी का कोमल अंत छिपा पड़ा है और वह मन को छू लेता है। वे स्वयं स्वीकार नहीं करतीं लेकिन उनकी रचनायें स्पष्ट कर देती हैं कि नारी का कोमल उसके कठोर से उन्हें अधिक प्रिय है। मैं इसे भी उनकी कुशलता की परिचायक मानती हूँ।

रजनी जी का एकाकी पन उनकी रचनाओं में इतना स्पष्ट है कि

उन्हें बांध कर चलना कठिन है । "ठोकर" की जूही, "पानी की दीवार" की नीना "मोम के मोती" की माया और "प्यासे बादल" की रोज-शीला—इन सभी में रजनी जी का एकाकीपन रूदन सा करता है, उनकी वाह्य हँसी की खिलखिलाहट इनमें नहीं गूंजती । वस्तुतः उनका अपना "स्व" उनकी रचनाओं में अधिक हैं, समष्टि का नहीं और इसे भी मैं विशेष मान नहीं दे सकती । उपन्यासकार को सबके बीच होकर चलना पड़ता है, अपनी नहीं दूसरों की व्यथा को परिलक्षित करना पड़ता है और सीमित दायरे से हटकर अपने चित्र उन्मुक्त वायु में खींचने पड़ते हैं । इसका रजनी जी में अभाव है । "प्यासे बादल" में उन्होंने प्रयत्न अवश्य किया है पर चूंकि यह उनके अन्तर के कलाकार से मेल नहीं खाता इसी कारण वहां अतिरंजना हो गयी है और "मोम के मोती" में यथार्थ का पल्ला वे इस बुरी तरह पकड़े हुए हैं कि वहाँ चित्रण पूरा न होकर एकांगी हो गया है । यह रजनी जी का दोष नहीं है उनकी मानवी का दोष है, अतः वे क्षम्य हैं ।

अपनी सीमायें उन्होंने बाँध रखी हैं, उस बंधी सीमा में वे खूब उभड़ी हैं, खूब फैली हैं । उनके अन्तर की नारी, उनका कलाकार यहाँ मुखर है । नारी भावनाओं का चित्रण उनकी विशेषता है ऐसी विशेषता जिसे अभी तक कोई नहीं पा सका है । इस कारण निःसंकोच कहा जा सकता है कि अपने इस क्षेत्र में वे पूर्ण सफल हैं । हिन्दी उपन्यास साहित्य भविष्य में उनसे और भी सुन्दर रत्नों को प्राप्त करने की आशा रखता है ।

[बहिन विमल वेद के सौजन्य से प्राप्त]

उनकी रचनाएँ हैं :—

ठोकर, पानी की दीवार, मोम के मोती, काले बादल, सिगरेट के टुकड़े, काली लड़की, और जाड़े की धूप (सब प्रकाशित) तथा बैरंग-लिफ़ाफ़ा (अप्रकाशित) ।

कुमारी रमा सिंह

जन्म स्थान व तिथि :—शिक्षा :—गाँव ननखेरिया जि० हरदोई २३ मई १९२७।

शिक्षा :—एम० ए० (हिंदी व राजनीति) एल-एल० बी०

साहित्य सेवा के लिए प्रेरित करने वाला वातावरण :—ऐसा वातावरण घर पर ही मिला। पिता जी की 'मानस' व 'गीता' में विशेष रुचि व गहरा स्वाध्याय, घर में इन्हीं चर्चाओं से प्रेरणा मिली। अनेक साहित्यिकों व विद्वानों की पिता जी से मैत्री जैसे पंडित सोहनलाल द्विवेदी, 'रसाल' जी व डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी इत्यादि। इनके आने जाने से साहित्यिक वातावरण और भी प्रभावशाली बना।

बड़ी बहिन स्वर्गीया श्रीमती कृष्णा सिंह की प्रतिभा से भी बड़ी प्रेरणा मिलती थी। वे स्वयं भी हिन्दी संस्कृत की अच्छी छात्रा थीं बी० ए० में; और हिन्दी अंग्रेजी में एम० ए० थीं। एक प्रकार से वे ही पथप्रदर्शिका थीं। बोर्डिंग में उन्हीं के साथ रहने से उनके व्यक्तित्व का और गहरा पड़ा।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें विशेष अभिरुचि है :—साहित्य में मुझे कविता में विशेष रुचि रही है। यों कुछ कहानियाँ, स्केच, रेडियो रूपक इत्यादि लिखे हैं व आलोचनात्मक लेख भी। साहित्य-सृष्टि में साहित्य को रूढ़ि परम्पराओं में बाँधने का मेरा विश्वास नहीं है। साहित्य की विकासशीलता पर मेरी आस्था है।

रचनायें :—रचनायें तो पत्रिकाओं में प्रकाशित हो ही रही हैं। कवितायें लगातार ज्ञानोदय, कल्पना, साप्ताहिक हिंदुस्तान, धर्मयुग, त्रिपथगा, संकेत, अजन्ता आदि में निकली हैं। लेख—सम्मेलन पत्रिका,

हिंदी रिव्यू आदि पत्रिकाओं में।

रेडियो पर रूपक, पद्य-नाट्य, वार्तायें व कवितायें आदि प्रसारित करती रहती हूँ।

सम्पादकीय ज्ञान :—छात्र जीवन में महिला कालिज पत्रिका व यूनिवर्सिटी मैगज़ीन का सम्पादन किया था। अध्यापनकाल में 'चिन्तन' नाम से साहित्यिक लेखमाला का सम्पादन किया।

सार्वजनिक जीवन :—कुछ समाज कल्याण संस्थाओं से सम्बन्ध रहा-जैसे नेशनल काउंसिल आफ वीमेन इन इण्डिया की सैक्रेटरी की हैसियत से काम किया। इसके अतिरिक्त लखनऊ युनिवर्सिटी कोर्ट की मेम्बर तीन साल से।

साहित्यिक अनुभव :—साहित्यिक अनुभव के बारे में यहीं कहना है कि लिखकर तो शांति मिलती है पर कभी-कभी साहित्यिक गुटबंदियाँ तथा साहित्यिक षड्यन्त्रों को देख-देखकर बड़ी विरक्ति भी जागती है। फिर भी इतना विश्वास मेरे मन में है कि सारे विकृत रूप अपने आप मिटेंगे और जीवन की सहज गतिमयता अबाध बनी रहेगी। विकृतियों की यह पर्त मानव मन के सहज रूप से अपने आप हट जावेगी। नई पीढ़ी या यों कहें अपने समकालीन साहित्यिक साथियों पर मेरा विश्वास व आस्था है। भावी साहित्यिक योजनायें कोई विशेष नहीं हैं। चाहती हूँ लिखती रहूं और प्रकृति के तत्वों व मानवीय तत्वों से प्रेरणा मिलती रहे।

पता :—कुमारी रमासिंह, लेक्चरर हिन्दी विभाग, महिला कालिज (लखनऊ युनिवर्सिटी) लखनऊ।

श्रीमती राजकुमारी व्यास

जन्म तिथि व स्थान :—भाद्रपद पंचमी संवत् ८२ ग्वालियर, लश्कर, मध्य प्रदेश।

शिक्षा :—प्राइवेट प्रथमा, मध्यमा (विशारद) व साहित्य-रत्न (प्रथम खंड) किया।

साहित्यिक वातावरण :—आत्म प्रेरणा से इस ओर प्रेरित हुई।

निर्दिष्ट दिशा :—साहित्य की निर्दिष्ट दिशा कविता ही है। वैसे कुछ गद्य काव्य एवं कहानियाँ भी लिखती हूँ।

रचनाएँ :—पत्र पत्रिकाओं में मेरे लेख, गद्य काव्य, कविताएँ प्रायः प्रकाशित होती रहती हैं।

सम्पादकीय अनुभव :—सम्पादकीय अनुभव का साधारण परिवार की अनेक अड़चनों में कभी उपयुक्त अवसर व अवकाश चाहते हुए भी न पा सकी।

साहित्यिक योजनाएँ :—अभी तक तो साहित्य की योजनाएँ विशेष लम्बी नहीं है फिर भी कुछ आशा है कि 'अभिशाप' के नाम से एक कविता की पुस्तक एवं एक कहानी की छोटी सी पुस्तक यदि आर्थिक सुविधा हो सकी तो अवश्य छापूंगी।

पता :—व्यास-कुटीर दतिया, (मध्य प्र०)।

श्रीमती राधा देवी गोयनका

श्रीमती राधा देवी जी गोयनका का जीवन अखंड उद्योग एवं अविरल अध्ययन की प्रेरक कहानी है। इनका जन्म एक सुसम्पन्न राजस्थानी घराने में हुआ। उन्होंने बचपन से ही अपने धर्मपरायण श्रद्धालु माता-पिता के सम्पर्क में संयम, श्रद्धा-विश्वास और सहिष्णुता का पाठ सीखा। उनकी शिक्षा साधारणतः गीता रामायण आदि धर्म-ग्रन्थों के पठन-पाठन तक ही सीमित रही। उनके पति सेठ किशनलाल जी गोयनका उदार मन एवं प्रशस्त विचार सींण के आदमी रहे हैं। १६३५ से लेकर आपने प्रथमा से लेकर साहित्यरत्न तक उत्तीर्ण किया और अन्य ग्रन्थों का भी अध्ययन किया।

सेठ किशन लाल जी का योरुप से लौटने पर सामाजिक बहिष्कार किया गया; साथ ही राधा देवी जी को भी इसका शिकार बनना ही पड़ता। श्रीमती राधा देवी जी ने स्वय पर्दे का बहिष्कार कर दिया। और यह भी व्रत लिया कि जिस विवाह में वर-वधु के माता-पिता या वर-वधु स्वयं भी पर्दे में होंगे, उसमें वे शरीक नहीं होंगी। उन्होंने सामाजिक परम्पराओं पर अनेक लेख लिखे है। सभायें आयोजित की हैं। तथा घर-घर जाकर पर्दा प्रथा की बुराइयों को समझाया है।

सार्वजनिक जीवन :—

(१) १६४२ कलकत्ते के अ० भा० पर्दा निवारक सम्मेलन की अध्यक्षा चुनी गई।

(२) १६२० में ही उन्होंने गांधी जी के खादी यज्ञ की दीक्षा ले ली।

(३) १६४२ में भारतीय सेवा सदन की स्थापना की जिसके अंतर्गत

ही अकोला स्थित विद्यामन्दिर भी है। इसी प्रकार निरक्षर महिलाओं में साक्षरता और सर्वसामान्य ज्ञान प्रचार के हेतु मातृमन्दिर की स्थापना भी आपने ही की। श्रीमती राधा देवी जी ने भारतीय सेवा सदन के अन्तर्गत एक और उपयोगी संस्था चालू की जिसका नाम प्राकृतिक चिकित्सा सदन है।

(४) श्रीमती राधा देवी जी के तत्वाधान में ही भारतीय सेवा सदन के अन्तर्गत लेखन-प्रकाशन का काम भी चलता है। संस्था ने प्राकृतिक चिकित्सा पर दो ग्रन्थों का सम्पादन भी किया है।

(५) १९४२ में कुछ सहयोगी विद्वानों की सहायता से उन्होंने विदर्भ-हिन्दी-साहित्य सम्मेलन की स्थापना की जिसकी वे संस्थापिका अध्यक्षा हैं।

(६) वे मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की उपाध्यक्षा, अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति की सदस्या तथा विदर्भ नागपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की सदस्या आदि पदों पर निर्वाचित की गई हैं और उन पदों को गौरवान्वित कर चुकी हैं। इन्दौर साहित्य सम्मेलन के महिला विभाग की वे अध्यक्षा निर्वाचित की गई थीं।

रचनाएँ :—

(१) स्त्री समस्याओं पर समय-समय लिखे गये उनके लेख १९४७ 'नारी समस्या' के नाम से प्रकाशित हुए हैं। इस पुस्तक पर उन्हें राधा मोहन गोकुल जी नाम का पुरस्कार दिया गया।

(२) पिछले दस वर्षों में मध्य प्रदेश विधान सभा की सदस्या की हैसियत से जो ६० भाषण उन्होंने दिये उनका प्रकाशन भी १९५७ में हो गया।—"विधान सभा में मेरे भाषण"—

(३) गोयनका पारितोषिक की व्यवस्था भी आपने की हुई है जिससे प्रांत के लेखक वर्ग को सक्रिय प्रेरणा मिलती है। प्रान्त के लेखकों द्वारा प्रति वर्ष साहित्य, विज्ञान एवं शास्त्र इन तीनों विषयों पर जो पुस्तकें

प्रकाशित होती हैं उनमें क्रमश: एक वर्ष साहित्य के उत्तम ग्रन्थ पर एक वर्ष विज्ञान पर तथा एक वर्ष शास्त्रीय विषय पर ५००) रुपयों का गोयनका पारितोषिक दिया जाता है।

(४) 'मानवता' मासिक के पिछले डेढ़ वर्ष में वे 'गीता-प्रवचन' पर समालोचनात्मक ढंग से लेख लिखती आ रही हैं।

सम्पादकीय ज्ञान :—श्रीमती राधा देवी जी के सम्पादकत्व में मानवता नामक एक उच्च कोटि का मासिक प्रकाशित हो रहा है। इस मासिक में भारतीय संस्कृति का प्रगतिशील दिग्दर्शन एवं सुघर ललित साहित्य प्रकाशित होता रहा है।

उनका समग्र जीव साहित्य सेवा और जनहित में लग रहा है। उनसे अभी साहित्य को अनेक आशाएँ हैं।

पता :—श्रीमती राधा देवी गोयनका, साहित्यरत्न अकोला।

श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

जन्म दिन व स्थान :—श्रीमती रामेश्वरी नेहरू का जन्म मार्गशीर्ष सुदी चतुर्दशी संवत् १९४२ तदनुसार १० दिसम्बर १८८६ को कशमीरी पंडितों के प्रमुख तथा सर्व सम्पन्न घराने में दीवान रायबहादुर राजा नरेन्द्रनाथ के यहाँ हुआ था। इनके पुरखा राजा रणजीत सिंह के सलाहकार थे। बचपन से ही इनका ईश्वर तथा उसकी प्रकृति की ओर विशेष झुकाव है। सत्य एवं सहिष्णुता की मानो वे साकार प्रतिमा हैं। दुखियों को देखकर इनका कलेजा मुंह की ओर आता है।

शिक्षा :—इनकी शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। जैसा कि भारतीय संस्कृति में कहा जाता है कि बालक के प्रथम गुरु माता-पिता ही हैं अतएव इसी से योग्य माता-पिता की छत्रछाया में हुआ। इस प्रकार उन दिनों के गुलाम भारत को गुलामी पूर्ण स्कुली शिक्षा से रामेश्वरी जी दूर ही रहीं।

२२ दिसम्बर १९०२ को इनका पिवाह १६ वर्ष की अवस्था में ही श्री बृजलाल नेहरू के साथ हो गया। पण्डित बृजलाल नेहरू पण्डित मोती लाल नेहरू के भतीजे हैं। आप पंजाब के अकाउन्टेन्ट जनरल के पद से रिटायर हुए और बाद में काश्मीर व जम्मू राज्य के आर्थिक सलाहकार भी रहे।

साहित्य की ओर प्रेरित करने वाला वातावरण :—जब श्रीमती नेहरू ने देखा कि हमारा भारत जो भूतकाल में इतना गौरवशाली रहा है परन्तु आज अपनी गुलामी के कारण अपनी राष्ट्रभाषा ही भूल गया है और चारों ओर बिदेशी भाषा का ही प्रचार किया जा रहा है तो आपने सन् १९०९ में 'स्त्री दर्पण' नाम की हिन्दी पत्रिका को जन्म

दिया। श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ने राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा तथा स्त्रियों के उद्धार के लक्ष्यों को दृष्टि में रख कर १६ वर्ष तक स्त्री-दर्पण पत्रिका का सम्पादन किया।

इस प्रकार हम यह कभी नहीं भूल सकते कि श्रीमती रामेश्वरी नेहरू को हिन्दी से अगाध प्रेम है और वे भारत में सर्वप्रथम हिन्दी पत्रिका की जन्मदात्री हैं। उनकी 'स्त्री दर्पण' नामक पत्रिका से देश की बहिनों में संगठन, राष्ट्रीयता आर्थिक और सामाजिक समस्याओं पर काफी प्रकाश डाला गया। यही यत्रिका उत्तर भारत में इलाहाबाद में अखिल भारतीय महिला परिषद की नींव डालने में सहायक हुई जो आज समस्त भारत में व्याप्त है।

अखिल भारतीय हिन्दी परिषद, कस्तूरबा बालिका विद्यालय, बापू आदर्श विद्यालय, लेडी इर्विन कालिज, अन्ध विद्यालय व बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी जैसी अनेक शैक्षणिक संस्थाएँ हैं जिन्हें साहित्य सेवा के क्षेत्र में काम करने का निर्देशन एवं मार्गदर्शन समय-समय पर श्रीमती रामेश्वरी नेहरू—से प्राप्त होता रहता है।

सार्वजनिक जीवन :—

१. १९३० में श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ने लन्दन जाकर भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व किया।

२. १९३१ में लीग आफ नेशन्स के बुलावे पर जिनेवा गईं। वहां एक मास तक रह कर भारतीय स्त्रियों की राजनैतिक समस्याओं को सुलझाने का यत्न किया।

३. १९३२ में आपने समस्त योरुप का भ्रमण किया। वहाँ इन्होंने विदेशियों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराया।

४. १९३४ में महात्मा गाँधी का अति प्रिय हरिजन-कार्य इनको सौंप दिया गया।

५. १९३५ में हरिजन सेवक संघ की उपप्रधान चुनी गईं। इन्होने हरिजन कार्य में बहुत लग्न और अध्यवसाय से काम किया और एक

अंग्रेजी महिला श्रीमती मार्गरेट् कजिंग के अनुसार आप हरिजन काम में बापू का दायां हाथ थीं।

६. १९३७ में आस्ट्रेलिया महाद्वीप गईं।

७. १९३८ में ठक्कर बापा के साथ मध्य भारत की प्रमुख चौदह रियासतों में हरिजन सेवा के निमित्त प्रयास किया।

८. १९४२ में आपको नजरबन्द रखने का प्रबन्ध किया गया लेकिन आपने नहीं माना और जेलयात्रा को श्रेयस्कर माना।

९. १९४३-४४ में बंगाल के अकाल में आपने धनधान्य व कपड़े आदि एकत्रित करके बड़ी भारी सेवा की।

१०. कस्तूरबा ट्रस्ट का पंजाब हिमाचल प्रदेश और दिल्ली का काम आपके ही त तत्वाधान के चल रहा है।

११. दिसम्बर १९४७ में विभाजन के बाद आप पूज्य बापू के आदेश से स्त्री विभाग की डायरेक्टर बनीं। आपने अनेक आश्रम—विधवा आश्रम, बाल-आश्रम व अपाहिज आश्रम खोले।

१२. १९५० में देहली की जनता की मांग पर पतित स्त्रियों के उद्धार का काम आपने अपने हाथ में लिया। इसी काम के लिए नारी-निकेतन नाम की एक संस्था बना कर आप उसे बड़े सुचारू से चला रही है।

१३. १६ जून १९५४ को श्रीमती नेहरू स्टाकहोम (स्वीडन) में हुई शान्ति परिषद में हिस्सा लेने गई थीं। आपने साथ ही रूस का भी दौरा किया।

आप लगभग ८३ संस्थाओं से सम्बन्धित है।

पता :—८ लोदी स्टेट, नई दिल्ली—३

श्रीमती रामेश्वरी शर्मा

जन्म स्थान व तिथि :—मेरठ १५ जुलाई १९२३।

शिक्षा : - एम० ए०। (आगरा) बी-एड. (दिल्ली)

वातावरण :—बाल्यकाल से ही घर के वातावरण को साहित्यकारों से घिरा हुआ पाया। मेरे पिता और भाई की मृत्यु का कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि १३ वर्ष की आयु में ही भाई की मृत्यु के उपरान्त "भैया से" शीर्षक कविता लिखी। धीरे-धीरे लिखने का शौक बढ़ता गया। कविता के साथ-साथ कहानियां और महिला समाज सम्बन्धी विचारात्मक लेख भी लिखने प्रारम्भ किए। सन् १९४२ के आन्दोलन में भावनाओं से अभिभूत होकर कालिज छोड़ दिया। उसके उपरान्त राष्ट्रीय हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित लेखक व सम्पादक श्री महावीर अधिकारी के जीवन साथी के रूप में मिलने पर लेखन-कला को और भी प्रोत्साहन मिला।

परिवार की साहित्यिक निधियां :—मेरे पति श्री महावीर अधिकारी सुप्रसिद्ध सम्पादक हैं। उनके १. जीवन के मोड़ (कहानी संग्रह) व भारत का चित्रमय इतिहास प्रकाशित हो चुके हैं। अनेक उच्च कोटि के उपन्यासों का वे हिन्दी में अनुवाद भी कर चुके हैं। 'एक ही रास्ता' नामक उपन्यास भी वे लिख चुके हैं। 'मानस लोक से' मनोविज्ञान की पुस्तक प्रेस में है।

विशेष रुचि :—भावात्मक कविता रचना और सामाजिक पहलुओं पर कहानी लिखना।

रचनाएँ :—

१. काली छाया (कहानी संग्रह) १९५४ में इलाहाबाद से

प्रकाशित हुआ।

२. सचित्र शब्द कोष (बच्चों की पुस्तक) विजय प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित।

३. निराला अभिनन्दन ग्रन्थ, पद-चिन्ह, राजधानी के कवि, साहित्य सुमन आदि पुस्तकों में भी लेख और कविताएँ दी हैं।

४. आजकल एक उपन्यास लिख रही हूं।

सम्पादकीय ज्ञान :—कुछ दिन तक 'फिल्म चित्र' नामक पत्रिका महिला पृष्ठ का सम्पादन किया। लगभग दो वर्ष तक नवभारत टाइम्स और एक वर्ष तक इन्डियन न्यूज़ क्रॉनिकल में गाजियाबाद स्थित सम्वाददाता का कार्य किया।

सार्वजनिक जीवन :—१९४७-५० तक गाजियाबाद में महिला कांग्रेस में सक्रिय काम किया। गाज़ियाबाद में वहां की साहित्य संस्था में कुछ काल साहित्य मन्त्री के रूप में काम किया। १९५४-५६ तक कन्या हायर सैकेन्ड्री विद्यालय डि० बोर्ड में प्रधानाचार्य के रूप में कार्य करती रहीं।

पता :—द्वारा श्री महावीर अधिकारी, सम्पादक—'समाज-कल्याण' नई दिल्ली।

श्रीमती रेखा रामानन्द

जन्म तिथि व स्थान :—१६२६, प्रयाग।

शिक्षा :—प्रभाकर, साहित्यरत्न व मैट्रिक।

साहित्य के लिए प्रेरित करने वाला वातावरण :—साहित्य की दिशा के प्रेरक पति श्री रामानन्द 'दोषी'। साहित्य में रुचि प्रारम्भ से रही है।

निर्दिष्ट दिशा :—कविता में विशेष अभिरुचि है।

रचनाएँ :—कविता, कहानी, रूपक तथा स्कैच आदि लिखे हैं जो समय-समय पर रेडियो तथा पत्र पत्रिकाओं में प्रसारित एवं प्रकाशित होते रहे हैं।

पता :—श्रीमती रेखा रामानन्द, ३ भूली भटियारी टैंक, नई दिल्ली

सुश्री लज्जारानी

जन्म स्थान व तिथि :—मेरठ, २४ अक्तूबर १९२४।

शिक्षा :—एम० ए० साहित्य रत्न ।

वातावरण :—साहित्यिक संस्कार। मेरे सब भाई तथा बहिने उच्च शिक्षा प्राप्त होने से प्रोत्साहन मिला ।

किस दिशा में विशेष रुचि है :—पत्रकारिता में ।

रचनाएँ :—मैं केवल लेख आदि लिखती हूँ ।

सम्पादकीय अनुभव :—मैं 'नवचित्रपट' (हिन्दी मासिक) का सम्पादन कर रही हूँ ।

पता :—९२ दरियागंज दिल्ली ।

कुमारी लक्ष्मी मेहरोत्रा

जन्म स्थान तथा तिथि :—फतेहगढ़, २६ अप्रैल १६३३।

तिथि :—हिन्दी साहित्य विषय लेकर प्रयाग विश्वविद्यालय से एम० ए० किया। बी० ए० तक संस्कृत का भी अध्ययन ऐच्छिक विषय के रूप में लेकर किया।

साहित्यिक अभिरुचि को प्रोत्साहन देने वाला वातावरण :— प्रोत्साहन प्रदान करने वाला वातावरण घर में ही मिला।

पूज्य पिता जी श्री भगवती प्रसाद जी मेहरोत्रा का विद्यानुराग, पूज्या माता जी, आदरणीय भ्राताओं तथा साथियों द्वारा मिली प्रेरणा, घर में छोटे से पुस्तकालय की सुविधा, मेरी साहित्यिक आकांक्षा को एक बहुत बड़ा आधार प्रदान करते रहे हैं। साथ ही अत्यन्त तीव्र रूप में अनुभूत भावनाएं अपनी अभिव्यक्ति के लिए मुझे उकसाती रही हैं।

परिवार की अन्य साहित्यिक बिभूतियाँ :—पूज्य पिता श्री भगवती प्रसाद मेहरोत्रा जिनकी 'बनारस के व्यवसायी' नामक एक पुस्तक तथा दर्शन, धर्म, यात्रा इत्यादि से सम्बन्धित अनेक लेख प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में निकल चुके हैं। ज्येष्ठ भ्राता श्री बैकुण्ठनाथ मेहरोत्रा जिनकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। मौन-निमंत्रण। (कहानी संग्रह) धरती और धुंआ (कहानी संग्रह) ऊँचे और ऊँचे (लघु कथा संग्रह) बड़ी भाभी श्रीमती शान्ति मेहरोत्रा एम० ए० (श्री बैकुण्ठनाथ जी की पत्नी) जिन्हें हिन्दी साहित्य की सुविख्यात कवियित्री होने का सौभाग्य प्राप्त है। इनके कई कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

छोटे भाई श्री त्रिलोकीनाथ मेहरोत्रा भी लेख तथा कहानियाँ लिखने में रुचि रखते हैं। इनके अतिरिक्त अन्य सभी छोटे भाई बहिन

तथा भतीजा आलोक व छोटी भाभी भी साहित्यिक अभिरुचि रखती है।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें आपकी विशेष रुचि है :—कथा साहित्य मुझे बहुत प्रिय है। अपने आसपास का वातावरण, उसकी छोटी से छोटी विशेषता जो अनुभूति की सीमा में बंध सके, मुझे अभिव्यक्त कर देने का निमंत्रण सा दिया करती है और अपने सम्पर्क में आने वाले चरित्रों का सूक्ष्म मनन व अध्ययन करने की तीव्र इच्छा मन में रहती है। कहानियों, रेखाचित्रों, लघु कथाओं तथा निबन्धों में मन के भावों को रूप देती रहना चाहती हूँ।

साहित्यिक रचनाएँ व कृतियाँ :—प्रकाशित व अप्रकाशित—लगभग सभी लब्ध प्रतिष्ठ पत्र-पत्रिकाओं में कहानियाँ, रेखाचित्र, लघु कथा तथा निबन्ध इत्यादि प्रकाशित होते हैं। कहानी संग्रह अभी प्रकाशित नहीं हुआ है।

सम्पादकीय अनुभव अथवा विशेषता :—इस दिशा में अभी अवसर नहीं मिला है।

सार्वजनिक जीवन :—साहित्यिक संस्थाओं की गोष्ठियों में विशेष रुचि है। अखिल भारतीय रेडियो के इलाहाबाद केन्द्र से प्रसारित होने वाले हिन्दी तथा संस्कृत नाटकों में भाग लिया करती हूँ। स्त्रियों के कार्यक्रम में आजकल Compere का कार्य कर रही हूं। रेडियो के लिए Scripts आदि देती हूं।

वर्तमान पता तथा भावी साहित्य सम्बन्धी योजनाएँ :—१७ बी मोतीलाल नेहरू, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)

हिन्दी गद्य साहित्य के कथात्मक अंश को पाठकों के मन मस्तिष्क को प्रभावित करने का एक अत्यन्त शक्तिशाली माध्यम मानती हूं। इसी दिशा में अपने प्रयत्नों द्वारा सफल प्रभावशाली कृतियों को जन्म देना चाहती हूं।

कुमारी लीला अवस्थी

जन्म स्थान व तिथि :—आवाज़ (ईरान), ८ जून १९२३ ।

शिक्षा :—एम० ए० (हिन्दी) ।

साहित्य की ओर प्रेरित करने वाला वातावरण :—प्रारम्भिक काल में मैंने पड़ोस में इकट्ठी बुढ़ियों की कहानियाँ, किस्से आदि सुनकर लिखना शुरू किया जो यदा कदा स्कूल की पत्रिका में छपता रहा। उसमें से एक कहानी को स्कूल के अध्यापक ने दिल्ली के वीर अर्जुन में १९३८ में छपवाया था, जिससे ऐसा लगा कि हम जो भी लिखते हैं वह छप भी सकता है। १९४९ में रेडियो में काम करते हुए साहित्य के निकट सम्पर्क में आना पड़ा तब से इस दिशा में अग्रसर होने का वातावरण बराबर बनता गया।

परिवार की साहित्यिक निधि :—नहीं ।

रचनाएँ :—प्रकाशित—दुबके फल (कहानी-संग्रह)' रेवा-प्रांगण (रेडियों रूपक-संग्रह)। (प्रकाशन पथ पर) आँसू की क्यारी (कहानी संग्रह)।

सम्पादन का अनुभ :—नहीं ।

सार्वजनिक जीवन :—१९०७ में दिल्ली स्कूल आफ़ सोशल वर्क द्वारा Juvenile Delinquency और Traffic in Women सम्बन्धी सामाजिक शाप का मद्रास, उटोकमंड, बैंगलोर मैसूर, बम्बई, कानपुर, लखनऊ, दिल्ली—क्षेत्रों में घूमकर परिस्थिति का अध्ययन किया।

१९४८ में देश के विभाजन के बाद जो परिस्थितियाँ पाकिस्तान में उत्पन्न हुई उसमें कार्य किया।

कुरु क्षेत्र कैंप की योजना में सहयोग दिया।

लाहौर जाकर Non Muslim women's cemp में camp commandent की हैसियत से हिन्दू महिलाओं को भारत भेजने का काम किया। दिल्ली में और आसपास के क्षेत्र से मुसलिम महिलाओं को पाकिस्तान भेजने का भी कार्य किया।

वर्तमान योजना :—एक उपन्यास लिख रही हूँ एवं एक रंगमंच पर खेला जाने योग्य सामाजिक नाटक लिखने की तैयारी कर रही हूँ। हिन्दी साहित्य में अनुसंधान कार्य करूंगी।

पता :—आकाशवाणी, नागपुर।

श्रीमती लीला प्रकाश

जन्म स्थान तथा तिथि :—१८ मार्च १९१८-बरेली में जन्म।

शिक्षा :—पिता जी सरकारी—गजटेड अफसर रहे सो बराबर ट्रान्सफ़र होता रहा। माँ के मन में चाव था कि लड़कियों को भी लड़कों के बराबर ही शिक्षा दी जावे। आठ भाई बहिन हैं और सभी को बी० ए०, एम० ए० कराया, सो मैंने भी १९३८ में बनारस से बी० ए० किया।

साहित्य की ओर प्रेरित करने वाला वातावरण :—बचपन से ही पुस्तकें पढ़ने की ओर रुचि थी, माँ-बाप दोनों ही को साहित्य व संगीत से प्रेम था। जिसका फल यह हुआ कि घर में एक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक वातावरण सदैव रहा। माँ के मन में अपने बच्चों को अच्छा और योग्य बनाने की इच्छा इतनी बलवती थी कि लड़के-लड़की का भेद वहाँ न था। और एक साथ एक सी शिक्षा-दीक्षा पा कर हम सब बड़े हुए। संगीत चित्र-कला, साहित्य इन सभी की ओर परिवार के सदस्यों का रूझान था। समारोहो में विशेष प्रोग्राम सब भाई बहिन सफलता पूर्वक करते थे। माँ को भी पढ़ने लिखने से शौक था। पर बचपन में हिन्दी, उर्दू का ही ज्ञान कराया गया ताकि जीवन में व्यवहार में आवे। पर उन्होंने जब मेरा विवाह हो चुका था और मेरे पास एक नन्ही सी बालिका भी आ चुकी थी तब पढ़ना आरम्भ करके दो तीन वर्ष में मैट्रिक कर लिया।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें आपकी अभिरुचि है :—मुझे कहानी लिखने का चाव था, व समय समय पर मेरी कहानी सरिता (दिल्ली) रानी (कलकत्ता) चित्रा (कलकत्ता) विशाल भारत (कलकत्ता

नव भारत टाइम्स में छपी। आज भी उसी ओर सब से अधिक दिलचस्पी है पर आरसी के कार्य भार से लिख नहीं पाती। जो भी लिखती हूं, उस आरसी के लिए ही रख लेती हूं। । मुझे बुनाई के लेख लिखने में भी रुचि है और इस विषय पर मेरे लेख धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, रानी, माला, नव भारत टाइम्स आदि, में छपते ही रहते हैं। उस विषय की मैंने दो पुस्तकें भी छपाई है—बुनाई के नमूने, नई बुनाई।

सम्पादकीय ज्ञान :—'आरसी' का जन्म अक्तूबर १९५२ में हुआ था। इस विषय का कोई ज्ञान न था पर इन—वर्षों में बहुत कुछ ज्ञानार्जन किया। इस क्षेत्र में आकर निराशा ही हुई। यहां यश कम अपयश ज्यादा है। इस विषय पर यहाँ थोड़े में क्या कहा जा सकता है। और फिर अभी तो मुझे बहुत कुछ सीखना है। अनुभवों की कहानी तो इतने छोटे में लिखी भी नहीं जा सकती।

सार्वजनिक जीवन :—इस दिशा में जो बन पड़ता है करती हूँ। वास्तव में तो भारतीय नारी के जागरण के हेतु जो भी हो सकेगा करती रहूँगी। मध्यवर्ग की नारी को श्रम-शीला बनाने के उद्देश्य में रत हूँ। आज आवश्यकता है कि हम अपने पैरों पर खड़ी होना सीखें पर इसका अर्थ यह नहीं कि अपने घर व बच्चों को तिलांजलि देकर अपना व्यक्तित्व बनाएं। इसी के समन्वय को समझाने में लगी हूँ व लगी रहूंगी। जीवन को जीने लायक बनाया जाय, भले ही साधन परिमित क्यों न हों।

वर्तमान पता व भावी साहित्यिक योजनाएं :—सम्पादिका—'आरसी' २ वाकर टाउन, सिकन्दराबाद।

भविष्य में पुस्तक प्रकाशन आरम्भ करने का विचार है। अपना कहानी संग्रह भी निकाल सकूंगी, ऐसी आशा है।

श्रीमती वसन्तप्रभा

मेरा जन्म १६२२ में पंजाब के एक सम्भ्रान्त परिवार में जिला झंग में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा (बिलोचिस्तान) चमन में और कोइटा में हुई। इसके पश्चात् मैंने लाहौर से शिक्षा ग्रहण की।

साहित्य में रुचि मेरी बचपन से ही है। १६३६ ई० में मेरी पहली कहानी वीर मिलाप में छपी थी और इसके प्रकाशित होने के पश्चात् मैंने नियमित रूप से लिखा है। गद्य गीत, कहानियां, लेख आदि— समय-समय पर पंजाव की पत्रिकाओं प्रकाशित होते रहे। लेकिन कुछ समय तक मेरा लिखना छूट गया। १९५१ में मैंने फिर कलम उठाया है। यह प्रेरणा मुझे अपने पति द्वारा ही मिली है।

इधर रेडियो पर रूपक, कहानियां, रोचक निबन्ध नियमित रूप से प्रसारित होते रहते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में भी मेरी रचनाएं छपती रहती हैं।

अब तक मैंने दो उपन्यास प्रेस में दे रखे हैं। तीसरे की तैयारी में हूं।

पता :—१४ ई वैस्ट निज़ामुद्दीन नई दिल्ली

सुश्री विपुलादेवी

आयु—२८-२९ वर्ष।

वातावरण—एक अच्छे मध्यम श्रेणी के उच्च शिक्षित तथा साहित्य-रसिक परिवार में; असाधारण शान्तिमय घरेलू वातावरण में पालन-पोषण पाया। अवकाश के क्षणों का सदुपयोग तथा अपनी रुचि की पुष्टि करने लिए साहित्य सेवा की।

निर्दिष्ट दिशा—प्रारम्भ में कहानियाँ अधिक लिखी जिसमें राजनैतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, समस्यामूलक और मनोरंजन-प्रधान आदि हर प्रकार की कहानियाँ हैं फिर उपन्यास एकांकी और निबन्ध भी लिखे।

रचनाएँ—पिछले चोदह पन्द्रह वर्षों में सरस्वती, मंजरी, चाँद, अमृत पत्रिका, साप्ताहिक हिन्दुस्तान आदि पत्र-पत्रिकाओं में, सैकड़ों निबन्ध, कहानियाँ और एकांकी प्रकाशित हुए। उप०अप्रकाशित—उनके शीघ्र प्रकाशित होने की आशा। कई कहानी-संग्रह भी निकलने को हैं।

सम्पादकीय ज्ञान व अनुभव—बचपन में एक हस्तलिखित साप्ताहिक पत्र 'अवकाश' का सम्पादन।

सार्वजनिक जीवन—लगभग नहीं के बराबर। किन्तु नागरिक और ग्रामीण दोनों प्रकार के जीवनों से घनिष्ट सम्पर्क रखने के कारण उनकी समस्याओं का ज्ञान तथा रुचि है।

भावी योजनाएँ—

(१) पूर्व निर्मित योजना के आधार पर उपन्यास रचना।

(२) बालोपयोगी साहित्य की रचना।

(३) साहित्य-सेवियों की सेवा के लिए एक सबल संस्था का

निर्माण ।

(४) महिलाओं के लिए—उनकी विशिष्ट रुचियों की पूर्ति की पृष्ठ भूमि का निर्माण के लिए एक सबल संस्था का निर्माण कर सकने वाली एक शक्तिशाली संस्था की स्थापना ।

(५) और इसके साथ जो कुछ हो सके तथा जो समय के अनुसार आवश्यक हो वह सब कार्य ।

श्रीमती विमल वेद

[श्रीमती विमल बहन की साहित्य-साधना के प्रति मेरी प्रगाढ़ व्यक्तिगत आस्था है। उनकी लेखनी में वह आकर्षण है जो पाठक को अनायास अपनी ओर खींच लेता है। उनकी कहानियों की एक टैकनीक है जिसे मौलिक कहा जा सकता। विमल बहिन से मुझे अभी बहुत कुछ साहित्यक आशाएँ है ।—सम्पादक]

जन्म-स्थान व तिथि—२६ जुलाई १९३३ को कोटा में हुआ।

शिक्षा—राजपूताना विश्वविद्यालय से बी० ए०।

लिखने का शौक बचपन से ही है। सन् ५४ से लिखना शुरू किया। विवाह से 'विमला बांठिया' के नाम से लिखती थीं। पश्चात् कुछ समय तक 'विमल भारती' के नाम से और अब विमल वेद के नाम लिखती हूँ। हिन्दी के प्रमुख पत्रों में तथा आकाशवाणी के दिल्ली व बम्बई केन्द्रों से मेरी रचनाएँ प्रसारित प्रकाशित हुई हैं। उपन्यास 'ज्योति-किरण' राजहंस दिल्ली निकाल रहे हैं। दूसरा 'अश्रुमाल' भी शायद वहीं से निकले। तीसरा व प्रथम युगान्तर तथा दो कहानी-संग्रह 'नवयुग' व 'धूल के गुब्बार' अभी मेरे ही पास हैं। एक नया उपन्यास 'भोर का तारा' लिख रही हूँ। भविष्य में कभी साहित्यिक क्षेत्र में आ सकूं यही मेरी तमन्ना है। वैसे पतिदेव के फिलमस् लाइन में होने के कारण फिलमस् की ओर भी रुचि है। हो सकता है निकट भविष्य में मेरी कोई कहानी Picturise हो जाये। फिल्म के लिए मैंने चार प्ले लिखे हैं।

मेरे ताऊ श्री कन्हैयालाल बांठिया हिन्दी बहीखाता पद्धति के सिद्धहस्त लेखक हैं। व बड़े भाई बी० एम० बांठिया हिन्दुस्तान दैनिक

के कमर्शियल सैक्शन के उपसम्पादक हैं। पिता श्री कल्याणमल बाठिया कोटा स्टेट के रिटायर्ड अकाउटेंट जनरल व अभी कोटा दरबार के प्राइवेट सैक्रेटरी हैं।

अपने छः भाई बहनों में सबसे छोटी हूँ। मेरे पति विनय वेद 'फिलिमस्तान' में प्रोडक्शन एग्जीक्यूटिव हैं।

सार्वजनिक जीवन में मुझे कोई रुचि नहीं है। मैं कहीं आती जाती भी नहीं हूं। हां, अभिनय या संगीत में विशेष रुचि है।

परिवार में सभी की साहित्यिक रुचि के होने कारण स्वभावतः मुझमें भी कलम के प्रति मोह पैदा हो गया, वैसे किसी लेखक विशेष या व्यक्ति विशेष का मुझ पर कोई प्रभाव नहीं है।

सामाजिक क्षेत्र भी नहीं चुना है, यों मनोविज्ञान में भी रुचि है और उसका प्रस्फुटन 'अश्रु-माल' में हुआ है। प्रथम पुस्तक के होने के कारण मुझे इसका अच्छा अवसर मिला।

कहानियों की एक टैकनीक लेकर चली हूं। मैं उसमें बहुत कम समय बांधने के पक्ष में हूँ। मेरी सभी कहानियां इसी टैकनीक को लेकर चली हैं। एक विशेषता मैंने और पाई है कि मै साधारण से मिलकर कभ नहीं चल सकी।

'वाद' विशेष से मुझे मोह नहीं, न राजनैतिक जीवन में ही रुचि है फिर भी उसकी उपेक्षा नहीं हो सकी। 'युगान्तर' समाजवाद का पोषक है व 'ज्योति किरण' में आज के तथाकथित राजनैतिक नेताओं का भंडाफोड़ है।

मेरी रचनाओं में एक कमी और है जो मुझे भी महसूस होती है। उनमें एकतरफा वकालत ज्यादा है। स्त्री को मैंने बहुत उच्च रूप में देखा है, पुरुष को नहीं। वह कमी 'अश्रु माल' में नहीं है। उसमें केवल तीन पात्र हैं। 'मैं' 'अनिल' और 'विजय' और तीनों ही अपने आसन पर उच्चानिष्ठ हैं।

मनोरंजन की मैं हामी हूँ, फिर भी हास्य मेरी रचनाओं में बहुत

कम उभरा है। मुझे नारी का कोमल अधिक प्रिय है।

साहित्यिक मैं अपने को नहीं मानती। जिस दिन सभी रचनाएं पाठकों के हाथ में आए, उनका मन्तव्य जानूं तभी कुछ कह सकूंगी। यों भी अपने लिए लिखना बड़ा कठिन है।

फरवरी के 'आरसी' अंक में एक लेख है—'हिन्दी की कहानी लेखिकाएँ' उसी में थोड़ा सा 'विमला बाठिया' के बारे में भी लिखा है।

पता—११ चम्पा गली बम्बई-२

सुश्री विद्या गुप्त

जन्म व तिथि—मेरा जन्म अनूपशहर (जिला बुलन्दशहर) में हुआ था।

प्रेरणा प्रदायक वातावरण—जीवन की विषम परिस्थितियों ने ही अध्ययन की प्रेरणा दी और कभी-कभी लिखने की।

परिवार की अन्य साहित्यिक निधियां—मेरे अग्रज श्री प्रकाशचन्द्र गुप्त एक ख्याति प्राप्त आलोचक हैं।

रचनाएं—मैंने गद्य गीत, एकांकी, कविताएं और आलोचनात्मक निबन्ध सभी किसी न किसी मात्रा में लिखे हैं। कभी-कभी प्रकाशनार्थ भी भेजें हैं।

सार्वजनिक जीवन—राजनीति से बहुत दूर हूं।

पता—न्यू क्वाटर्स, काशी विश्वविद्यालय वाराणसी।

कुमारी विद्यावती "मालविका"

जन्म-स्थान व तिथि—उज्जैन, १४. ४. २१।

शिक्षा—प्रभाकर (पंजाब यूनिवर्सिटी), साहित्यरत्न (हि० सा० सम्मेलन), एम० ए० (आगरा वि० वि०), ड्राइंग इन्टरमीडिएट (जे० जे० स्कूल आफ आर्ट बम्बई)।

प्रेरणा-प्रदायक वातावरण—बचपन से ही साहित्य सेवा की स्वतः प्रेरणा।

साहित्यिक निधियां—१. मेरे पितामह श्री रामनाथसिंह प्रसिद्ध शायर थे।

२. पूज्य पिता जी श्री श्यामचरणसिंह ने १२ पुस्तकें लिखी हैं जिनका विवरण और जीवन चरित्र "मिश्र बन्धु विनोद" में दिया है।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें विशेष अभिरुचि है—कविता, कहानी, नाटक आदि सभी दिशाओं एवं क्षेत्रों में मेरी अभिरुचि है। चित्रकला से सर्वाधिक प्रेम है।

प्रकाशित रचनाएं—

(१) बुद्ध-अर्चना (कविता-संग्रह)।
(२) पूर्णिमा (,, ,,)
(३) कामना (,, ,,)
(४) श्रद्धा के फूल (कहानी-संग्रह)।
(५) नारी-हृदय (,, ,,)
(६) आदर्श बौद्ध महिलाएं (जीवन चरित्र)
(७) बुद्ध चित्रावली (चित्रमय बुद्ध जीवनी)
(८) बौद्ध कला कृतियां (पुरातत्व)

सम्पादकीय ज्ञान—

मैं निम्नलिखित पत्रों की सह-सम्पादिका हूँ :—

(१) दीदी (मासिक-प्रयाग) ५ वर्ष से।

(२) मानव-जीवन (पाक्षिक-फैजाबाद) २ वर्ष से।

(३) राजपूत-सन्देश (मासिक, जोधपुर) १ वर्ष से।

वर्तमान कार्य—अध्यापन कार्य।

भावी योजनाएं—साहित्य सेवा करने का ही कार्य है।

पता—द्वारा—भिक्षु धर्म-रक्षित, सारनाथ, वाराणसी।

श्रीमती विद्यावती मिश्र

जन्मस्थान तिथि—गौर (पोखरायां) जिला कानपुर। पिता का नाम—पं० आत्माराम द्विवेदी। पति का नाम—स्व० पं० मदनमोहन मिश्र। १ जुलाई १९१८।

वातावरण—बड़े भाई पं० कैलाशनाथ प्रियदर्शी सुन्दर कवि और पत्रकार हैं।

बड़े देवर श्री दयाशंकर मिश्र कहानी लेखक तथा हिन्दी परिषद संस्था के संस्थापक और संचालक हैं।

रुचि—मेरी रुचि केवल कविता की दिशा में है। वैसे संस्मरण तथा गद्य गीत भी अच्छे लगते हैं।

शिक्षा—घर पर ही। स्कूल का दरवाजा भी नहीं देखा।

रचनाएं—१. ज्योति, २. प्रतीक्षा, ३. श्रद्धा, ४. कठोपनिषद का पद्यानुवाद (प्रेस में)।

इसके अतिरिक्त बहुसंख्यक संगीत, रूपक तथा बाल-साहित्य, अवधी रचनाएं, सामयिक रचनाएं अप्रकाशित पड़ी हैं।

सम्पादकीय ज्ञान—सम्पादकीय ज्ञान या किसी प्रकार की अन्य नौकरी का अनुभव नहीं है।

पारिवारिक—सास-ससुर, देवर-जेठ आदि के साथ लखनऊ में स्थायी रूप से रहती हूँ। किसी प्रकार की आर्थिक कठिनाई नहीं है। अपनी कविता पुस्तकें स्वयं ही प्रकाशित कराई है, तथा आगे भी यही क्रम बनाए रखने की योजना है। परिवार में किसी प्रकार का अभाव नहीं है।

पता—दुर्विजयगंज, धान मण्डी, लखनऊ

सुश्री विद्या सब्बरवाल

(मेरा वास्तविक नाम माया सब्बरवाल है पर प्रचलन में विद्या है ।)

जन्म स्थान व तिथि :—मेरा जन्म १६ अप्रैल १६३४ को पूर्वी पंजाब में रोहतक जिले के रोहद नामक ग्राम में हुआ था किन्तु पिता जी प्रारम्भ से ही देहली राज्य में सामाजिक कार्यकर्ता रहे हैं । अतः लगभग २१ वर्ष पूर्व हो देहली राज्य के नरेला कस्बे में हम आ गए थे ।

शिक्षा :—चतुर्थ कक्षा तक मैंने नरेले में शिक्षा पाई । पिता जी के जेल चले जाने के कारण दो वर्ष व्यर्थ गए । किन्तु अन्ततोगत्वा भाग्य ने साथ दिया, और वनस्थली विद्यापीठ जैसे शिक्षा केन्द्र में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ । वहाँ की पंचमुखी शिक्षा ने जीवन में नव संचार कर दिया । वहीं रहते हुए राजपूताना विश्व-विद्यालय से मैंने मैट्रिक, एफ० ए० और बी० ए० पास किया । तत्पश्चात बी० टी० पास करने के लिए मुझे विमेन्स ट्रेनिंग कालिज आगरा में जाना पड़ा । अब विवश होकर परिस्थितियों के आगे सिर झुकाना पड़ रहा है और सरकारी नौकरी करनी पड़ रही है । किन्तु अब भी हिन्दी में एम० ए० करना चाहती हूँ अवसर मिलते ही अवश्य करूँगी । वनस्थली विद्यापीठ में रहते हुए मैंने कला से प्रेम करना सीखा । कदाचित इसी कारण उस जीवन काल ने मुझे चित्रकला-डिप्लोमा की परीक्षा जयपुर स्कूल आफ आर्ट से देने का अवसर भी मिला । और सबसे अधिक हर्ष की बात यह रही कि परीक्षा में बैठने वाले सब लड़कों के बोच मुझे प्रथम आने का अवसर प्राप्त हुआ । इसी काल में काव्य ने भी मुझे आकृष्ठ किया ।

साहित्यिक प्रेरणा प्रदायक वातावरण :—साहित्यिक प्रेरणा वनस्थली विद्यापीठ के वातावरण से ही मिली। वहाँ समय-समय पर होने वाली साहित्यिक गोष्ठियों ने और उससे भी अधिक हमारे स्वर्गीय डाक्टर सुधीन्द्र दादा के कवि हृदय, ने उनकी मार्मिक कविताओं ने, एक ऐसा वातावरण प्रस्तुत किया कि मुझे कुछ न कुछ लिखने को विवश होना पड़ा। उनकी कविताएं सुनकर इच्छा होती कि मैं भी कुछ लिखूं। और धीरे-धीरे अवकाश पाकर मूक लेखनी एवं तूलिका चल ही तो पड़ी।

प्रथम कविता की पंक्तियाँ एक मार्मिक वेदना से टकराकर फूट पड़ी थी। यह कविता "स्वर्गीय बापू के प्रति श्रद्धांजलि" थी! यह हमारे बापू के निधन पर लिखी गई थी, तबसे निराशा, दु:खजीवन के प्रति अनास्था आदि मेरी कविताओं के संबल बन गए, धीरे-धीरे कालिजमें आए वहां पर रहस्यवाद एवं छायावाद संबंधी एक नवीन प्रकार का साहित्य पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। इसी के साथ बौद्ध-दर्शन का भी मैंने कुछ अध्ययन किया। टैगोर की गीतांजलि बड़ी अच्छी लगी। अन्य लेखकों की भी गद्य-काव्य एवं साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ीं। मस्तिष्क एवं हृदय नवीन खाद्य सामग्री पाकर खुश हुए। महादेवी की दीपशिखा की लेखन-पद्धति, भाव, भाषा, माधुर्य, चित्रों आदि सभी ओर से सुन्दर जान पड़ी! कदाचित इसी नवीन प्रेरणा से प्रेरित होकर मैंने उसी प्रकार की दो तीन सचित्र कविताएं लिखीं किन्तु कालिज की शिक्षा ने उस प्रयोग को आगे नहीं बढ़ने दिया और विवश होकर मुझे अपना मस्तिष्क उधर से हटाकर कोर्स की शुष्क नीरस पुस्तकों में लगाना पड़ा।

रचनाएँ :—किन्तु इन विभिन्न समयों पर परिस्थितियों में जो कुछ भी लिखा गया था वह सब कुछ अपनी उसी स्थिति में कापियों में बन्द पड़ा रहा। मैंने कभी प्रकाशित कराने का प्रयास नहीं किया। हाँ दो चार लेख अवश्य दो एक पत्र पत्रिकाओं में छपे हैं—वे भी मेरे

श्रद्धेय प्रोफेसर रामेश्वरप्रसाद जी गुप्त की कृपा से। उन्होंने इस कष्ट से मुझे बचाकर स्वयं ही भेजने आदि का कार्य किया। इसके लिये मैं उनकी बहुत आभारी हूँ।

मेरी विशेष अभिरुचि:—अभी तक कविता की ओर विशेष आकर्षण रहा है किन्तु साथ ही साथ गद्य-काव्य निबन्ध आदि भी मेरा आंचल पकड़े चले हैं। इच्छा है ललितकला का सहारा लेकर साहित्यिक क्षेत्र में उसकी सेवा करते हुए आगे बढ़ती जाऊँ। शेष भविष्य में क्या दिशा होगी, क्या रुचि होगी—यह सब आने वाला भविष्य ही बतायेगा।

सम्पादकीय अनुभवः—हां, कालिज के दिनों में कुछ सम्पादकीय ज्ञान हुआ था जिसे मैं सिन्धु में बिन्दु के समान समझती हूँ......

'कलिका' नामक एक छोटे संग्रह में कुछ गद्य-कव्य पड़े हैं। 'छाया' नामक संग्रह में कुछ कविताएं हैं, और शेष फुटकर कविताएँ अपने बिखरे रूप में हैं। उन्हें जमाने का प्रयास करूंगी। बहुत-सी रचनाओं का पता नहीं कहां गई।

पता:—गांधी-आश्रम, नरेला (दिल्ली)। +

+ स्थानाभाव के कारण संक्षिप्त किया गया—सम्पादक।

श्रीमती वेदान्ती महर्षि

मेरा जन्म १९२२ में २० जुलई को देहली के एक धनी परिवार में हुआ था। चार भाइयों के बीच अकेली बहिन होने के कारण माता-पिता का प्यार भी भरपूर मिला। इस प्यार से ऊपर भी कुछ है, तब मैं यह नहीं जानती थी। अचानक ही माँ की मृत्यु ने इस प्यार को हल्का कर दिया। दस वर्ष की अवस्था में मैंने पहली बार जाना कि संसार में दुख भी है। मेरा दिल माँ को पुकारता और बस उसी पुकारने में मन की तड़पन कागज पर कविता के रूप में बह निकली। पिता जी ने इस कविता को देखा तो आश्चर्य-चकित होकर पूछ बैठे—'यह तूने लिखी है?' बस यहीं से साहित्य का प्रादुर्भाव मेरे अन्तर में हुआ।

मेरे पिता जी उर्दू के अच्छे शायर हैं। उनकी यह प्रतिभा प्रकाश में नहीं आयी। वे कविताएँ लिख-लिखकर अपने मित्रों को सुनाते और उनकी वाहवाही सुनकर ही संतोष कर लेते। उन्हें कहानियाँ और उपन्यास पढ़ने का बहुत ही शौक है और इसीलिए एक अच्छी खासी लाइब्रेरी घर पर ही बन गई है। मेरी पढ़ने लिखने में विशेष अभिरुचि थी पर पिता जी लड़कियों को पढ़ाने के खिलाफ थे। मेरे सातवीं कक्षा में आने के कुछ दिन बाद ही मुझे स्कूल से उठा लिया गया। मैंने अपने भाई से उर्दू पढ़ना शुरू कर दिया और थोड़े ही दिन में उर्दू का अच्छा अभ्यास कर लिया। एक दिन मेरे हाथ में उर्दू की किताब देखकर पिता जी आश्चर्यचकित रह गये कि मैंने यह कब और कैसे सीखी।

घर में किसी की भली या बुरी आदत देखी और मैंने कविता घड़ दी। इसी प्रारम्भ से मुझे कविता लिखने का अभ्यास हो गया। उधर

मैं शरद के उपन्यासों से भी बेहद प्रभावित हुई। वे अन्तर तक को छू जाते थे और बिल्कुल रोज़मर्रा के जीवन के इतने सन्निकट लगते। उनकी पारिवारिक कहानियाँ मुझे बहुत अच्छी लगतीं और मेरी इच्छा होती कि मैं भी ऐसा कुछ लिख सकूँ। अपने मन पर विश्वास न होने के कारण दिल की इस नादानी पर मुझे हँसी आ जाती।

१९४२ में मेरा विवाह हो गया। पतिगृह में आकर मैंने अपने को संतुष्ट पाया। यहाँ आकर मैंने पंजाब से हिन्दी की परीक्षा दे डाली, सैकिण्ड डिवीजन मिला, तो पढ़ने का साहस बढ़ा, पर परिस्थितियाँ फिर ऐसी आई कि पढ़ने लिखने और परीक्षा देने का अवसर ही न आ सका। मेरी लेखन-शक्ति को देख कर मेरे पति देव ने मुझे प्रोत्साहित किया और मैंने एक छोटी सी कहानी "भाग्य का लेख" लिख डाली। सौभाग्य से बम्बई आते समय 'अरुण' के सम्पादक से रेल में ही परिचय हुआ; मैने उन्हें कहानी सुनाई और उन्होंने मेरी उस कहानी को छाप डाला। इस प्रकार मेरी पहली कहानी प्रकाश में आई। इसके बाद हमारे जाति-भाई राजेन्द्र जब इस क्षेत्र में आये तो उनसे मुझे प्रोत्साहन मिला। उन्हीं के द्वारा कई सम्पादकों और लेखकों से परिचय हुआ। इसके लिए मैं उनकी बहुत आभारी हूँ। मेरी निम्नलिखित कहानियाँ प्रकाश में आ चुकी हैं :—

परीक्षा, मन्दिर (धर्मयुग), हम-सफ़र (समाज), मानव और पशु, नारी और प्यार, जुलूस और जनाजा, वेश्या की लड़की, बी०. ए०. की डिग्री, बेटों का बाप, (आरसी), बंधन, गरीब की चाह।

आजकल मेरा 'रजनी' नाम का उपन्यास समाप्ति पर है। मुझे इसमें कहाँ तक सफलता मिली है यह तो छपने पर ही पता चलेगा।

मुझे अपने पर पूर्ण विश्वास नहीं हो पाया है कि मैं अच्छा लिख सकती हूं। साहित्य को मैं बहुत ऊँची दृष्टि से देखती हूं। अच्छा साहित्य ही देश की उन्नति है और हमारे देश की सभ्यता का परिचायक है। इसे गन्दा करना देश-द्रोह मानती हूँ, साहित्य पेट का भूख

मिटाने के लिये नहीं है। इसमें तो सेवा करने की भावना से आना चाहिए। साहित्यकार जब सृजन करता है तो उसकी आत्मा की आवाज उठती है। उसी आत्मा की आवाज को सुनकर जो कुछ लिखा जायेगा वही प्रभावोत्पादक अनूठी रचना होगी, ऐसा मेरा विश्वास है कोरी कल्पना साहित्यकार को और उसके साहित्य को गहराई तक नहीं जाने देती। असली सोने में थोड़ा सा खोट तो खप जाता है पर असली सोने में ज्यादा खोट उसकी भी कीमत को घटा देता है। साहित्यकार सच्चाई को लेकर कल्पना की उड़ाने भरेगा तो एक दिन उसकी कल्पना भी सच्चा रूप धारण कर लेगी।

नई जगहों, नए लोगों और उनके नए रहन-सहनों को देखने में मुझे बड़ा आनन्द आता है। साथ ही उसमें लाभ भी निहित रहता है। न जाने किस रूप में नारायण मिल जावें—न जाने कितना मूल्यवान पात्र मेरी रचना के लिए कहाँ मिल जावें। आँखों से देखी घटना पर मैं अधिक विश्वास करती हूँ। मेरा सेवा-क्षेत्र घर तो है ही, क्योंकि घर से अच्छा क्षेत्र सेवा करने के लिए और स्त्री को हो भी क्या सकता है। घर से जितना भी समय बचता है, उस समय को मैं साहित्य द्वारा देश की सेवा में लगाना चाहती हूँ।

मेरा स्थायी पता:—श्रीमती वेदान्ती महर्षि द्वारा श्री गोविन्द-महर्षि, कैमरा मैंन, सर्वोदय भवन, गोखले रोड, बी० बी० दादर, बम्बई।

सुश्री शकुन्तला कुमारी 'रेणु'

जन्मस्थान व तिथि—झालरा पाटन (राजस्थान), २४ जून १६२१

माता-पिता—सौ० रत्न ज्योत्स्नादेवी व पं० गिरिधर शर्मा जी 'नवरत्न', साहित्यवाचस्पति।

शिक्षा—हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, गुजराती भाषाओं में घर पर ही। हिन्दी में साहित्यरत्न, अंग्रेजी में अध्ययन बी० ए० तक।

पारिवारिक साहित्यिक निधियाँ—परम भागवत बाबा श्री व्रजेश्वर जी भट्ट, पूज्य पिता जी श्री गिरिधर शर्मा नवरत्न, अग्रज बन्धु (दादा) श्री ईश्वरलाल शर्मा रत्नाकर हिन्दी के परम मार्मिक कवि गांधी-दर्शन एवं अरविन्द तत्वज्ञान के विशिष्ट अभ्यासी। परम तपस्विनी बड़ी मां (मेरी ताई जी श्रीमती धनवती गोपाललाल जी शर्मा) परम धर्म प्राणा व श्री बालकृष्ण प्रभु की आजन्म चरण-सेविका।

विशिष्ट अभिरुचि—साहित्य एवं दर्शन में।

रचनाएं—मौलिक

१. कवन (कविता संग्रह)

२. आरती (गीति काव्य संग्रह)

३. उन्मुक्ति (गद्य काव्य संग्रह)

४-५. सती सीता एवं आश्रम ज्योति (काव्यमय जीवन रेखायें)

६. मानवी (काव्य कथा)

७. सजला (गीति संग्रह)

८. वेदना गीतो (गुजराती में)

६. स्वाधीनताना दावादारो ने (गुजराती गद्यमय उद्बोधन)

अनुवादित:—

१. उत्तर की दीवार (काका कालेलकर)

२. साहित्य प्रारम्भिक (गुजराती साहित्य का इतिहास)

३. भक्ति हंस

४. गोपी-हृदय (अंग्रेजी से रैहाना तैयब जी)

५. प्रतिज्ञा यौगन्धरायण—भासकृत

६. वेदस्तुति (श्रीमद्भागवत से)

७. राम राज्य (सर प्रभाशंकर पट्टणी भावनगर)

८. Ode to a-Nightangle (कीट्स कृत भावानुवाद)

सम्पादित ग्रन्थ—

१. विषाद (गद्य काव्य संग्रह)

२. सर्वोदय अक्षर बोध

३. नवरत्न नीति

४. श्री भक्तामर स्रोत

५. कविता कुसुम भाग २

६. सुधाकर काव्यकला (मालावाड़ नरेश स्व० सर राजेन्द्रसिंह देव सुधाकर का काव्य साहित्य) इत्यादि ।

सार्वजनिक कार्य—राष्ट्रभाषा प्रचारक, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की परीक्षक, हिन्दी की प्रचारक, प्रसारक, साहित्य सम्मेलन प्रयाग की केन्द्र की संचालिका, संस्थापिका शक्ति-प्रकाशन, झालरा पाटन ।

अन्ध वृद्ध पिता की साहित्य साधना में २२ साल से (सन् १९३५ से) पूर्ण योगदान । अखिल भारतीय आकाशवाणी जयपुर की सम्मानित कलाकार । स्थानीय छात्रालय में अंग्रेजी व संस्कृत की शिक्षिका ।

पता—नवरत्न सरस्वती भवन, झालरा पाटन सिटी (राजस्थान)

श्रीमती शकुन्तलादेवी अग्रवाल

जन्मस्थान व तिथि—श्री राजाराम बैंकर की पुत्री के रूप में लुध्याना में १ जून १९१३ को उत्पन्न हुईं।

शिक्षा—प्रभाकर (पंजाब यूनिवर्सिटी), साहित्यरत्न (प्रयाग), वैद्य विशारद (प्रयाग)।

रचनाएं—

१. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास
२. प्राचीन काव्य दिग्दर्शन
३. यूनिवर्सिटी निबन्धावली
४. हिन्दी व्याकरण चन्द्रिका
५. हिन्दी साहित्य का विचारात्मक अध्ययन
६. व्यावहारिक व्याकरण तथा रचना संग्रह

सम्पादित :—

१. चुने हुए हिन्दी एकांकी
२. सपूत (प्रतिनिधि कहानियों का संग्रह)

सामाजिक कार्य—१९३५ में आयुर्वेद के प्रचार-प्रसार के लिए धर्मार्थ औषधालय की स्थापना की जिसमें कठिन और निराश रोगियों की चिकित्सा अपने हाथ से की जाती थी। १९४२ में प्रान्तीय महिला सम्मेलन की स्वागताध्यक्षा का काम संभाला। कई वर्षों तक महिला संस्कृत कालिज लायलपुर की अवैतनिक आचार्या का काम किया। तदनन्तर महिला ओरियण्टल कालिज लुध्याना की प्रिंसिपल के रूप में। कुछ समय तक हिन्दी की मासिक पत्रिका "नया साहित्य" का सम्पादन

किया। समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में लेख आदि निकलते रहे हैं।

पता:—शक्ति प्रकाशन, निगार मंडी, लुध्याना[1]।

---

१ श्रीमती शकुन्तला जी की अद्वितीय प्रतिभा उनके समस्त परिवार पर छा गई है। पति श्री हंसराज जी अग्रवाल, पंजाब में रजिस्ट्रार डिपार्टमैण्टल एग्जामिनेशन्स हैं और स्वयं एक उच्च कोटि के लेखक और आलोचक हैं।

श्रीमती शकुन्तलादेवी खरे

श्रीमती शकुन्तला खरे हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि नर्मदाप्रसाद खरे की पत्नी हैं। आपका जन्म सन् १६१६ के जुलाई मास में जबलपुर जिले के ऐतिहासिक स्थान बिलहरी में हुआ था। शिक्षा घर पर हुई। विवाह के बाद श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान से आत्मीयता का संबन्ध स्थापित हुआ और घर पर भी साहित्यिक वातावरण प्राप्त हुआ। इन्होंने कविता लिखना आरम्भ किया और शीघ्र ही इनकी कविताएँ हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगीं। "हिन्दी काव्य, कोकिलाएं,' हिन्दी काव्य की तारिकाएँ, और हिन्दी काव्य की कलिकाएं नाम की पुस्तकों में इनके काव्य पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है। विदुषी की परीक्षाओं में पढ़ाये जानेवाले काव्य संग्रह में इनकी कविताओं को भी स्थान दिया गया। हिन्दी के सुप्रसिद्ध आलोचक श्री शांतिप्रिय द्विवेदी ने अपनी 'कवि और काव्य' नामक पुस्तक में इनकी कविताओं की विशद रूप में चर्चा की।

इनकी कविताओं का अभी तक कोई संग्रह नहीं प्रकाशित हुआ है। इन्होंने गार्हस्थिक जीवन पर कुछ कहानियां भी लिखी हैं जो समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं से प्रकाशित हुई हैं। आप कई बार अपनी रचनाओं का आकाशवाणी से पाठ कर चुकी हैं। इन दिनों तो बाल गोपालों और गार्हस्थिक जीवन में ही इनका संसार सीमित हो गया है। बहुत कम लिख पाती हैं। तरह-तरह का भोजन बनाना इनकी 'हाबी' है।

शकुन्तला देवी खरे, ५७३ राइट टाऊन, जबलपुर।

[जबलपुर निवासी एक साहित्यिक मित्र के सौजन्य से प्राप्त]

श्रीमती शकुन्तला सिरोठिया

पिता का नाम, जन्म स्थान व तिथि :—डाक्टर भंवरलाल शर्मा (रिटायर्ड मैडिकल ग्राफीसर), कोटा (राजस्थान), दिसम्बर १९१५।

शिक्षा :—शिक्षा बहुत विलम्ब से हुई। काशी विश्वविद्यालय से मैट्रिक १९३४ में करने के १४ वर्ष उपरान्त फिर शिक्षा की टूटी श्रृंखला १९४८ में जुड़ पाई। १९५४ में हिन्दी में एम० ए० पास किया। टीचर्स ट्रेनिंग के सार्टीफिकेट प्राप्त करने के अतिरिक्त शिशु शिक्षण में भी डिप्लोमा लिया। पिछले २०-२२ वर्ष से शिक्षण कार्य कर रही हूँ। इस दिशा में मेरी विशेष रुचि है। बालकों के साहित्य सृजन में मेरा मन बहुत रमा है।

मैं अनुभव करती हूँ कि उपयुक्त बाल साहित्य का हिन्दी क्षेत्र में बहुत अभाव है। जो कुछ आज प्रकाशित हो रहा है उसमें बाल मनोविज्ञान का कोई ध्यान नहीं रखा गया है। जटिल भाषा और प्रौढ़ भाव बालकों के लिए ठीक नहीं है। किन्तु बहुत कम लेखक और कवि इसका ध्यान रख सके हैं। इन नन्हें मुन्नों के लिए लगभग १८ वर्ष से मैं लिखती आ रही हूं। पत्र-पत्रिकाओं में तो मेरी रचनाएं निकलती ही रहती हैं, आकाशवाणी पर भी मेरे नाटक कहानी आदि प्रसारित होते रहते हैं।

साहित्यिक अभिरुचि :—हिन्दी साहित्य में मेरी बचपन से रुचि है। १९३२-३३ में ही मेरी कुछ रचनाएं 'माधुरी' और 'सुधा' में प्रकाशित हुई थी। इधर १८, १९ वर्षों से निरन्तर कविताएं तथा बाल साहित्य की रचनाएं करती आ रही हूँ।

चित्रकला और साहित्य दोनों में मेरी समान रुचि है । बचपन में मैंने जब तुक जोड़ना आरम्भ किया था तभी रंगीन पेंसिलों और कोयले से दीवारों को रंगना भी शुरू कर दिया था। साहित्यिक अभ्यास अपने आप भी होता गया। पुस्तकों ने गुरू का कार्य किया, किन्तु चित्रकला बिना गुरू के प्रदर्शन के कठिन मालूम पड़ी। अस्तु उसमें अभ्यास और ज्ञान का क्षेत्र संकुचित ही रहा। किन्तु जब समय और किसी गुरू से शिक्षा प्राप्ति का अवसर मिला मैं इस क्षेत्र में आगे बढ़ती गई। मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची हूँ कि अवधान की पकड़ जितनी सुदृढ़ चित्रकला में है उतनी साहित्य में नहीं। मैं अबाधगति से भूखी प्यासी चित्र बनाने में तल्लीन रह सकती हूँ किन्तु अभाग्य से मुझे अभ्यास का अधिक समय नहीं मिल पाया इस संघर्षमय जीवन में। यद्यपि यह विषय साहित्य की तुलना में मेरे अधिक निकट है ऐसा म अनुभव करती हूँ।

प्रयाग विश्वविद्यालय से मैंने चित्रकला में डिप्लोमा भी प्राप्त कर लिया है। और इस समय नर्सरी ट्रेनिंग कालिज में कला अध्यापिका के पद् पर कार्य कर रही हूँ।

साहित्यिक रचनाएँ—मेरा प्रथम गीत-संग्रह 'दीप' के नाम से १९४४ में निकला था। उसके बाद प्रकाशन की सुविधा न होने के कारण दूसरा संग्रह शीघ्र प्रकाश में न आ सका। किन्तु गद्य-पद्य रचनाएँ बच्चों सम्बन्धी साहित्य बराबर पत्र-पत्रिकाओं में निकलता रहा। जिस गति से रचनाएँ लिखीं उतनी गति और उत्साह से पत्रों में प्रकाशनार्थ नहीं भेजीं। मेरा दूसरा गीतों का संग्रह 'सुधि के स्वर' नाम से दिसम्बर १९५६ में प्रकाशित हुआ है। एक गद्य गीत की पुस्तिका 'समस्या' अभी प्रकाशित हुई है।

बाल साहित्य

पद्य—१. आ री निंदिया

२. आ ले मुन्ना

३. गीतों भरी कहानी

४. बादल

गद्य—५. बाल नाटक प्रेस में

६, उन्होंने शिकार खेला था "

आधुनिक कवियित्रियों पर एक पुस्तक लिख रही हूँ।

साहित्यिक अनुभव—मुझे गीत बहुत अच्छे लगते हैं। भाषा की क्लिष्टता से दूर रही हूं। गीतो में जो भाव प्रधान है, भाषा का चमत्कार उसके प्राणों को घोट देता है, ऐसा मेरा विश्वास है।

नई कविता में जो प्रयोग चल रहे हैं वे मुझे कविता के लिए राहु से मालूम पड़ते हैं। भय है कि किसी दिन कविता को पूर्णरूप से ग्रस न लें। ऐसे-ऐसे भयानक तथा ग्लानि उत्पन्न करने वाले विषय और भाव आ रहे हैं प्रयोगवादी कविता में कि जो मर्म को स्पर्श तो नहीं करते उस पर आघात करते हैं। जैसे किसी वस्तु को पूर्णरुपेण दिखाने की चेष्टा में उस वस्तु को उधेड़ कर उसका अंग-प्रत्यंग अलग-अलग कर दिया जाय ऐसी ही कुछ चेष्टा मुझे प्रयोगवादी कविता में लगती है। मैं यह नहीं कहती कि इस वाद के सभी कवि ऐसा प्रयोग करते हैं किन्तु अधिकांश कवि और उनका काव्य मेरे मन पर ऐसा प्रभाव डालता है और यह मैं विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि ऐसा काव्य अमरता प्राप्त नहीं कर सकता। तुलसी और सूर जैसे आज इतनी शतियां बाद भी अपने पूर्ववत स्थान बनाये हैं तथा नित नवीन रसास्वादन हम उनके काव्य से लेते रहते हैं वह क्षमता इस नयी कविता में नहीं है।

पता—६८ बी बाई का बाग, इलाहाबाद—८

इस परिचय में वर्षों में परिवर्तन सम्पादक ने ही किये है।

श्रीमती शचीरानी गुर्टू

जन्म स्थान व तिथि :—कनखल (हरिद्वार) उत्तर प्रदेश, १ मार्च १९२३।

शिक्षा :—एम. ए. (हिन्दी) एम. ए. (इंगलिश)।

प्रेरणा प्रदान करने वाला वातावरण :—साहित्य साधना के लिए मुख्य प्रेरणा पति आचार्य श्री इन्द्रनारायण जी गुर्टू से मिली।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें विशेष अभिरुचि है :—आलोचना।

रचनाएँ :—

मौलिक ग्रंथ :—

१. साहित्य दर्शन (दो खण्डों में—तुलनात्मक अध्ययन)।

२. वैचारिकी (आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह)।

३. विश्व की महान् महिलाएँ।

४. कला-दर्शन (विश्व के प्रमुख देशों की कला की समीक्षा)।

५. भारतीय कलाकार (आधुनिक कलाकारों की कला समीक्षा।)

सम्पादित-ग्रंथ

६. सुमित्रानन्दन पंत (काव्य कला और जीवन दर्शन)।

८. प्रेमचन्द और गोर्की।

९. हिन्दी के आलोचक।

अनुवाद

डाक-तार निर्देशिका (P. & T. Guide का अनुवाद)।

डाकखानों का इतिहास (The History of Indian Post offices)।

अभी कुछ कहानियाँ व लेख अप्रकाशित भी हैं।

सम्पादकीय ज्ञान :—कई वर्ष तक प्रवाह की सम्पादिका रह चुकी हैं।

सार्वजनिक जीवन :—सार्वजनिक जीवन से दूर रही हैं।

वर्तमान पता :—२४ ई फैज बाजार, दरियागंज दिल्ली।

---

१ आजकल आप भारत सरकार में एक उच्च पद पर काम कर रही हैं, तब भी आपकी सद्वृत्ति, सुजनता एवं सरलस्वभाव को देखकर सामान्यतः कोई नहीं कह सकता कि आप इतनी विदुषी और उच्चकोटि की आलोचिका हैं।—सम्पादक

श्रीमती शशिप्रभा शास्त्री

यह सच है कि लिखने का मुझे प्रारम्भ से ही शौक रहा है, या यूं कहिए लिखना मेरा प्राण है। प्रारम्भ में मैं कुछ अधिक नहीं कर पाई यह वातावरण मुझे विवाहोपरान्त ही मिल पाया। अपने नगर की "साहित्यिक संसद" से परिचय होने तथा अपने पतिदेव के प्रोत्साहन तथा सहयोग द्वारा अब इस दिशा में मैं कुछ भी कुछ कर पाऊँगी ऐसा मुझे विश्वास है। मेरी जन्मभूमि मेरठ है तथा वर्तमान निवास स्थान देहरा-दून ही है। मेरे माता-पिता दोनों ही किसी जमाने में धार्मिक तथा सामाजिक विषयों पर लिखते रहे थे। सम्भवतः उसी रुचि का प्रस्फुटन मुझ में हुआ है।

कहानी साहित्य की ओर ही मेरी विशेष अभिरुचि है। कहानियाँ लिखती रहती हूँ। यदाकदा प्रकाशित भी हो जाती है। कभी-कभी बच्चों के मनोविज्ञान सम्बन्धी लेख भी लिखे हैं। सम्पादकीय ज्ञान व अनुभव मेरा शून्य ही कहिये क्योंकि अपने कालेज की पत्रिका के सम्पादन के अतिरिक्त कहीं कुछ और करने का अवसर नहीं पाया है।

पता—श्रीमती शशिप्रभा शास्त्री, एम० ए०, बी० टी०, सा० रत्न, प्राध्यापिका—म० क० पा० डिग्री कालिज, देहरादून।

श्रीमती शान्ताकुमारी जैन

जन्मस्थान व तिथि—लाहौर, तिथि ८ फर्वरी १६२२।

शिक्षा—Upto B. A.

प्रेरित करने वाला वातावरण—घरेलू जीवन तथा पारिवारिक समस्याएं। घर में आने जाने वाले पर्याप्त मात्रा में हैं। उन्हीं से लिखने के विषय प्राप्त हो जाते हैं।

परिवार की साहित्यिक विभूतियां—समस्त परिवार में मैं ही स्त्री तथा पुरुषों में प्रथम हूं जिसने इस ओर पांव बढ़ाया है।

निर्दिष्ट दिशा—नाटक लेखन, विशेषकर रेडियो नाटक। हास्य-रस। लेख, बच्चों तथा महिलाओं की समस्याएं। पारिवारिक कहानियां इत्यादि।

रचनाएं—आकाशवाणी दिल्ली से पर्याप्त मात्रा में नाटक तथा लेख प्रसारित हो चुके हैं। साप्ताहिक हिन्दुस्तान तथा अन्य पत्रों में कहानियां, एकांकी व लेख आदि।

सार्वजनिक जीवन—अपने द्वारा छोटे छोटे एकांकी, हास्यरस में लिखकर छोटे छोटे बच्चों द्वारा अपने निर्देशन में अभीनीत कराती रहती हूं। इसी दिशा में आगे बढ़ने की अभिलाषा है।

भावी योजनाएं—हास्यरस में विशेषकर नाटक लिखने का अधिक विचार है। हास्यरस के साथ अपने नाटकों को शिक्षाप्रद अवश्य बनाना चाहती हूं।

पता—६ पूसा रोड, नयी दिल्ली।
(टेलीफोन नं० ४३६८१)

श्रीमती शान्ति अग्रवाल

जन्म स्थान व तिथि :—बरेली, जूलाई १९२० ।

शिक्षा :—एम. ए. प्री० हिन्दी, साहित्य रत्न, संगीत भूषण, तथा हिन्दी रत्न (पंजाब) । एम. ए. फाइनल इस वर्ष कर रही हूं ।

साहित्यिक प्रेरणा प्रदायक वातावरण तथा परिवार की साहित्यिक निधियां :—एक शिक्षित परिवार में जन्म के कारण प्रारम्भ से ही शिक्षा में रुचि रही । मेरे पिता श्री श्यामाचरण वैश्य उत्तर प्रदेश की गजेटेड शिक्षा-विभागीय सर्विस में रहे हैं । मेरे पतिदेव श्री विश्वम्भरनाथ अग्रवाल शिक्षा विभाग में काम कर रहे हैं तथा साहित्यिक और धार्मिक लेख लिखते रहते हैं जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहते हैं । उन्होंने बेसिक शिक्षा पर Ph. D. के लिए थीसिस भी आगरा यूनीवर्सिटी में प्रेषित की है । अतः वातावरण पूर्णरूपेण उत्साहित करने वाला रहा है ।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें विशेष अभिरुचि है :—हिन्दी काव्य से अधिक लगाव है, विशेषतया उस विचार धारा से जो रहस्यवाद और ईश्वर चिन्तन की ओर ले जाता है ।

रचनाएं

प्रकाशित :—१. स्वतन्त्रता संग्राम (काव्य)
२. बाल वीणा ,,
३. गौरव पथ (गद्य)

अप्रकाशित :—१. बाल सौरभ (काव्य)
२. शान्ति पथ ,,
३. फुटकल रचना संग्रह ,,

सार्वजनिक जीवन :—प्रारम्भ में सनातन धर्म के प्लेटफार्म पर धार्मिक रचनाएँ की मगर अब तो निर्गुण सम्प्रदाय की पोषक हूं। और आर्य समाज में महिला समाज की प्रधान व मंत्राणी भी फतेहगढ़ में रही हूं। प्लेट फार्म पर कविताएँ भी पढ़ी हैं और लैक्चर दिए हैं। श्री विश्वम्भरनाथ जी अग्रवाल आर्यसमाज फतेहगढ़ के उप्रधान रहे हैं तथा धर्म व कर्तव्य पालन सम्बन्धी भाषण देते रहे हैं। उनका सम्बन्ध (Theosopqical Society) सत्य मार्ग लाज से रहा है और शिक्षा सम्बन्धी व धर्म सम्बन्धी भाषण दिए हैं।

भावी योजनाएँ :—स्वतन्त्रता-संग्राम का दूसरा खंड कांग्रेस के प्रारम्भ से स्वाधीनता प्राप्ति तक ऐतिहासिक विवरण काव्य भाषा में प्रस्तुत कर रही हूं।

पता :—c/o श्री विश्वम्भर नाथ अग्रवाल एम. ए., एल. टी., एल. एल. बी., लेक्चरर, गवर्नमेन्ट कान्सट्रक्टिव ट्रेनिंग कालिज लखनऊ।

श्रीमती शान्ति भटनागर

जन्मस्थान और तिथि—मेरठ, २३ सितम्बर १९१६।

शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी)

साहित्य की ओर प्रेरित करने वाला वातावरण—हिन्दी के प्रति पति की निष्ठा तथा सेवा भावना।

परिवार की साहित्यिक निधियां—पति श्री बांकेविहारी भटनागर जो पहले माधुरी (लखनऊ) के सम्पादक थे और अब साप्ताहिक हिन्दुस्तान दिल्ली के सम्पादक हैं।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें विशेष अभिरुचि है—सामाजिक तथा हास्यरस प्रधान कहानियां एवं निबन्ध। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी उपन्यासों का अनुवाद।

रचनाएं—पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं के अतिरिक्त श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य के अंग्रेजी कहानी संग्रह Fatal Cart का 'कुब्जा सुन्दरी' नाम से हिन्दी अनुवाद, 'डेफनी डु मारिये' के अंग्रेजी उपन्यास 'रेबेका' का हिन्दी अनुवाद (साप्ताहिक हिन्दुस्तान में धारावाहिक रूप से प्रकाशित तथा शीघ्र ही 'हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस से पुस्तक के रूप में प्रकाशनीय) श्रीमती कमला मार्कण्डेय के अंग्रेजी उपन्यास "Nectar in a Sieve" का रुक्मिणी नाम से हिन्दी अनुवाद (साप्ताहिक हिन्दुस्तान में धारावाहिक रूप से प्रकाशित)।

सम्पादकीय ज्ञान व अनुभव—सन् १९३९-४० में स्त्रियों के पाक्षिक 'कला' (लखनऊ) की सम्पादिका। आजकल साप्ताहिक हिन्दुस्तान में सहायक सम्पादिका के पद पर।

वर्तमान पता—२५/६ ईस्ट पटेल नगर, नयी दिल्ली।

श्रीमती शान्ति मेहरोत्रा

जन्म स्थान व तिथि :—राजस्थान के एक ग्राम में मार्च १९२६ में हुआ।

शिक्षा :—लखनऊ विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम० ए० किया।

साहित्यिक प्रेरणा प्रदायक वातावरण :—प्रारम्भ से ही लिखने की ओर अभिरुचि तथा परिवार के लोगों द्वारा प्रोत्साहन। विवाह के उपरान्त साहित्य प्रेमी एवं साहित्यकार पति श्री वैकुण्ठनाथ मेहरोत्रा द्वारा अधिकाधिक प्रोत्साहन। विशेष रूप से मुझे गद्य लिखने की ओर प्रेरित करने का श्रेय तो उन्हें ही है।

परिवार की साहित्यिक निधियां :—सर्वप्रथम तो पतिदेव ही एक लब्ध-प्रतिष्ठ कहानीकार हैं उनके तीन संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

इसके अतिरिक्त मेरी दो छोटी नन्दों—कुमारी लक्ष्मी मेहरोत्रा और कुमारी दुर्गा मेहरोत्रा—को भी साहित्य में गहरी दिलचस्पी है। उनकी कहानियां लेखादि समय-समय पर प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें आपकी वास्तविक अभिरुचि है :—अपने साहित्यिक जीवन के लगभग १० वर्ष व्यतीत करने के बाद कुछ वर्षों से गद्य रचना की ओर अधिक प्रवृत्त हूं। विशेष रूप से कहानियों की ओर।

रचनाएं :—

प्रकाशित :—(१) निष्कृति (डा० बड़थ्वाल पारितोषिक प्राप्त)
(२) मरीचिका (माता कस्तूरबा पारितोषिक प्राप्त)

(३) रेखा (सेक्सरिया पारितोषिक प्राप्त)
(४) विदा
(५) पगध्वनि
(६) पंच-प्रदीप
(७) चाणक्य (गीतों में खण्ड काव्य)

अप्रकाशित :—(१) सुर्खाब के पर (हास्यरस की कहानियों का संग्रह)
(२) तर्क से परे (कहानी-संग्रह)
(३) जीवन सतत् प्रवाह (कविता-संग्रह)
(४) एक उपन्यासिका (नाम अभी निश्चित नहीं)

सम्पादकीय ज्ञान व अनुभव :—कुछ समय तक "भारत जननी" (इलाहाबाद) तथा 'शान्ति' दिल्ली की सम्पादिका रही।

सार्वजनिक जीवन :—आजकल इलाहाबाद आकाशवाणी केन्द्र पर स्त्रियों तथा बच्चों के कार्य-क्रमों की सहायक नियोजिका (Assistant Producer) हूं।

पता :—२० ए घोष बिल्डिंग्स, जवाहरलाल नेहरू रोड, टैगोर टाउन, इलाहाबाद।

श्रीमती शान्ति रमण

हिन्दी के प्रथम उपन्यास 'चन्द्रकांता' के लेखक स्व० श्री देवकीनन्दन खत्री की पौत्री होती हैं। आरम्भ में वे लोग मुजफ्फरपुर जिला के मालीनगर गांव के रहने वाले थे और इस तरह मुजफ्फरपुर शहर से बराबर सम्बन्ध बना रहा। कालान्तर में श्री देवकी नन्दन जी काशी चले गये किन्तु उनके परिवार के लोग मुजफ्फर पुर में ही रह गए।

विवाह से पहले श्रीमती रमण का नाम कुमारी शान्ति धवन था। आपका जन्म १७ अप्रैल १९२४ को काशी में हुआ। पढ़ाई लिखाई अधिकतर मुजफ्फर पुर में हुई। और सन् १९४४ में आपने बी० ए० की परीक्षा समाप्त की। डिप-इन-एड की परीक्षा समाप्त हो ही चुकी थी कि ३ मार्च ४६ को हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि और लेखक श्री रमण जी से अन्तर्जातीय विवाह हुआ।

यों तो स्कूल और कालेज के दिनों से ही साहित्य की ओर आप आप आकर्षित थीं तथा कहानियों की रचना कभी-कभी करती भी थी किन्तु श्री रमण जी से सम्बन्ध में आने के बाद से आपकी साहित्यिक साधना बाजाप्ता शुरू हो गई। सन् ४७ में आप सरकारी शिक्षा विभाग में आ गईं और इस समय आप शिक्षा विभाग में लेडी प्रिंसिपल के पद पर आसीन है जो एक गजेटेड पद है।

साहित्यिक परम्परा की प्रतिभा प्राप्त श्रीमती रमण को मनोविज्ञान का बहुत अच्छा ज्ञान है। अंग्रेजी में आनर्स रहने के कारण आपने उस साहित्य का भी विधिवत अध्ययन किया है।

इस सभी अध्ययन और पठन-पाठन की प्रतिक्रिया उनके कहानी-

साहित्य पर पड़ी है। यों कभी-कभी गीतों की रचना भी वे करती हैं जो भावना प्रधान होते हैं।

संगीत से आपको शौक है। और इसीलिए कविताओं का पाठ अत्यन्त ललित कंठ से करती हैं।

उनकी कहानियों का एक संग्रह "प्रकाश की रेखा" नाम से एक साल पहले प्रकाशित हुआ था जिसका संतोषपूर्ण आदर हुआ। सन् ५५ के सितम्बर में विशेष अध्ययन के लिए श्रीमती रमण लंदन गईं और लन्दन विश्व विद्यालय से शिक्षा की उच्च डिग्री लेकर गत वर्ष लौटीं।

वहाँ से आने के पश्चात् आपकी कहानियों में विश्लेषात्मक प्रवृत्ति अधिक बढ़ गई है और चरित्रों को परिस्थितियों के माध्यम से उभारने की कला निखर गई है। प्रत्येक पात्र बिना कुछ कहे-सुने विचारों को झकझोरने लगता है।

राजकीय नौकरी में एक जवाबदेह पद पर होने के नाते इन्हें समयाभाव बहुत रहता है।

साहित्यकार रमण प्रायः अस्वस्थ रहते हैं। पिछले दिनों हृदय-रोग के कई आक्रमण होने के कारण काम काज से भी विश्राम ले रहे हैं और वे श्रीमती रमण ही हैं कि उन्हें सदा सुखी और प्रसन्न रखती हैं।

साहित्यिक इस दम्पत्ति से साहित्य को बहुत कुछ मिला है और नित्य मिलता जा रहा है।

उनका पता :—श्रीमती शान्ति रमण, बी० ए०, डिप-इन—एड, ए-एस-एस-पी० (लंदन)। लेडी प्रंसिपल—गवर्मेंट गर्ल्स हाई स्कूल रांची।

श्रीमती शारदा मिश्र

मेरा नाम अब शारदा मिश्र है, विवाह से पूर्व मैं शारदा शर्मा के नाम से लिखती थी। मेरा जन्म चैत्र अष्टमी कृ. संवत १६८५ में हुआ था। मैंने आगरा यूनिवर्सिटी से बी० ए०, बी० टी० की डिग्रियां प्राप्त की हैं। इसके अतिरिक्त संस्कृत साहित्य का भी कुछ अध्ययन किया है।

अभी तक मैंने जो कुछ लिखा है कोई विशेष वातावरण मेरी रचनाओं के लिए उत्तरदायी नहीं हैं। सामान्य मध्यमवर्ग की लड़कियों को जो वातावरण मिलता है वही मुझे मिला है। मेरी सहज रुचि बाल साहित्य की ओर थी। १७-१८ साल की उम्र तक जो भी पेड़-पौधे, खरगोश,बन्दर, गिलहरी, घड़ा, मटका देखती थी तो मन में एक विचित्र सी बाल-कहानी प्रकट हो जाती थी। और मुझे अपनी प्रकृति से विवश होकर लिखनी पड़ती थी। वही कहानी जब मैं अपने बड़ों को दिखाती थी तो मुझको फटकार मिलती थी।" यह क्या 'उल्लू-मल्लू' की कहानी लिखी है, सामाजिक कहानी क्यों नहीं लिखती।" आप स्वयं सोचिए कि १६-१७ साल की लड़की का सामाजिक, अनुभव क्या हो सकता है और सामाजिक अनुभव के बिना सामाजिक कहानी कैसे लिखी जा सकती है। सच पूछिये तो बाल-कहानियां जो मैं लिखती थी वे एक तरह से मेरी मूर्खता ही मानी गई क्योंकि हिन्दी में सम्भवतः बाल-कहानियों की रचना भी बच्चों का खेल ही समझा गया है। संयोग से एक दिन मेरे चाचा जी प्रदीप (पटना) के प्रधान सम्पादक श्री राधेश्याम शर्मा हमारे यहां आए। वे अपने साथ मेरी कुछ बाल-कहानियां ले गए वे इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाले 'बाल-भारत' में दे आए जहां के

धीरे-धीरे प्रकाशित होती रहीं। मेरी इच्छा थी कि अंग्रेजी की बाल-कहानियों की तरह मेरी कहानियां भी सचित्र और छोटी किताबों के रूप में छपें किन्तु इस देश के लेखकों को ऐसा सौभाग्य कहां मिलता है। 'भारत' में "बच्चों की क्यारी" ने एक एक चित्र देकर मेरी कहानियां निकाल दीं। मुझे भी इतने से सन्तोष हो गया। इस प्रकार मेरे साहित्यिक जीवन का श्री गणेश हुआ। बीच बीच में प्रोत्साहन के अभाव में कई साल तक लिखना बन्द रहा। लेकिन फिर झोंक आती थी और लिखना पड़ता था, हालांकि उसका कोई आदर नहीं होता था। मैंने अपने को कभी कलाकार समझने की भूल नहीं की। एक दिन मैं अपने मन में सोच रही थी कि मेरी ये प्यारी-प्यारी बाल-कहानियां जिन पर मुझे गर्व है इसीलिए लिखी थीं कि अलमारी में बन्द पड़ी रहें। उन्हीं दिनों 'भवभूति' का "उत्तर रामचरित नाटक" पढ़ने को मिल गया। उसकी भूमिका में पढ़ने को मिला कि इस महान नाटककार को अपने समकालीन विद्वानों का तिरस्कार सहना पड़ा था। जिससे खिन्न होकर उसके मुख से एक वाक्य निकला, "उत्पस्यते कोऽपि मम समान धर्मा—कालोहि अयं निरवधि ! विपुला च पृथिवी। अर्थात् यह पृथिवी बड़ी है और काल अनन्त है। किसी न किसी दिन मेरी बात समझने वाले अवश्य पैदा होंगे। जब भवभूति जैसे नाटककार को अनन्तकाल की शरण लेनी पड़ी तो क्या मैं धीरज के साथ अपनी साधना जारी नहीं रख सकती। इस विचार ने सहारा दिया। उसके पश्चात् मैंने बीसियों कहानियां लिखीं और सैकड़ों बच्चों को सुनाईं। कभी-कभी अखबारों में छप जाती थीं और इसी तरह दिन बीतते गए। कुछ लेख और कविताएं भी लिखीं।

विवाह के बाद मेरे श्रीमान जी ने मेरी रचनाओं को ध्यान से पढ़ा—शायद उन्हें पसन्द आयीं। उन्होंने मेरी बाल कहानियों को अलमारी के अंधकार से प्रकाश में लाने के लिए जो कुछ कर सकते थे किया। मेरी 'नीलम और मसहरी की देवी' अभी अभी सचित्र

पुस्तक के रूप में छपी है। यह इन्हीं की कृपा मानती हूँ। और भी कई पुस्तकें छप रही हैं। इन बाल कहानियों के अतिरिक्त इन्होंने मुझे और भी चीजें लिखने का प्रोत्साहन प्रदान किया है जिसके फलस्वरूप मेरे तीन नाटकों का एक संग्रह "त्रिकोण" प्रकाशित हुआ। 'त्रिकोण' में "सूर्य पत्नी संज्ञा', 'द्रौपदी' तथा 'शेमित्रा' तीन नाटक संग्रहीत हैं। द्रौपदी नाटक विवाह के पहले की रचना है। 'सूर्य पत्नी संज्ञा' और 'शेमित्रा' विवाह के बाद की रचनाएं हैं।

अपने साहित्य की निर्दिष्ट दिशा के विषय में—अब तक की कुछ प्रकाशित और अप्रकाशित रचनाओं का संक्षिप्त उल्लेख सम्मति निर्धारित करने में सहायक होगा, यही सोचकर कुछ का नाम दे रही हूं :—

१. नीलम और मसहरी की देवी
२. ऊषा बिल्ली और हू-हू भेड़िया
३. ग्लोब कन्या
४. ताश के पत्ते
५. बन्दरों से क्रिकेट मैच
६. मदन और माधुरी
७. लालटेन की चुड़ैल और जल-परी
८. अशोक और गुसलखाने के बौने
९. चिड़िया रानी का उपहार
१०. दुष्ट बिल्लियां
११. रजिया और उड़न तश्तरियां (बाल उपन्यास)
१२. एक मामूली कुत्ता
१३. निन्दित चरागाह
१४. जल राक्षस और समुद्र का जादू
१५. बादल बच्चों की कहानी
१६. गज शावक रवि और शशि

१७. जम्बू प्रसाद
१८. शेखर और रूठने वाले खिलौने
१९. कंजूस पेड़
२०. कैरम बोर्ड की परियां

इनके अतिरिक्त जातक की चुनी हुई तीस कहानियों का बाल रूपान्तर कर चुकी हूं जिसमें से 'मंगल हाथी और वाराणसी का का राजकुमार" साप्ताहिक हिन्दुस्तान में छप चुकी है। कुछ कहानियां "कथा सरित्सागर" से भी छांटकर लिखी हैं जैसे 'देवियों के साथ जूआ। कुछ बच्चों की कविताएं (nursery rhymes) नर्सरी राइम्स भी लिखी है। कुछ मनोवैज्ञानिक लेख, कविताएं और कहानियां भी लिखी हैं।

इसके अतिरिक्त बाल साहित्य को मनोवैज्ञानिक दृष्टि कोण से बालकों के उपयुक्त बनाने के लिए मैंने मनोविज्ञान का भी विशेष अध्ययन किया है। हरेक बाल कहानी बच्चों की अलग-अलग उम्र का ध्यान रखते हुए लिखी है। इन कहानियों को विद्वान लोग साहित्य समझेंगे या नहीं, यह तो मुझे मालूम नहीं पर बच्चों को तो मेरी कहानियां काफी प्यारी लगती हैं। तभी तो रोज रात को कहानी सुनाने का आग्रह करते रहते हैं और एक-एक कहानी को चार-चार बार सुन कर ही उन्हें सन्तोष होता है। ये नन्हें बच्चे ही मेरी प्रेरणा हैं।

दूसरी निर्दिष्ट दिशा जिसमें मेरी अभिरुचि है वह है नारी जीवन की समस्याएं और उनसे उत्पन्न नारी वेदना। मैंने नाटक को उसकी अभिव्यक्ति का साधन चुना है। जब परिस्थितियों की विषमताओं से अन्तर्मुख हो जाती हूं तो विवश होकर नारी जीवन की वेदना के चित्र खींचने लगती हूं।

सार्वजनिक जीवन तो मेरा नहीं के बराबर है। विवाह के पहले दो वर्ष तक शरणार्थी बालिकाओं के स्कूल में प्रिंसिपल के पद पर काम

किया है। सौभाग्य कहिए या दुर्भाग्य मेरी प्रकृति कुछ ऐसी है कि मुझे घर की परिधि में ही शान्ति मिलती है। पत्रकारिता की ओर भी मेरा आकर्षण था परन्तु "पत्रकार का जीवन बहुत कठिन है"—कहकर श्री राधेश्याम शर्मा सम्पादक 'प्रदीप' (पटना) ने मुझे टाल दिया। जब मैं अध्ययन के लिए इलाहाबाद गई थी तो उन दिनों श्री केशवदास शर्मा, 'भारत' के प्रमुख सम्पादक तथा 'लीडर' के साहित्य सम्पादक थे। वे मेरे बाबा थे उनके यहाँ सम्पादकीय वातावरण भी था और अवसर हिन्दी साहित्य के सम्मानित महारथियों के दर्शन होते रहते थे—जैसे श्री निराला, मैथिलीशरण गुप्त भगवतीचरण वर्मा, नरेन्द्र शर्मा आदि। उनकी बातें भी कभी-कभी सुनती और समझने की कोशिश करती थी। अस्तु ! जब मुझे अवसर मिला तब मैंने अपने स्कूल की ओर से एक छोटी सी पत्रिका निकाली जिसका नाम "शिशु सरोज" रखा। पहले-पहले अंक में बैंगन-सुन्दरी, चालाक लड़का और बुढ़िया, विचित्र मटका, दान का निरादर आदि कहानियाँ छपीं। बच्चों में 'शिशुसरोज' का खासा प्रचार हो गया था—और लोगों को भी काफी पसन्द आया। जहाँ तक मुझे याद है 'शिशु सरोज' पर मुख्य पृष्ठ पर मेरी लिखी निम्नलिखित पंक्तियाँ रहती थीं।

उषा सुन्दरी बीन बजाती नाच रहे अलि शिशु सुकुमार,
हे सौरभमय 'शिशु सरोज' तुम खिलो खिले यह शिशु संसार।

कालधर्म के अनुसार मुझे प्रेस और पत्रकारों का आश्रय लेना पड़ा है परन्तु मेरी अनुभूति यह है कि विज्ञान के इन उपकरणों से यानी प्रेस और पत्रकार कला के प्रचार से सत्साहित्य की रचना को कोई विशेष लाभ नहीं हुआ है। अपितु अपनी रचनाओं के प्रचार में इससे बाधा ही पड़ी है। सभी लेखक प्रकाशक तो बन नहीं सकते। सम्पादनकला एक बात है लेखन कला दूसरी बात है। विवश होकर लेखक को प्रकाशक का मुंह-देखा बना रहना पड़ता है। प्रकाशक चाहता है वे चीजें जो कोर्स में लग सकें या लग चुकी हों। सम्पादक अपने पत्रों के लिये सामयिक

मसाला चाहता है अगर भारत में मार्शल टीटो और बुल्गानिन का दौरा हो रहा है तो पत्रों को उन्हीं के जीवन पर प्रकाश डालने वाले लेख चाहिएं। उन्हीं की प्रशस्ति के गान गाये जायेंगे। अगर होली का पर्व आने वाला है तो होली विषयक कविताओं और लेखों से पन्ने रंगे जायेंगे। इसके अतिरिक्त लेखक को साहित्य-व्यापी गुटबन्दी, परिचय का अभाव आदि विषमताओं के संघात से कुण्ठित होना पड़ता है। मैं पूछती हूँ मीरा के पदों को उनके समय में कौन से प्रेस ने छापा था? तुलसीदास के रामचरित मानस को छापने का बीड़ा किस प्रकाशक ने उठाया था? फिर भी सैंकड़ों वर्ष की काल परिधि को पार करके भी उनकी रचनाएं जीवित हैं। वे अपने हाथ से अपने ग्रन्थ की प्रतिलिपियाँ करके अपने मित्रों में बाँट देते थे। उनकी वाणी में शक्ति थी। इसीलिए उनकी रचनाएं जन-जन के मन और जिह्वा पर जा बैठी। भुलाएं न भूलीं। क्या हम ऐसा नहीं कर सकते। यदि हमारी रचनाओं में दम होगा तो आप ही आप अपने जीविन रहने का प्रबन्ध कर लेंगी। सत्साहित्य, सत्विचार, सत्कल्पनाएं आत्मा की तरह अमर हैं अविनाशी हैं। कोई प्रकाशक उन्हें छापे या न छापे, वे जीवित रहेंगी। उपजाऊ मिट्टी में अच्छा बीज डाल दो। चाहे कुछ समय के लिए वह तिरोहित हो जावे लेकिन एक न एक दिन अवश्य ही अंकुरित होगा, पल्लवित होगा। संसार की कोई शक्ति उसे नहीं रोक सकती। मैंने इसी विचार और विश्वास के साथ धीरज नहीं खोया।

हमारी कुछ बाल-पत्रिकाओं के सम्पादकों की श्रेष्ठ सम्मति है कि संसार में हैन्स क्रिश्चियन एण्डर्सन के अतिरिक्त बाल कहानियों का लेखक न कोई हुआ है न हो ही सकता है, "एलिस इन वन्डरलैण्ड के अतिरिक्त कोई बच्चों की कहानी न लिखी गई है न लिखी जा सकेगी। कुछ लोग 'रैड राइडिंग हुड" की कहानी का नाम वगैरा बदल कर छाप लेते हैं। हिन्दी बेचारी में ऐसे लेखक और ऐसी रचनाएं कहाँ? बच्चे भी ऐसे मूर्ख होते हैं कि जड़-चेतन में अन्तर नहीं करते। उन्हें पेड़,

झील, बादल, हप्पू-बन्दर और हाथी सूंड बिलाती की भाषा समझ में आ जाती है और वही अच्छी लगती है। इन उद्भट विद्वानों की नहीं। अस्तु क्या किया जाय [यही सोचकर मैं तो कहानियाँ नन्हें प्यारे बच्चों को सुना देती हूं। अगर इन कहानियों में आकर्षण होगा तो यही बच्चे बड़े होकर नई पीढ़ी के बच्चों को सुना देंगे। मेरी दो कहानियाँ "लालटैन की चुड़ैल और जलपरी" तथा "ऊषा बिल्ली और हू-हू भेड़िया" जिन्हें मैं लिख कर भूल और खो चुकी थी, कई वर्ष बाद अचानक बनारस के पत्रों में प्रकट हो गईं। साहित्य के प्रचार का यही तरीका मुझे अच्छा लगता है।

आजकल अन्तर की प्रेरणा से दुर्गा सप्तशती का पद्यानुवाद कर रही हूं। ये स्तुतियां क्या है—काव्य, वैराग्य, भक्ति, और वेदान्त का अद्भुत चमत्कार है। संस्कृत में तो जगदम्बा महामाया के उपासकों द्वारा सभी जगह इनका गायन होता है किन्तु हिन्दी में इनका भाव समझना बड़ा कठिन हो जाता है। ये स्रोत चार हैं। इनमें से तीन का पद्यानुवाद कर चुकी हूं। इनमें से "तन्त्रोक्त रात्रि सूक्त" का अविकल अनुवाद "मातृ-स्तवन" के नाम से धर्मयुग १९५६ के दशहरा अंक में प्रकाशित हो चुका है। आशा है भगवती दुर्गा मेरी इन स्तुतियों को अपने उपासकों के मानस पट पर अंकित कर देंगी। मैं भगवती महाशक्ति जगदम्बा की आराधिका हूं और मेरे साहित्य तथा जीवन की प्रेरक शक्ति वही है।

मेरा वर्तमान पता यह है: —

श्रीमती शारदा मिश्र द्वारा श्री रामेश्वर नाथ मिश्र, एडीशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट (एक्जीक्यूटिव) मुजफ्फर नगर।

कुमारी शारदा वार्ष्णेय

जन्म स्थान व तिथि :—१६ नवम्बर १६३५।

शिक्षा :—एम० ए० (हिन्दी) आगरा यूनिवर्सिटी।

प्रेरणा देने वाला वातावरण :—घर का साहित्यिक वातावरण।

पारिवारिक निधियाँ :—पिता जी श्री चन्द्रगुप्त जी वार्ष्णेय की कृतियाँ—गद्य :—पत्र-पत्रिकाओं में लेख, विश्व की विभूतियाँ, पद्य :—फुटकर कविताएं, अनुवाद:—विश्व इतिहास की झलक, गांधी की कहानी।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें विशेष अभिरुचि है :—साहित्य के दोनों पहलू गद्य और पद्य में रुचि है फिर भी गद्य की अपेक्षा पद्य काव्य में विशेष रुचि है।

रचनाएं :—

निकट भविष्य में अपनी रचनाओं का संग्रह प्रकाशित करवाने का विचार है। वैसे रचनाएँ हिन्दुस्तान (साप्ताहिक), संयुक्त राजस्थान व अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। भविष्य में भी इनसे सहयोग बना रखने की सम्भावना है।

साहित्यिक निबन्ध 'सरस्वती-संवाद' (आगरा) आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। कुछ रचनाएं-कविताएं एवं लेख—जयपुर आकाशवाणी से भी प्रसारित करने का अवसर प्राप्त हो चुका है।

सार्वजनिक जीवन :—वास्तव में सार्वजनिक जीवन में जो अनुभव प्राप्त होते हैं उनसे नयी प्रेरणा और काव्य सृजन की अनुपम शक्ति प्राप्त होती है।

साहित्यिक अनुभव एवं भावी साहित्यिक योजनाएँ :—थोड़ा बहुत साहित्यिक अनुभव प्राप्त किया है और उसके आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँची हूं कि वर्तमान हिन्दी साहित्य एक ओर मनोवैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर जीवन की जटिल समस्याओं का समाधान कर रहा है तो दूसरी ओर उसमें अनेक त्रुटियां भी वर्तमान हैं। ऐसा अनुभव होता हैं कि आज के साहित्यकार की अनुभूति प्रबल है किन्तु अभिव्यक्ति इतनी सबल नहीं है।

मैं चाहती हूँ कि वर्तमान अन्य भाषाओं के साहित्य का अध्ययन करके साहित्य को तुलनात्मक दृष्टि से देखूं। हिन्दी के प्राचीन साहित्य का चिन्तन और मनन करने का भी विचार है। अभी तक अध्ययन द्वारा साहित्य से बहुत ग्रहण किया है। अब निकट भविष्य में दूसरों को साहित्य के अध्ययन की प्रेरणा दे सकी और उनमें साहित्य के प्रति अनुराग पैदाकर सकी तो अपना सौभाग्य समझूंगी।

पता :—द्वारा श्री चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय, २६११ मोतीसिंह भूमियों का रास्ता, जयपुर।

श्रीमती शैलकुमारी चतुर्वेदी

जन्म स्थान व तिथि :—मेरठ (उत्तर प्रदेश) १० जूलाई १९२३।

शिक्षा :—अंग्रेज़ी (मैट्रिक), हिन्दी (प्रभाकर, विशारद, एडवांस)।

साहित्य सेवा के लिए प्रेरित करने वाला वातावरण :—पति का साहित्य प्रेम।

परिवार की साहित्यिक निधियाँ :—पति श्री उमेश चतुर्वेदी साहित्यरत्न-कविरत्न।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें विशेष अभिरुचि है :—नाटक व कहानी।

रचनाएं :—

प्रकाशित :—१. वीर सेनानी (ऐतिहासिक उपन्यास) हाई स्कूल पाठ्यक्रम १९५०-५५।

२. पाक विज्ञान

३. आधुनिक गृह विज्ञान (मिडिल पाठ्यक्रम)।

४. सिलाई शिक्षा।

५. एकांकी नाटक संग्रह (दो भाग)।

६. बाल साहित्य की कुछ पुस्तकें—जीवनी कहानियाँ।

७. मरण भोज की वेदी पर—एकांकी (राज्य द्वारा पुरस्कृत)।

८. महिला-गीतांजलि।

सम्पादकीय ज्ञान व अनुभव :—शान्ति (कहानी मासिक, लाहौर) का कुछ समय तक सम्पादन किया।

साहित्यिक अनुभव :—विविध पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ दी हैं। कवि सम्मेलनों में भाग लिया है। रेडियो पर भी कविता पाठ होता रहता है तथा नाटक भी आकाशवाणी द्वारा प्रसारित होते रहते हैं।

भावी साहित्यिक योजना :—हिन्दी साहित्य सेवा व प्रसार।

पता :—C/O श्री उमेश चतुर्वेदी, साहित्यरत्न, कविरत्न, वाटर वर्क्स, जयपुर (राजस्थान)।

श्रीमती सत्यवती मल्लिक

जन्मस्थान व तिथि—१९०६ ई० ,श्रीनगर, काश्मीर।

पिता जी श्री चिरंजीवलाल जी स्टेट के प्रतिष्ठित नागरिक।

शिक्षा-दीक्षा—१६ वर्ष की आयु तक स्टेट हाई स्कूल श्रीनगर में अध्ययन, पुनः घर पर अध्यापकों द्वारा संस्कृत, हिन्दी व अंग्रेजी की परीक्षायें भी पास कीं।

जीवन पर प्रभाव—प्रमुखतः काश्मीर के प्राकृतिक एवं पिताजी द्वारा निर्मित सांस्कृतिक वातावरण का पड़ा। साथ ही श्रीनगर में होने वाले शिक्षण व सांस्कृतिक आन्दोलनों में भाग लेती रही। लगभग १३-१४ वर्ष की अवस्था में ही लिखने का शौक उत्पन्न हुआ। फलस्वरूप तभी प्रथम कहानी ज्योति (मासिक पत्रिका गुरुकुल कांगड़ी) में प्रकाशित हुई। विवाहोपरान्त दिल्ली बस जाने पर १९२५ के कांग्रेस द्वारा संचालित स्वतंत्रता संग्राम में, १९३१ में नमक सत्याग्रह के अवसर पर बम्बई में तथा १९४२ के कांग्रेस समाजवादी पार्टी आन्दोलन द्वारा दिल्ली में सक्रिय भाग लिया। ९४७ में काश्मीर पर पाकिस्तानी आक्रमण के समय दिल्ली से तुरन्त पहुँच कर स्थिति का अध्ययन एवं स्थानीय सांस्कृतिक दल में सम्मिलित हो सेवायें अर्पित कीं और लौट कर भी शरणार्थी कार्य में व्यस्त रहीं। इन राजनैतिक आन्दोलनों व सामाजिक कार्यों के कारण यद्यपि बीच बीच में लेखन-क्रम टूटता रहा किन्तु उसे पुनः प्रोत्साहन कलकत्ता प्रवास के पाँच वर्षों में विशाल भारत से मिला।

१९३५ से विशाल-भारत, विश्ववाणी, संघर्ष, आजकल, नया-समाज, मधुकर, अजन्ता, धर्मयुग, हिन्दुस्तान आदि में कविता कहानी, स्कैच,

निबन्ध, बाल-साहित्य निरन्तर लिखती रही हूं।

प्रकाशित रचनायें—

(१) दो फूल, दिन-रात, बैशाख की रात आदि (कहानियां)

(२) अमिट रेखायें, मानव-रत्न (स्कैच संग्रह)

(३) काश्मीर की सैर, अमर-पथ (सचित्र यात्रा संग्रह)

(४) वैज्ञानिक सम्पर्क कार्य (यूनेस्को अनुवाद अंग्रेजी से)

(५) गत १५ वर्ष से आल इण्डिया रेडियो में निरन्तर भाषण, आलोचना, प्रहसन आदि।

सांस्कृतिक संस्थाओं से संबंध :—

(१) आल इण्डिया फ़ाइन आर्टस् एण्ड क्राफ़्ट सोसाइटी के संचालक सदस्यो में से एक।

(२) इण्डियन नेशनल थियेटर दिल्ली के भूतपूर्व अध्यक्षा।

(३) सरस्वती समाज नई, दिल्ली की अध्यक्षा।

(४) गांधर्व महाविद्यालय नई दिल्ली की प्रधान मंत्री।

(५) हिन्दी भवन, नई दिल्ली की प्रधान मंत्री।

(६) संगीत-भारती, नई दिल्ली की संचालक।

(७) आल इण्डिया फिल्म सैन्सर बोर्ड की सदस्या।

प्रवृत्ति—कला-संगीत, साहित्य के अध्ययन की ओर विशेष रुचि।

भाषाएं—हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला, पंजाबी, काश्मीरी और उर्दू।

श्रीमती संतोष भसीन गार्गी

जन्म तिथि व स्थान—१० मार्च १९२६, लाहौर।

शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी) जर्नलिज्म डिप्लोमा (पंजाब यूनी०), तथा चित्रकला का डिप्लोमा।

प्रेरित करने वाला वातावण :—छोटी अवस्था से ही लिखने का शौक होते हुए भी चित्रकला की ओर मेरी विशेष रुचि रही। यहाँ तक कि कई वर्षों तक मैं चित्रकार बनने के स्वप्न देखती रही। सन् १९४२ में मैंने 'रायल अकादेमी आफ़ फाइन आर्टस्' लन्दन में दाखिला भी प्राप्त कर लिया और उन्होंने मुझे ५ वर्ष का कोर्स २ साल में ही करने की इजाजत भी दे दी क्योंकि मेरा नाम हमारी अध्यक्षा—हैड आफ फ़ाइन आर्टस् डिपार्टमैंट की ओर से चुनकर भेजा गया था और उन्हें मुझ से इस विषय में विशेष आशा थी। परन्तु लड़की होने के कारण लाख प्रयत्न करने, रोने-धोने और धमकी देने पर भी माता-पिता की अनुमति नहीं मिली। मैंने पंजाब विश्वविद्यालय के ही चित्रकला विभाग में ही अध्ययन तथा अभ्यास जारी रखा। बी० ए० के बाद ही मुझे यूनीवर्सिटी मे चित्रकला सिखाने का भी अवसर दिया गया। किन्तु सन् १९४७ में पंजाब के विभाजन ने सभी स्वप्न छिन्न-भिन्न कर दिये। सारा कुछ वहाँ छोड़कर खाली हाथ, बेघर और बेठिकाने होने पर चित्रकला अथवा उसके स्वप्न देख सकने असम्भव थे। दिल्ली का जीवन बहुत कठिन था। एक-एक ईंट जोड़कर जीवन का ढाँचा फिर से खड़ा करना था। उस जीवन में चित्रकला जैसे महंगे और पैसा न देने वाले शौक के लिए स्थान न था। अब रोटी का प्रश्न सब से प्रमुख था। लेखनी द्वारा अब भी मैं अपने भावों को व्यक्त कर सकती थी। अतः कुछ काल को चित्रकला को छोड़कर मैं पढ़ने-लिखने में ही व्यस्त हो गई। अब भी कभी-अभी अवकाश के समय कुछ तैल-चित्र बनाती रहती हूँ।

पारिवारिक साहित्यिक निधियाँ :—

१९४५ में मेरा विवाह परितोष गार्गी से हुआ। उनकी भी लिखने और पुस्तकों में विशेष रुचि थी। अतः हमें परस्पर एक दूसरे से बढ़ावा मिला। इसके अतिरिक्त मेरे अपने भाई-बहिन सभी सुशिक्षित थे। और प्रारम्भ से ही हमारे घर में पढ़ाई का शान्त वातावरण था। छुटपन में जो पैसे खेलने-खर्चने के लिए मिलते, हम उन से पुस्तकें खरीद लेते जिस से हमने अपने घर में ही एक छोटी सी लाइब्रेरी भी बना ली थी।

विशेष अभिरुचि तथा रचनाएँ :—मुझे लेखों व कहानियों में विशेष रुचि थी। परन्तु पिछले चार-पाँच वर्ष से नाटकों की ओर भी मेरा झुकाव रहा है। अभी तक मेरी पाँच पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं जिनके नाम ये हैं :—

(१) मनोविश्लेषण और उसके जन्मदाता।

(२) सूम का घोड़ा (बच्चों की कहानियाँ)।

(३) बाल किरण (पेप्सू सरकार द्वारा पाँचवीं कक्षा के लिए स्वीकृत)।

(४) प्रायश्चित (मोपांसा की कहानियों का अनुवाद)।

(५) नीली चिंगारियाँ (रूसी कहानियों का अनुवाद)।

दो पुस्तकें इस समय छप रही हैं :—

(१) बाल समस्यायें (मनोवैज्ञानिक लेख)।

(२) निर्देशन कला।

सम्पादकीय अनुभव :—जो थोड़ा बहुत सम्पादकीय अनुभव मिला वह छात्रकाल में ही था जब कि मैं अपनी कालिज मैगजीन के हिन्दी व अंग्रेजी दोनों विभागों की सम्पादिका रही। मेरा सौभाग्य था कि इन दोनों विषयों के सम्पादन का काम मुझे मिला जब कि इससे पूर्व ऐसा कभी नहीं हुआ था। तत्पश्चात् १९२६ में जर्नलिज्म डिप्लोमा के लिए अध्ययन करते हुए मैंने छः मास तक 'ट्रिब्यून' और विश्वामित्र (लाहौर) में कुछ सम्पादकीय काम सीखा, यद्यपि यह बहुत गौण सा अनुभव है।

सार्वजनिक जीवन :—जैसा मैंने ऊपर बताया चित्रकला और रंगमंच में विशेष अभिरुचि रखती हूँ। जहाँ तक बन पड़ता है—मैं नाटकों के निर्देशन व अभिनय में सक्रिय भाग लेती हूँ। यहाँ की एक नाटक मण्डली 'कला-संगम' से सम्बन्धित हूं। गत तीन चार वर्ष से उसकी निर्देशन समिति की सदस्या हूँ। हम दोनों की ही नाटकों में रुचि है। गार्गी जी नाटक लिखते हैं तो मैं उन नाटकों के निर्देशन व अभिनय में दिलचस्पी लेती हूँ।

भावी योजनाएँ :—आगामी दो वर्ष तो मैं अपना पूरा ध्यान अपनी 'थीसिस' की ओर लगाना चाहती हूं। गत अक्तूबर से मैंने पी० एच-डी० का अध्ययन प्रारम्भ किया है। विषय-सूची आदि तो स्वीकृत हो चुकी हैं। अब तो मेरे अपने परिश्रम पर निर्भर है। अगर एक डेढ़ वर्ष अपना ध्यान अध्ययन और खोज पर केन्द्रीभूत कर दूं तो आशा है सफल हो सकूंगी।

इसके अतिरिक्त पिछले ६-७ वर्ष से रेडियो के लिए कई कहानियाँ तथा वार्तायें लिख चुकी हूं। कुछ अभिनय हेतु बाल नाटक भी लिखे हैं जो रंगमंच पर बहुत सफलता के साथ खेले जा चुके हैं।

विद्यार्थी जीवन में सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन में विशेष भाग लेती रही। दस वर्ष तक १९३७ से १९४७ तक शुद्ध खादी पहना, सभाओं में भाषण दिए, मीटिंगें कीं और स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया। यहाँ तक कि निरन्तर दो वर्ष तक चर्खा कातने का क्रम भी जारी रखा।

पिछले छः साल से महिला विभाग—आल इण्डिया रेडियो में असिस्टैंट प्रोड्यूसर का काम कर रही हूँ। मेरा पता है—३० डी० निजामुद्दीन ईस्ट, नई दिल्ली।

श्रीमती संतोष 'सुहृद'

जन्म स्थान व तिथि :—कानून गोयान, अलीगढ़ ६ मार्च १९३४

शिक्षा :—एम० ए० (हिन्दी, प्रथम स्थान प्राप्त) साहित्य रत्न एवं सरस्वती।

साहित्य की ओर प्रेरित करने वाला वातावरण :—साहित्यिकों का संसर्ग।

साहित्य की दिशा जिसमें विशेष अभिरुचि है :—महिला समाज उन्नति सम्बन्धी साहित्य, कविता व कहानी में विशेष अभिरुचि।

रचनाएँ :—धर्मयुग, दीदी आदि में समय-समय पर प्रकाशित।

सम्पादकीय ज्ञान :—विद्यालय पत्रिका का सम्पादन।

सार्वजनिक जीवन :—सोलह वर्ष की अवस्था से ही शिक्षण, १७ वर्ष की अवस्था में कुमारी कुटीर विद्यालय अलीगढ़ की स्थापना और संचालन, सार्वजनिक उत्सवों में कविता पाठ व भाषण, महिला-सभाओं का आयोजन, जिला महिला सभा अलीगढ़ की १९५५-५६ में संयोजिका, सदस्या अन्नपूर्णा एवं महिला सहायक संघ (१९५४) कांग्रेस सेवादल की स्वयं सेविका, अनाथ एवं निराश्रित महिलाओं को कुटीर उद्योगों द्वारा स्वजीविका सादर उपार्जित करने का प्रोत्साहन ही प्रमुख ध्येय रहा है।

पता :—श्रीमती संतोष सुहृद, एम० ए० द्वारा श्री देवेन्द्रपाल सुहृद एम० ए० (अर्थशास्त्र व हिन्दी) एल०-एल० बी०।

प्रकाशन अधिकारी, उत्तर प्रदेश उद्योग विभाग, कानपुर।

(निवास स्थान—७/२६९ गुटया, कानपुर।)

श्री सरस्वती रामनाथ

मेरा जन्मदिन १२-३-१९२४ है, और मैं कोयमुत्तूर जिले की हूं। कोयमुत्तूर में ही मेरा जन्म हुआ। मेरे पिता जी साहित्य के रसिक थे। कवि रवीन्द्र के बड़े भक्त थे। पक्के गांधीवादी थे। असहयोग आन्दोलन के प्रवाह में सरकारी नौकरी छोड़ दी थी। डाक्टरी करते हुए सार्वजनिक क्षेत्र में भरसक सेवा करते थे। मेरी आठ साल की उम्र में उनकी मृत्यु हो गई। पिता की स्मृति व रुचि ही मेरे लिए पथ-प्रदर्शक बनी।…माता व दादा के वात्सल्य-मय में लड़कपन बीत गया। S. S. L. C. तक शिक्षा हुई। चौदहवें साल में शादी हो जाने से परीक्षा में न बेठी। मगर घर में अध्ययन जारी रहा। हिन्दी और अंग्रेजी का अध्ययन किया। "किताब के कीड़े" के नाम से मैं प्रचलित थी। लेकिन पाठ्य-पुस्तक में मेरी विशेष दिलचस्पी न थी। वातावरण साहित्यिक प्रवृत्तियों के लिए अनुकूल रहा। पतिदेव इस दशा में पूरा सहयोग देते हैं। १९३९ में मेरी शादी हुई थी और अब तीन बच्चे हैं। १९३८ से मैं हिन्दी पढ़ रही हूं। 'प्रवीण' पूरा कर अब विद्वान (मद्रास यूनिवर्सिटी) प्रिलिम० पूरा कर लिया, मार्च ५८ में फाईनल देने वाली हूँ।

शुरू में कहानियां तथा महिलाओं के लिए लेख लिखे। आज भी लिखती हूँ। कविता, उपन्यास साहित्यिक-आलोचना, और कहानियों की ओर रुचि है। साहित्यिक आदान-प्रदान की ओर बड़ी दिलचस्पी है खास कर तमिल साहित्य की उत्कृष्टतम कृतियों को हिन्दी में लाने की बड़ी आकांक्षा है। हिन्दी से तमिल में भी कई अनुवाद निकाल चुकी हूँ।

हिन्दी से तमिल :—आम्रपाली (मूल गुजराती) लेखक श्री रामचन्द्र ठाकुर। (पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ है।)

चेतन (मूल) अश्क।

बन्धन और मुक्ति (मूल गुजराती) 'दर्शक' (हाल में पुस्तक के रूप में निकलेगा।)

नये मोड़ (उदयशंकर भट्ट) अभी अनुवाद हो रहा है।

देवदासी (मूल मराठी) ब० रा० बोरकर।

एक तारा (मूल हिन्दी) श्री माचवे।

इनके अलावा अब्बास, अश्क आदि की कहानियों आदि का अनुवाद किया है।

तमिल से हिन्दी :—तमिल के उत्कृष्ट तरुण लेखक अखिलन की पन्द्रह कहानियों का अनुवाद किया है जो आजकल 'नया समाज', कहानी इत्यादि-इत्यादि पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। इन्हें एक संग्रह के रूप में भी छापने का विचार है। अखिलन के एक पुरस्कृत उपन्यास 'नारी' का अनुवाद किया। ये दोनों पुस्तकें ही प्रकाशकों के अवलोकनार्थ भेजी हुई हैं। तमिल के सम्मानीय कवि श्री नामक्कल रामलिंगम पिल्लै की "कम्बर और वाल्मीकि" (तुलनात्मक अध्ययन) का हिन्दी अनुवाद कर रही हूँ। रेडियो, महिला समाज में अक्सर भाग लेती हूं। साथ ही हिन्दी का प्रचार भी यथासाध्य कर रही हूँ। सामाजिक क्षेत्र में उतर कर Social Service करने की धुन नहीं। अवकाश में केवल कई एक महिलाओं को हिन्दी पढ़ा रही हूं। घर में ही वर्ग चलता है।

मेरे दिल की आकांक्षाएं बड़ी-बड़ी हैं। आकाश में उड़ने की चाह है मगर पंख कमजोर हैं। हिन्दी जगत के लेखक सम्पादक तथा प्रकाशकों के सहयोग पर हमारी प्रगति निर्भर है। बड़ी उत्सुकता से साहित्य के आदान-प्रदान में भाग ले रही हूं। मगर अहिन्दी प्रान्त वालों की हिन्दी पर कड़ी नजर रखने वाले आलोचक काफी सहृदयता नहीं दिखाते, यह खेद की बात है। अन्तर-भारतीय साहित्य का सृजन करने में हिन्दी का महत्वपूर्ण स्थान है अन्तर-भारतीय साहित्य का सृजन करने में जो हिन्दी का महत्वपूर्ण स्थान है भारतीय जनता को एक सूत्र में बांधने में समर्थ है। लेखकों को आर्थिक सहायता मिले इससे

अधिक आवश्यक है स्वस्थ 'आलोचना, उनको प्रोत्साहन चाहिए। तभी सृजन दृष्टि शक्ति व उत्साह बढ़ेगा। अहिन्दी प्रांत वालों को हिन्दी में उपेक्षित दृष्टि से न देखकर उनमें कोई प्रेरणा फूंकनी होगी। प्रकाशक इस क्षेत्र में काफी मदद पहुंचा सकते हैं। वे प्रान्तीय साहित्य की श्रेष्ठ कृतियों का अनुवाद निकाल कर भारतीय संस्कृति के मंगलमय रूप को और उसके आशामय भविष्य को प्रकाश में ला सकते हैं।

पता :—१/११ सम्बाशिवम् स्ट्रीट, त्यागार्य-नगर, मद्रास १७।

कुमारी सरोज

मैं सरोज हूँ।

मेरा जन्म २२ मार्च १९३९ को देहली में हुआ। शिक्षा तो अभी चल ही रही है। देहली विश्वविद्यालय में एम० ए० द्वितीय वर्ष की छात्रा हूँ।

मैंने लिखना क्यों प्रारम्भ किया ? इसका समुचित उत्तर शायद मेरे पास नहीं है, क्योंकि 'मैं लिखूँगी' ऐसा सोचकर मैंने श्रीगणेश नहीं किया था। इस छोटे से जीवन में बहुत कुछ देखा है, किन्तु जो देखा, वही यथेष्ट है और फिर जीवन चाहे दीर्घ हो चाहे अल्प, वह जागरण के एक क्षण में ही सब कुछ दिखा जाता है। जीवन ने मुझे तो सदा जगाया ही है।

सामाजिक कुंठा विकीरित होती रहती है और उस कुंठा के उन कणों को चबाकर ही मैं, यदि वह साहित्य है, तो कुछ निर्मित कर पाती हूँ।

आवेष्टन के अतिरिक्त शायद पारिवारिक परम्परा ने मुझमें साहित्य उद्भूत किया हो। पिता जी—श्री राजकुमार तो लिखते ही हैं, चाहे उनका माध्यम हिन्दी न हो, और चाहे उनका 'कथा-साहित्य' न हो, किन्तु अंग्रेजी में लेख लिखते ही रहते हैं। उनके अतिरिक्त बहिन ने भी साहित्य को अपनाया है। श्रीमती सुरेन्द्र लूथरा के नाम से शायद आपने उनकी रचनाएँ पढ़ी हों। इस प्रकार अन्तर-प्रकृति और बाह्य प्रतिक्रियाओं को लेकर मैं साहित्य के मार्ग पर आ खड़ी हुई हूँ।

जहाँ तक दिशा का प्रश्न है मैं उसमें लीक पकड़ने की हामी नहीं हूँ। सम्वेदना उन्मुक्त है, कल्पना उन्मुक्त है, इसलिए साहित्य भी

उन्मुक्त होना चाहिए। जो जीवन सिखाता चले उसे ही अनुकूल स्वरों में दोहरा देना मेरी साधना का दर्शन है। फिलहाल मैं कहानियाँ लिखती हूं किन्तु कुछ आकर्षण पद्य तथा मननात्मक साहित्य की ओर भी ढलता जा रहा है, इसीलिए कुछ कविताएँ एवं लेख भी लिखे हैं।

सामाजिक चेतना पाने का बहुत कुछ श्रेय मुझे अपनी सार्वजनिक गतिविधि को देना चाहिए। शैशव से ही मुझे जन और जीवन से लगाव रहा है। स्कूल में भी विवाद प्रतियोगिताओं में तथा नाटकों में भाग लेती रही हूं। अब कालिज के रंगमंच तथा साहित्यिक कार्यक्रमों में भी योग देने का प्रयास करती हूँ और जब अवसर मिल जावे तो साहित्य के उत्कृष्ट कोटि के लेखकों की गोष्ठियों में जाने के सौभाग्य से भी नहीं चूकती।

कर्तव्यों के इस महासागर में जो मेरी बूँद है उसको मैं निर्मल रूप में डाल सकूँ यही मेरी कामना है।

पता :—२ एलनबी रोड, नई दिल्ली।

सरोज लूथरा

जन्म स्थान व तिथि :—लाहौर, फ़रवरी १९२४।

शिक्षा—बी० ए०।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें आपकी विशेष अभिरुचि है—कहानी, नाटक, उपन्यास।

रचनाएँ :—

प्रकाशित कहानियाँ—जागृति, तंग गली, मूक प्रश्न, अब वह नहीं आयेंगे, झूठ का आरम्भ, प्रगति के दो क्षण, कसौटी, उपहार, दिये तले, परिणय, जलते दिये, कायर, प्रतिज्ञा, टक्कर, सजा, अन्धकार, लेन-देन।

एकांकी :—मुस्कान को दान, मेहमान, सतीश की सगाई।

पता :—६/३३ सिविल लाइन्स कानपुर।

कुमारी सरोज वैश्य

जन्मस्थान व तिथि—मेरठ, ४ नवम्बर १६३६।

शिक्षा—एम० एस-सी० (प्रीवियस) रसायन शास्त्र में महाराजा कालिज जयपुर से।

वातावरण—घर में माता-पिता व भाई कुछ लिखने का काम करते ही रहते हैं।

घर में अच्छा पुस्तकालय है जिसमें धर्म, शिक्षा और विज्ञान की काफ़ी पुस्तकें हैं।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें आपकी विशेष अभिरुचि है:—
विज्ञान, स्वास्थ्य व प्राकृतिक चिकित्सा।

रचनायें प्रकाशित:—

१. सफल गृह विज्ञान (अपनी माता जी के सहयोग से लिखी)

२. बेसिक सामान्य ज्ञान (दिल्ली की बेसिक-शालाओं में कक्षा ३ में पढ़ाई जाती है)

पत्र पत्रिकाओं में विज्ञान व स्वास्थ्य विषयक मेरे अनेक लेख समय-समय पर छपे हैं।

भावी साहित्यिक योजनायें:—

(१) विज्ञान के मनोरंजक व जादू भरे प्रयोगों पर एक पुस्तक तैयार है।

(२) अणुशक्ति पर हिन्दी में एक पुस्तक जिसको जन-साधारण आसानी से समझ सकें लिखने का विचार है।

पता:—C/O श्री जे. डी. वैश्य, शाला-निरीक्षक उदयपुर (राजस्थान)

कुमारी सरोजिनी पाठक

जन्मस्थान:—बरेली (उ. प्र.)।

शिक्षा—बी० ए० पास कर लिया है, अभी और अध्ययन करने का विचार है।

प्रेरणा-प्रदायक वातावरण—पुस्तकावलोकन, अपने चारों ओर की परिस्थितियों का निरीक्षण, भ्रमण और चित्रपट।

परिवार की अन्य साहित्यिक विभूतियां:—मेरे पिता श्री रामनारायण पाठक स्वयं एक साहित्यिक हैं और एक भाई जो असमय में ही काल कवलित हो गये, अच्छे लेखक थे।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा एवं अभिरुचि—गीत, कहानी, लेख, और भाव चित्र।

रचनायें कहानियां :—

समाधि, रोटी, राह का मोड़, फूल और कांटा (भाव चित्र) अनेक गीत प्रकाशित।

मंझधार (गीत संग्रह), स्वप्न जाल (गीति-काव्य), शाहजहां के आंसू (गीति-काव्य)।

सार्वजनिक जीवन:—अधिकतर एकान्त, प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन और चिन्तन करना ही पसन्द है।

पता—१२७, नया टोला स्ट्रीट बरेली।

श्रीमती सावित्रीदेवी वर्मा

जन्मस्थान व तिथि—२३ सितम्बर १९११। झांसी में—पिता रायसाहिब श्री हरिश्चन्द्र जी जालंधर (पंजाब) के रहने वाले।

शिक्षा—१९३३ ऐम. ए. (हिन्दी) काशी विश्वविद्यालय।

साहित्यिक प्रेरणा प्रदान करने वाला वातावरण—बाल्यकाल से ही 'सहेली' आदि पत्रिकाओं में कहानियां छपती रहीं। अखिल भारतीय प्रतियोगिता में "निष्ठुर सैंया" नामक कहानी पर स्वर्ण पदक मिला।

परिवार की अन्य साहित्यिक निधियां—पिता व भाई से प्रेरणा मिली। पिता जी के सम्पर्क में रहकर बाल्यकाल से ही साहित्य-अध्ययन की ओर विशेष रुचि रही।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा—नारी लोक, बच्चों की व पारिवारिक समस्याएं। विद्यार्थी जीवन में कहानियां व लेख लिखती रही।

रचनाएं—

बाल तथा प्रौढोपयोगी साहित्य—उत्तर भारत की लोक-कथाएं (सचित्र) ३ भाग।

२. शेक्सपीयर की कहानियां (सचित्र) ३ भाग।

३. कथा भारती (सचित्र)

४. जंगल ज्योति (सचित्र)

नम्बर ३ व ४ पुस्तकों में १२-१२ मौलिक शिक्षाप्रद कहानियां हैं। इनका अंग्रेजी अनुवाद इलस्ट्रेटिड वीकली में छपा था।

५. कथा कहानी (सचित्र) ३ भाग। इसमें पंचतंत्र की कहानियां नए रूप में प्रस्तुत की गई है।

बाल-मनोविज्ञान पर:—आपका मुन्ना (सचित्र) ३ भाग। उपरोक्त

तीनों भाग उत्तर प्रदेश सरकार और काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा पुरस्कृत है। टीचर्स ट्रेनिंग कोर्स में अतिरिक्त पुस्तक के रूप में भी स्कूलों में लगी है। इस पुस्तक पर विंध्य सरकार ने भी विश्वनाथ पारितोषिक प्रदान किया है।

सुखी परिवार माला :—१. आदर्श माता पिता (सचित्र) केन्द्र द्वारा पुरस्कृत।

२. कैसे पकायें-क्या खायें (सचित्र)

३. बीमार की सेवा (सचित्र)

उपरोक्त पुस्तक गृह-शास्त्र, गांव-पंचायत, लाइब्रेरी, कम्यूनिटी प्रोजेक्ट एरिया के उपयुक्त मान ली गई है।

कक्षाओं के लिए—१. नारी का रूप शृंगार पृष्ठ ३०० (मानसिक, चारित्रिक और शारीरिक सौन्दर्य के विकास पर व्यावहारिक सुझाव)

२. भारतीय भोजन विज्ञान (सचित्र) पृष्ठ ४०२।

१. पारिवारिक समस्याएं २. दाम्पत्य विज्ञान (प्रेस में) ३. सुनो कहानी ४. एक था राजा एक थी रानी ५. बौद्ध कथाएं (दो भागों में) ६. रानी बिटिया ७. दीदी के पत्र

सम्पादकीय ज्ञान व अनुभव—(अ) उपसम्पादिका 'बाल-भारती' १९४८ से १९५३ तक।

सह-सम्पादिका 'बाल-भारती' १९५३ से अब तक।

सार्वजनिक जीवन—

१. समाज सेवा में नारी सम्पर्क

२. १९४८ से पब्लिकेशन्स डिवीजन में काम कर रही हूं।

३. १९३३ से १९४४ तक कालिज में प्रोफेसर व प्रिंसिपल इन्टर कालिज रही।

४. दो साल मध्यप्रदेश में भील जनता की सेवा की।

वर्तमान पता व भावी साहित्यिक योजनाएं—१४, फैज बाजार दरियागंज, दिल्ली।

नारी, बाल-साहित्य के क्षेत्र में अधिक कार्य।

कुमारी सुमन तारे

जन्मस्थान व तिथि—आगरा ६ नवम्बर १९३३।

शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी) हर्बर्ट कालिज, कोटा।

साहित्य सेवा का प्रेरक वातावरण—लिखने में मुझे सदा से ही रुचि रही है और इसका श्रेय हमारे प्रोफेसर साहिब श्री रामचरण महेन्द्र को है। मेरे कक्षा के लिखे गए निबन्धों को देखकर उन्होंने मुझे प्रकाशनार्थ लिखने के लिए प्रेरित किया। मेरे एक दो लेख स्वयं ही भेजकर छपवाये।

अभी-अभी मेरा परिचय झालरा पाटन निवासी श्रद्धेय श्री गिरिधर शर्मा नवरत्न तथा उनकी विदुषी पुत्री शकुन्तला 'रेणु' से हुआ। उनके संसर्ग में रहकर एक दिन मैं अच्छी साहित्यिक बन सकूंगी ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

परिवार की साहित्यिक निधियां···कहना चाहिए कि हमारा घर कलाकारों का घर है। एक भाई बम्बई के एक आर्ट स्कूल से डिप्लोमा प्राप्त है। (G. D. Art) और श्रद्धेय ताऊ जी मिट्टी की सजीव मूर्तियां बनाया करते हैं। अतः हम सभी भाई बहिन चित्रकला में विशेष रुचि रखते हैं। समय-समय पर नवभारत टाइम्स में मेरे कढ़ाई के डिजाइन निकलते हैं।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा—मुझे आलोचनात्मक और विचारात्मक निबन्धों में विशेष रुचि है। उपन्यासों और कहानियों में जहां तक तथ्य और मार्मिकता होती है मुझे वे बहुत पसन्द आते हैं। किन्तु अधिकांश में मुझे कोइ आनन्दप्रद तथ्य नहीं मिलता। कविताओं की ओर भी

मेरा पर्याप्त झुकाव है।

रचनाएं—

प्रकाशित रचनाएं निम्न हैं :—

१. सन्त रामदास और उनका मनाचे श्लोक। २. हिन्दी साहित्य में रामभक्ति की परम्परा। ३. साकेत के नवम् सर्ग का काव्य सौन्दर्य। ४. प्राच्य और प्रतीच्य का समन्वय करने वाले अद्भुत नाटककार, ५. कागजी गुलदस्ता (गद्य गीत), ६. नारद का अभिमान भंग (कहानी)

अप्रकाशित :—

दुनियादारी, दिलजले मजाक (कहानी), जन्माष्टमी (कविता) कुटीर-उद्योग, सन् सत्तावन (कविता), कैसे पढ़ें-कैसे पढ़ायें (निबन्ध), डुडकी बाबा (रेखाचित्र), प्रकृति और काव्य सृजन आदि।

सम्पादकीय ज्ञान—हर्बर्ट कालिज पत्रिका का हिन्दी विभाग सम्पादित करने का प्रयत्न किया। गर्ल्स हाई स्कूल झालावाड़ की अध्यापिका के रूप में स्कूल पत्रिका का पूर्णरूपेण सम्पादन।

सार्वजनिक जीवन—झालावाड़ में रहकर मुझे जैसा चाहिए यथा-सम्भव मैंने वैसा ही वातावरण प्राप्त किया हुआ है। श्री गिरिधर शर्मा जी की तो प्रत्येक नस में ही साहित्यिक खून भरा हुआ। शकुन्तला 'रेणु' की भी शान्त पवित्र वाणी कभी-कभी सुनने को मिल जाती है।

साहित्यिक अनुभव—मैंने साहित्य का अध्ययन पर्याप्त मात्रा में किया है। हिन्दी, निबन्ध, कहानी, उपन्यास, नाटक, कविता सभी पढ़ती रहती हूँ। पता नहीं क्यों मुझे साहित्य की नयी दिशा प्रयोगवाद अच्छी नहीं लगी। उसके अनुसार काव्य में कोई अलौकिकता रह ही नहीं जाती। स्थायी पता :—तारे-भवन कोटा (जंकशन)

श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिन्हा

जन्म स्थान व तिथि :—चौपटिया, कटरा मुहम्मद अली, लखनऊ, तिथि—विजयदशमी १९१४।

शिक्षा :—मैट्रिक तक स्कूल में, तदुपरांत साहित्य रत्न तक घर में।

साहित्य की ओर प्रेरित करने वाला वातावरण :—स्वर्गीय पिता सुप्रसिद्ध समाज-सेवी तथा देशभक्त डाक्टर महेशचरण सिन्हा विज्ञानाचार्य गुरुकुल कांगड़ी की साहित्यिक सुरुचि और लेखक होने का प्रभाव क्योंकि सर्वप्रथम डाक्टर महेशचरण सिन्हा ने ही विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी में लिखीं और भारतवर्ष को दीं। वे और बीसियों विभिन्न पुस्तकों के लेखक थे, कई पत्रों के सम्पादक थे। विदेशों के कई पत्रों का सम्पादन किया। विख्यात पत्रकार तथा लेखक होने का प्रभाव पड़ा आवश्यक होने पर अपने एक सगे मौसा श्री सम्पूर्णानन्द (वर्तमान मुख्य मन्त्री उत्तर प्रदेश) व दूसरे सगे मौसा के सगे भाई श्री प्रेमचन्द (उपन्यास सम्राट) का सम्पर्क प्रेरणादायी हुआ। विवाह होने पर परिवार में साहित्य प्रेरणा मिली।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें अभिरुचि है :—काव्य की की प्रधानता है, अन्य दिशा में भी पर्याप्त रुचि है।

प्रकाशित रचनाएँ :—१. अचल सुहाग (कहानी संग्रह)।
२. वर्षगांठ।
३. विहाग। (कविता संग्रह)
४. आशापर्व।
५. पन्थिनी।
६. बोलों के देवता, (कविता संग्रह)
७. प्रसारिका (रेडियो में गाएजाने वाले गीत)
८. आंगन के फूल (बालोपयोगी कविता संग्रह)।

९. कथाकुंज (बालोपयोगी कहानियाँ)।

अप्रकाशित रचनाएं :—अवधी कविता संग्रह, कहानी संग्रह, संगीत-रूपक संग्रह, आदि।

सार्वजनिक सेवा :—युग-मंदिर उन्नाव के चौधरी राजेन्द्र शंकर के संग विवाह हुआ। वहीं से समाज सेवा आरम्भ हुई। उन्नाव नगर की महिलाओं का संगठन किया, कांग्रेस महिला मंडल, नारी सेवा संघ व लेडीज क्लब स्थापित किया तथा उपाध्यक्ष, मंत्री, उप-मन्त्री रहीं। जिला कांग्रेस कमेटी की उपाध्यक्षा रही फिर साधारण सदस्य। राजनीति में दिलचस्पी लेती रही। राजनैतिक लेखादि लिखे। उन्नाव की "त्रिपाठी हिन्दी विद्यापीठ" की अवैतनिक प्रिंसिपल हैं। और हिन्दी पद्य के क्लास भी लिए। लखनऊ में श्रीमती लीलावती मुंशी एम० पी० के महिलाश्रम की सुपरिन्टेन्डेड भी रही। नगर की कई सामाजिक संस्थाओं की अध्यक्ष रहीं। कई समितियों की निर्णायक संयोजक रहीं। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति की सदस्या रहीं। कवि-समेलन में निरंतर योगदान दिया। आल इण्डिया रेडिया के भारत के सभी केन्द्रों से लगभग प्रसारण किया।

सम्पादकीय ज्ञान :—एक दो पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। इन्हीं का युग मन्दिर प्रकाशन है। एक पुस्तिका भी सम्पादित की है। कई पुस्तकों में इनकी रचना संग्रहीत है। राजस्थान में कोर्स में रचनाएं हैं। पंजाब में कोर्स बुकों में रचनाएं हैं। प्रयाग महिला विद्यापीठ के विद्या विनोदिनी कोर्स में रचनाएं हैं। और उत्तर प्रदेश में भी कई कोर्स बुक में रचनाएं हैं। कई भाषाओं में रचनाओं के अनुवाद हैं।

वर्तमान पता व भावी योजनाएं :—वर्तमान काल में आकाशवाणी लखनऊ केन्द्र मे लेखिका के रूप में कार्य कर रही हैं। अनेक सराहनीय कृतियाँ प्रकाशित कर चुकी हैं। भावी योजना एक खण्ड काव्य की, एक उपन्यास तथा दो चार कहानी संग्रहों के प्रकाशन की है। समाज सेवा तथा साहित्य सेवा इनका मुख्य ध्येय है।

श्रीमती सीता बी० ए०

मेरा जन्म ३१ अक्तूबर १९१६ में हापुड़ में एक प्रतिष्ठित जमींदार घराने में हुआ था। हमारे बाबा श्री रणधीरसिंह जी आदि बार्बन में जो बरनाल जिले में है रहा करते थे। वहीं पर राजा रणजीतसिंह के भाई अजीरसिंह से मिले हुए बहुत से हमारे गांव थे।

हमारे पिता श्री रिपुसूदनसिंह ने हमारे जन्म से पहले ही हापुड़ में फैक्टरी लगा ली थी। अतएव बाल्यकाल का अधिकांश समय हापुड़ में ही व्यतीत हुआ। हापुड़ में फैक्टरी और व्यापार बन्द करने पर विवश होने के कारण बार्बन चले जाना पड़ा। पिता जी भी कोई विशेष कार्य न होने के कारण हमें अंग्रेजी पढ़ाया करते थे।

मेरी और मेरी छोटी बहिन दमयन्ती दोनों की सब शिक्षा घर पर ही हुई क्योंकि कोई भी अच्छा स्कूल कहीं भी न था। थोड़े बहुत दिन हापुड़ में तथा बनारस के बेसेन्ट स्कूल में पढ़ने का अवसर मिला था।

सब तरह की पत्रिकाएं चांद, माधुरी आदि हमारे यहां आया करते थे। 'तपोभूमि' मेरठ की एक स्थानीय पत्रिका में मैंने कहानी और लेख १९३२ या १९३३ से ही भेजना आरम्भ कर दिया था।

सन् १९३४ में १५ फर्वरी को मेरा विवाह रोहतक निवासी श्री रामनारायण जी के सुपुत्र श्री हरिश्चन्द्र जी से हो गया। अब भी मैं चांद, विशाल भारत आदि में लेख भेजा करती थी। दो एक कविताएं 'हिन्दुस्तान' में भी छपी थीं।

सन् १९३६ में अपनी नन्द लीला जी और छोटी बहिन दमयन्ती की सहायता से गीतों का संग्रह किया।

अनेक पारिवारिक कठिनाइयों के कारण मैट्रिक और प्रभाकर करने

के उपरान्त अधिक न पढ़ सकी। यह अवसर फिर आठ-दस बरस के बाद ही मिला।

आधुनिक राष्ट्र-निर्माता, धूमिल-कलिका (कविता) प्रकाशित हुई थी। 'धूलि धूसरित मणियाँ' अब प्रकाशित हो गई है। अप्रकाशित रचनाएं निम्नलिखित हैं :—

धूमिल फूल (लोक कथाएं), अन्तर्नाद (गद्य काव्य), हिन्दी का संक्षिप्त इतिहास, एकांकी, नाटक मातृभू सर्वोपरि (नाटक) पगली का प्रलाप (गद्य काव्य)

मेरी लिखी हुई ७०-८० गल्पें भी हैं। और कुछ लेख भी यों ही पड़े हुए हैं। डाइरैक्ट मैथड से लिखी हुई हिन्दी सिखाने के लिए 'बाल शिक्षक' के तीन भाग व 'नागरिक गीता' जो श्री चमनलाल पत्रकार के परामर्श से ऐडल्ट एज्युकेशन पर लिखी थी उन्हीं के पास है। उसकी प्रतिलिपि तक हमारे पास नहीं है।

मुझे मर्मस्पर्शी कविता आरम्भ से ही बहुत पसन्द है।

मेरा पता द्वारा श्री हरिश्चन्द्र जी एडमिनिस्ट्रेटिव आफीसर दिल्ली इलैक्ट्रिक सप्लाई अन्डरटेकिंग है।

(घर का पता—६ दरियागंज दिल्ली है)

श्रीमती सुमित्रा गढ़होक

मेरा जन्म २१ दिसम्बर १९१३ ईसवी में लाहौर के ऐसे परिवार में हुआ था, जो उस समय की प्रथा के अनुसार लड़कियों को शिक्षा देना उचित न समझता था। मुझे जीवन ने ही उचित शिक्षा दी है। रावी का वह किनारा, लाहौर की साँझ और अनारकली की चहल पहल ने मुझे भावुक बना दिया।

मुझे याद है, मैं करीब चार वर्ष की थी—जब मेरी जननी मुझे और मेरे एक वर्षीय भाई को दूसरों के सहारे छोड़ इस संसार से कूच कर गई थी। जो अवस्था माँ के प्यार और दुलार में बितानी थी, दुर्भाग्यवश उसे सौतेली माँ की छाया में व्यतीत करनी पड़ी। सौतेली माँ तो सतयुग में भी कलियुगीन थी, फिर आज के कलियुग में तो कलि-युगीन न होना सम्भव नहीं। माँ के न होने से पिता का स्नेह भी तृप्त न कर सका। मेरा भोला-सा बचपन माँ के प्यार की भूख से तड़पता ही रहा—उस न मिटने वाली भूख से, जिसे ममता भरा हाथ ही मिटा सकता था। आज भी जब कि मैं स्वयं माँ बन चुकी हूँ—बल्कि अब तो नानी भी बन चुकी हूँ, लगता है वह स्थान अब भी रिक्त ही है। स्नेह-वंचित रह कर ही शायद इस दिल पर ऐसा आघात हुआ है कि मेरे मन में किसी अजनबी की पीड़ा देख कर भी दर्द अनुभव होने लगता है। तभी आज के इस समाज, आज की हमारी परिस्थितियों, हमारी ज्वलंत समस्याओं तथा समाज की आड़ में होने वाले जुल्मों के खिलाफ मेरी लेखनी उगल देती है।

मुझसे पढ़ाई-लिखाई तथा शिक्षा का भी विशेष सम्बन्ध नहीं। मेरी शिक्षा मेरे जीवन की सबसे बड़ी समस्या थी—बड़ी ऊबड़-खाबड़

पगडण्डियों से होती हुई, परिस्थितियों से झगड़ती हुई अध-बीच में ही रह गई।

माँ की मृत्यु के बाद दो वर्ष पश्चात् मेरे पिता ने मुझे जालन्धर महाविद्यालय में भेज दिया। उस समय मैं बहुत छोटी अवस्था की थी। पढ़ायी में मेरी विशेष रुचि होने के कारण, वहाँ की सभी अध्यापकाएँ मुझसे बहुत प्यार करती थीं।—जिनमें वहां की प्रिंसिपल कुमारी लज्जावती और श्रीमती शान्तिदेवी जी, मुझे अब भी याद हैं। मैं वहाँ पर बहुत ही खुश थी। विशेषकर जब लाला देवराज जी मुझे अपनी बेटियों का सा स्नेह देते थे, तब मैं घर वालों को एक दम भूल जाया करती।

जब मैं पाँचवीं कक्षा में थी, मेरे पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। शादी के बाद ही वे मुझे जालन्धर से ले गये। उस समय हम चम्बा गये। वहाँ पर सिर्फ एक मिशन स्कूल था। यूनिवर्सिटी की वहाँ पर कोई भी परीक्षा नहीं होती थी।

एक बार मैंने प्रभाकर की परीक्षा देने की तैयारी की। लेकिन वहां से लाहौर जाकर परीक्षा देने का कोई भी साधन न बन पाया। अतः मैं परीक्षा न दे पायी। लिखने पढ़ने की रुचि अवश्य है। हिन्दी के अलावा मैं उर्दू भी जानती हूँ। उर्दू साहित्य से मुझे प्रेम भी है। संगीत और कविता मेरे जीवन की सबसे बड़ी दुर्बलता है। कहानियों के अतिरिक्त मुझे गीत और कविताएं लिखने का भी शौक है।

सोलह वर्ष में ही विवाह के बन्धन में बंध जाने के कारण लिखने पढ़ने के मेरे स्वप्न अधूरे हो रह गये। उस पर परिस्थितियाँ भी कुछ ऐसी थीं कि इच्छा होते हुए भी तत्कालीन शिक्षा-प्रणाली द्वारा कोई लाभ न उठा सकी।

इस पर भी यह लिखने का शौक मेरे हृदय-समुद्र में ज्वार की भाँति तूफान लाता रहा। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता था कि यह देन अवश्य ही प्रस्फुटित होकर रहेगी।

तेरह वर्ष की आयु में मैंने पहली कहानी लिखी थी। कहानी क्या एक पूरा उपन्यास। उस समय मुझे मेरी सहेलियों के अतिरिक्त किसी ने प्रोत्साहन नहीं दिया। दूध के उफान की भाँति वह जोश ठण्डा हो गया।

फिर भी मन में अशान्ति रही। कई बार सोचती, लिखती, परन्तु सफलता के द्वार खुले न मिलते। समय तेजी से आगे की ओर बढ़ रहा था। कई वर्ष व्यतीत हो गये। १६४६ में वे पुराने अंकुर फूट निकले। मैंने फिर लिखना शुरू किया। दो-तीन कहानियाँ लिखी भी शिमला जैसे स्थान में रहते हुए मुझे ऐसा कोई सुहृदय न मिला, जो मेरी कहानियों को पाठकों के सन्मुख प्रस्तुत करता! प्रोत्साहन के बदले मेरे निकटवर्ती यह कह कर मेरा स्वप्न तोड़ने की कोशिश किया करते—"क्यों व्यर्थ में समय नष्ट कर रही हो?"

मेरी कलम फिर रुक जाती।

आग दबाने से नहीं दबा करती। उसकी चिनगारियाँ अवश्य ही दब जाती हैं, लेकिन धूँआ तो किसी के रोके रुक नहीं सकता।

मेरे मन का बहाव अब मेरे बस का न रहा। लिखने की लगन एक नशा सी बन गई। जब कोई घर न होता, तो अकेले बैंठी पाँच-दस पृष्ठ लिख लिया करती। इसी दौरान में हमारे निकट वाराणसी से एक परिवार आकर ठहरा। मिसेज दास को भी हिन्दी साहित्य में बड़ी रुचि थी। जब उन्हें यह मालूम हुआ कि मैं भी कुछ लिखा करती हूँ, तो उन्होंने मेरी लिखी कहानियाँ पढ़ीं। पढ़ने के उपरांत मुझे बड़ा ही उत्साहित स्वर में बधाई दी और कहा—"ये तुम्हारी कहानियाँ पूर्ण रूप से उत्तम साहित्य में स्थान पा सकती हैं।"

उसका परिणाम यह हुआ कि मेरी रुचि इस ओर कुछ और झुक गई।

मुझे एक सज्जन मिले। उन्होंने भी मुझे इस काम के लिए प्रोत्साहित किया। वे अंग्रेजी के एक लेखक और हाई कोर्ट के माने

हुए वकील थे। वे मुझे जब कभी मिलते कहा करते—"सुमित्रा जी अपने काम को जारी रखिये। कभी न कभी सफलता अवश्य मिलेगी।" मेरी कोई चीज भी प्रकाश में न आ पाई। दूसरा एक मात्र कारण यही था कि मैं जो लिखती थी—वह सिर्फ अपने को सुख देने के लिए लिखती थी। मन में एक अस्फुट इच्छा अवश्य थी कि मेरी एक-आध रचना अवश्य छपे।

आखिर मेरे पति के मामा जो कि प्रकाशन से सम्बन्ध रखते हैं, किसी कार्य वश शिमला आये। मैंने उनसे बात की। उन्होंने मुझे बड़े उत्साह से कहा—"कुछ भी हो मैं इस काम में तुम्हारी अवश्य मदद करूंगा।" उन्होंने मेरी लिखी कुछ कहानियां अपने पास रख लीं। काफी समय बीत गया। और कोई मेरी रचना न छप सकी। हमारे देश में लेखक-लेखिकाओं के लिए यह बड़ी भारी समस्या है। मेरी ही भांति कई और लेखिकाएं भी इसमें रुचि तो अवश्य रखती हैं, परन्तु वे प्रकाश में अपनी अमूल्य रचनाएं नहीं ला पातीं।

उनका सहयोग तथा मेरा परीश्रम पूर्ण हो गया। और उसके प्रतिफल स्वरूप 'पूनम का चांद' साहित्य गगन में अवतरित हुआ! मेरी दूसरी पुस्तक भी प्रकाशन की ओर अग्रसर है। मैंने कैसा लिखा? क्या लिखा? क्यों लिखा? आदि तो विज्ञ पाठक ही निर्णय करें, इस बारे में मैं राय क्या दे सकती हूं।

लिखने पढ़ने के अतिरिक्त मुझे 'सोशियलवर्क', 'रेडक्रास' तथा समाजसुधार—जिनमें स्त्री जाति तथा अनाथ बालकों की कुछ भी भलाई हो, मैं बड़ी रुचि से करती हूं। ऐसी कई एक संस्थाओं की सदस्या भी हूं। घरेलू-जीवन में भी मुझे सम्बन्धियों से विशेष स्नेह है। घर की चार-दीवारी में कैद रहना मेरी रुचि के खिलाफ़ है।

रहा सवाल पढ़ने लिखने का। वैसे तो मैं नये अथवा पुराने सभी लेखकों की रचनाएं पढ़ने की रुचि रखती हूं—मुझे शरद, टैगोर बहुत पसन्द हैं। इनकी रचनाएं कई-कई बार पढ़ जाना मेरा शौक़ है। इसके

अलावा प्रेमचन्द, जैनेन्द्र और मैथिलीशरण गुप्त भी मुझे प्रवाहित किये बिना न रह सके। आज के नवयुवक लेखकों में रामकृष्ण कौशल की रचनाएँ भी पढ़ने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है और मुझे पसन्द भी आई हैं।

श्रीमती सुधा बलवीर

मैंने सन् १९५५ में हिन्दी साहित्य लेकर एम० ए० किया (आगरा यूनिवर्सिटी से) जिसमें I Division और I Position आने के कारण पिछले वर्ष आगरा यूनिवर्सिटी का रिसर्च स्कालर शिप मिलता रहा। "आधुनिक हिन्दी कविता में नैराश्य भावना" मेरी रिसर्च का टौपिक था। अब इस वर्ष गवर्नमेंट आफ इण्डिया की रिसर्च स्कालर हूँ। और इस नवीन विषय पर हमारे मेरठ कालिज के संस्कृताध्यक्ष डाक्टर धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री एम० ए०, एम० ओ० एल०, डी० लिट० के निर्देशन में रिसर्च वर्क में लगी हूँ। बहुत सा समय कालिज लाइब्रेरी में ही लग जाता है। संस्कृत में भी दूसरा एम० ए० शुरू किया था। छोड़ दिया।[1]

कविता, कहानी, गद्यगीत आदि भी लिखती हूँ। एम० ए० के सेमिनार क्लास में कुछ आलोचनात्मक साहित्यिक लेख प्रस्तुत किये थे जो मेरे प्रोफेसरों द्वारा प्रशंसित हुए, शायद कुछ अन्य लेखों के साथ पुस्तक रूप में आएं।

अपनी मेरठ कालिज मैगजीन में पिछले पांच-छः वर्षों से गीत, कहानियां आदि छपती रही हैं। तीन वर्ष तक मैंने डाक्टर खण्डेलवाल के नीचे सहायक सम्पादिका का कार्य किया। अब न वैसी रुचि है, न उतना समय। कालेज में मेरा नाम 'सुधा' है। 'अचला' एक क्षणिक कौतूहल का फलमात्र था।

पता—सुमति सदन, महात्मा गांधी पथ, मेरठ।

---

१. लेखिका ने १९५७ में परिचय भेजा था।

श्रीमती सुशीला गंजू

मैंने पहले कुमारी सुशीला आग़ा के नाम से लिखना प्रारम्भ किया था।

मेरा जन्म १५ अक्तूबर १९१५ को जौनपुर में हुआ था।

शिक्षा—एम० ए० (प्रयाग विश्वविद्यालय)।

मैंने अपनी प्रथम कहानी 'मालती' जब मैं आठवीं कक्षा की छात्रा थी लिखी थी। कहानी का प्लाट एक वास्तविक घटना पर आधारित था, जो मैंने ७ वर्ष की आयु में घटते देखी थी। हमारी कक्षा की शिक्षिका कुमारी चन्द्रावती त्रिपाठी ने (जो अब प्रयाग विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं) कक्षा की सब ही लड़कियों को एक एक कहानी लिखने को कहा था। मेरी कहानी उन्हें सबसे अधिक पसन्द आई। कक्षा की अन्य सभी लड़कियों के सामने भी मेरी कहानी की बड़ी प्रशंसा की। इस बात से मुझे बड़ी प्रेरणा मिली और तब से ही मैंने निरन्तर कहानियां लिखनी शुरू कर दीं। मैंने अपने विद्यार्थी जीवन में लगभग १०० कहानियां लिखीं जो हंस, सुधा, चांद, विशाल भारत, मनोरमा तथा भारत आदि में निकलती रही। मेरा एक कहानी संग्रह "अतीत के चित्र" के नाम से १९३६ में निकला था।

आजकल मैं कम लिखती हूं क्योंकि मेरा काम ही ऐसा है, जिसमें अधिकतया समय निकल जाता है। मैं आजकल कहानियां, एकांकी तथा लेख आदि लिखती हूं जो प्राय: A. I. R. लखनऊ द्वारा ब्राडकास्ट होते हैं। जहां तक अन्य बातों का सम्बन्ध है आप सब जानते ही हैं।

मेरे गुरु प्रयाग के श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' रहे हैं। उनकी प्रेरणा से भी मैंने बहुत कुछ लिखा है। मेरी कहानियां अधिकतया जीवन की वास्तविक घटनाओं पर आधारित रहती है।

पता—श्रम हितकारी अधिकारी उत्तर प्रदेश सरकार कानपुर।[1]

१. सुशीला जी व सम्पादक दोनों को उत्तर प्रदेश सरकार के श्रम कार्यालय में १९५४ के प्रारम्भ में काम करने का अवसर मिला। उनके कर्तृत्व का कुछ अधिक विवरण प्रस्तुत परिचय से प्राप्त हुआ।

कुमारी सुशीला सरीन

जन्मस्थान तो है कासगंज लेकिन निवासस्थान है—जयपुर। बचपन यहीं बीता। अब 'महिला कलाकुंज' नामक संस्था में काम भी यहीं कर रही हूँ।

वनस्थली विद्यापीठ से मैट्रिक किया, जयपुर से इण्टर लेकिन बी० ए० फाइनल में अचानक शरीर अस्वस्थ हो गया। बढ़ते हुए कदम डगमगा और लड़खड़ा कर आगे बढ़ने से रुक गए। रुके ही रह गए।

अस्वस्थ शरीर—और अस्वस्थ शरीर में सुख पाने और आगे बढ़ने के लिए असीम कोलाहल और क्रन्दन होने लगा। मन को सुखी करने के लिए और मन को थामने के लिए ही मन में कविता तथा कहानी लिखने की प्रेरणा हुई। नन्हें बालगोपालों के लिए स्वस्थ्य सरल और सरस साहित्य का सृजन कर सकूं, यही मेरी हार्दिक कामना और आकांक्षा है। स्वस्थ कहानियाँ लिखने में भी अधिक रुचि है।

सर्व प्रथम "घर मेरे मेहमान आए' कविता 'सरिता' में पुरस्कृत हुई। (हास्य रस कविता प्रतियोगितामें) इसके पश्चात् 'गोमा' शीर्षक कहानी 'विश्व ज्योति' में, 'परिस्थिति विवश' शीर्षक कहानी भारती में, 'मजबूरी' तथा 'हंसा' शीर्षक कहानी दैनिक नवयुग में प्रकाशित हुईं।

बाल पत्रिका 'बानर' में 'फल सम्मेलन' तथा 'गर्मी की छुट्टी आई' शीर्षक कविता तथा 'विश्व ज्योति' में एक गीत और उज्जैन से निकलने वाले नवभारत में "आज मिल दो गीत गा लें" गीत प्रकाशित हुआ। इनके अतिरिक्त अनेकों कहानियां अभी हैं जो निकट भविष्य में प्रकाशित होगी।

मेरा जन्म १३ अक्तूबर १६२६ को एक खत्री परिवार में हुआ।

वर्तमान पता :—आरहा जी का मन्दिर, गंगौरी बाज़ार, जयपुर।

कुमारी सुशीला शर्मा

जन्म स्थान व तिथि :—मेरा जन्म सिवनी नामक स्थान पर एक साधारण पर शिक्षित परिवार में हुआ। जन्म तिथि २८-६-३८ है।

शिक्षा :—इस वर्ष मैं हिन्दी में एम० ए० प्रीवियस की तैयारी कर रही हूँ। वैसे मैंने साहित्य रत्न (हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग) परीक्षा सन् ५४ में पास की थी। मेरी शिक्षा मैट्रिक तक स्कूल में हुई और बाकी सब घर पर ही हुई। मैंने बी० ए० नागपुर विश्व-विद्यालय से किया है।

साहित्य की ओर प्रेरित करने वाला वातावरण :—हमारा परिवार शिक्षित परिवार है। बचपन से ही मुझे पढ़ने की यथेष्ट सामग्री घर पर ही प्राप्त हुई। चाचा जी की टेबिल सदैव पत्र-पत्रिकाओं तथा किताबों से भरी रहती। कहानियाँ खूब सुनी सुनाई जाती। बड़े भाई साहब कालेज से छुट्टियों में आते तब अंग्रेजी कहानियों का अनुवाद सुनाया करते। धीरे-धीरे परिचय बढ़ता गया। और अब पढ़ना जीवन का मुख्य ध्येय बन गया है।

साहित्य की निर्दिष्ट दिशा जिसमें आपकी विशेष अभिरुचि है :—बचपन से ही मुझे कहानियों का बेहद शौक़ है। अब यह रुचि उपन्यास और कविता की ओर भी झुकी है। पर कहानियाँ ही मेरी प्रिय रही हैं।

रचनाएँ :—मैंने जो कहानियाँ लिखी हैं वे प्रायः सभी प्रकाशित हो चुकी है। मेरी सबसे पहली कहानी 'मनोरमा' में १९४९ (अप्रैल

अंक में) प्रकाशित हुई थी। उसके बाद क्रमशः 'मनोरमा' और 'मंजरी' में लिखती रही! उसके बाद सरस्वती में भी कई कहानियाँ प्रकाशित हुई। सरस्वती की कहानी प्रतियोगिता में मेरी कहानी 'परिहास' पर प्रथम पुरस्कार मिला था। पुरस्कृत कहानी अगस्त १९५४ की सरस्वती में प्रकाशित हुई थी। इसके अतिरिक्त मैंने रेडियो के लिए ध्वनि नाटक (एकांकी) भी लिखा। एक 'कहानी-संग्रह' प्रकाशित करने की इच्छा है पर कोई ठीक निर्देशन करने वाला नहीं है, इसी से अभी तक कुछ नहीं हुआ।

सम्पादकीय ज्ञान व अनुभव :—कुछ दिनों से मैं हमारी स्वजातीय पत्रिका "भट्ट-भास्कर" की सह सम्पादिका हूँ। पत्रिका बहुत छोटी है और उसका कलेवर अत्यन्त सीमित है। जातिगत होने के कारण उसका क्षेत्र भी छोटा है।

भावी साहित्यिक योजनाएँ :—मेरी इच्छा एक सफल कहानीकार बनने की है। पर उसके पहिले मैं हिन्दी साहित्य का अच्छी तरह अध्ययन करना चाहती हूँ। मैंने इरादा किया है कि पी०-एच० डी० करूं! और फिर साहित्य-सेवा का कार्य आरम्भ हो। फिर भी इस बीच में जो भी बनेगा वह भी करती रहूँगी। मेरी इच्छा बहुत है पर मुझे उत्साहित करने वाला, उचित सलाह देने वाला कोई नहीं है। अतएव मुझे अपने मन को शांत रखना होता है।

पता :—अकोला (बम्बई प्रान्त)।

श्रीमती सोमा वीरा

२६ नवम्बर १६३२ को मुजफ्फरनगर में जन्म हुआ। आपने बी० ए० तक शिक्षा प्राप्त की है। प्रारम्भ से ही आपको शरत्-साहित्य से बहुत लगाव रहा है और उसी ने साहित्य-सृजन की प्रेरणा दी। प्रारम्भ में छोटी कहानियां लिखीं। अब भी लिखती हैं जो प्रायः हिन्दी के सभी उत्कृष्ट पत्रों में प्रकाशित होती रहती हैं। कहानी संग्रह तथा एक उपन्यास "पतिता का पुण्य" शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं।

सोमा वीरा की लेखन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे जीवन के विस्मृत एवं अकारथ क्षण को भी बड़ी कुशलता के साथ कला के धागे में पिरो देती हैं। और उनके पिरोने का ढंग उन्हें सच्चे मानो में कलाकार बना देता है। मार्मिक अनुभूति का चित्रण तो सभी करते हैं, सोमा अमार्मिक को मार्मिक बना देती है और यही उनके कलाकार की सफलता है। उनके लेखन की पृष्ठभूमि भारतीय समाज है।

सार्वजनिक जीवन में रुचि अवश्य है पर उस रुचि को कार्य रूप में परिणत करने के अवसर विशेष मिलते नहीं। हां, अभिनय में उन्हें रुचि है और उसकी पूर्णता के अवसर आकाशवाणी पर यदा-कदा मिलते रहते हैं। निजी जीवन में मिलनसार और प्रसन्नचित्त सोमा वीरा विवाहिता हैं।

आपका स्थायी पता द्वारा महेन्द्रजीत गोबल, ३५ ए होस्पिटल एवेन्यू, परेल बम्बई १२ है।

(बहिन विमलवेद की कृपा के फलस्वरूप प्राप्त। —सम्पादक)

श्रीमती हीरादेवी चतुर्वेदी

जन्म स्थान व तिथि :—खण्डवा, मध्य प्रदेश २ मई १६१५, शिक्षा महिला नार्मल स्कूल जबलपुर।

रचनाएँ :—

१. 'मजरी'—दम्पति कवि का सम्मिलित कविता-संग्रह सन् १६३३। अप्राप्य।

२. 'नीलम'-१६३४-प्रकाशक, वर्मा बुकडिपो छिदवाड़ा।

३. 'मधुबन'-कविता संग्रह-१६४०-अप्राप्य।

४. 'मधुमास'-कविता-संग्रह-१६५३-प्रकाशक इण्डियन प्रेस प्रयाग।

५. 'उलझी लड़ियाँ'-कहानी संग्रह-१६५६, प्रकाशक, बेलवेडियर प्रेस प्रयाग।

६. 'रंगीन पर्दा'-एकांकी संग्रह-१६५२, प्रकाशक, इण्डियन प्रेस प्रयाग।

७. 'बुन्देलखण्डी लोक गीत' १६५४, प्रकाशक, इण्डियन प्रेस प्रयाग।

८. 'गल्प-गवाक्ष'-सम्पादित कहानी संग्रह।

६. घर की देवी-महिलोपयोगी निबन्धसंग्रह।

सम्पादकीय अनुभव:—प्रधान सम्पादिका 'मनोरमा' १६४७ नवम्बर से फरवरी १६५० तक।

[आप हिन्दी के प्रकांड पंडित श्री गुर्दाप्रसाद जी पाठक की सुपुत्री हैं। पिता के हिन्दी प्रेम का उन पर काफी प्रभाव पड़ा फिर कथाकार कवि एवं पत्रकार पति पंडित देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' जिनकी रचनाओं से हिन्दी जगत् अच्छी तरह परिचित है ने भी उनके साहित्य को चार चाँद लगा दिए। प्रकृति सौंदर्य की चितेरी और मानव-प्रकृति की कलाकार हीरादेवी के सरल एवं सुबोध भावयुक्त गीतों में कोमल भावनाओं को सुन्दरता के साथ सजाया जाता है और उनकी कहानियाँ दैनिक जीवन के बिल्कुल सन्निकट होती हैं।]

सौ० ज्ञानवती सक्सेना किरण

जन्म स्थान व तिथि :—मेरा जन्म स्थान उदयपुर (मेवाड़) है तथा जन्म तिथि १५ अगस्त १९१८ है।

शिक्षा :—मैंने प्रयाग महिला विद्यापीठ से 'विदुषी', तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन से साहित्य-रत्न परीक्षाएं द्वितीय श्रेणी में एवं हिन्दी विद्यापीठ देवघर बिहार की साहित्यालंकार परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है तथा इनके अलावा इन्टर की परीक्षा भी पास की है। इस वर्ष बी० ए० की परीक्षा में बैठने का इरादा है।

साहित्यिक वातावरण :—प्रयाग महिला विद्यपीठ में अध्ययन काल में स्वनामधन्य कविवर श्री बच्चन जी का साथ एवं वैष्णव परिवार की कन्या होने के नाते उत्सव आदि में समस्या पूर्ति करते-करते लिखने का अभ्यास हो गया। इसमें हिन्दी साहित्य समिति बारन (कोटा) के तत्कालीन मंत्री श्री गिरधारी लाल जी 'संत' (जो कि आजकल राजस्थान शिक्षा विभाग में इंसपेक्टर हैं) का प्रयत्न विशेष उल्लेखनीय है। उन्हीं की प्रेरणा ने मुझे प्रगति का मार्ग दर्शन किया।

परिवार की अन्य साहित्यिक निधियाँ :—मेरे बड़े भाई श्री चन्द्र-प्रकाश जी एम० ए०, साहित्यरत्न जो कि आजकल भारत सेवक समाज के सूचना विभाग में सेक्रेटरी के पद पर कार्य कर रहे हैं अच्छे लेखक एवं कुशल सम्पादक है। उन्होंने कई साहित्यिक पत्रो का सम्पादन किया है।

विशेष साहित्यिक अभिरुचि :—मेरी कविता लिखने में विशेष रुचि है, यद्यपि गद्य भी लिखा करती हूं।

रचनाएँ :—मैंने अब तक चार पुस्तकें कविता की लिखी हैं जिनमें ५१-५१ कविताएँ संगृहीत की हैं और पृष्ठ संख्या लगभग १२५-१२५ है। उनके नाम क्रमशः हैं :—

१. निखरते फूल।

२. उन्मना।

३. आद्या।

४. उद्बोधन।

इनकी अधिकतर रचनाएँ भिन्न-भिन्न मासिक साप्ताहिक एवं दैनिक पत्रों में समय-समय पर प्रकाशित होती रही हैं।

(ख) 'अञ्जलि' नाम का कहानी संग्रह भी मैंने लिखा है इसमें ७ कहानियाँ संग्रहीत हैं। इनमें से दो कहानियाँ 'अणुव्रत' एवं 'शक्ति' में प्रकाशित हो चुकी हैं।

(न) नौ एकांकियों का एक संग्रह भी है जिनमें से चार एकांकी प्रकाशित हो चुके हैं, दो विधाता का विधान और ऋतु कथा चरित्र निर्माण में तथा दो एकांकी (प्रगति के पथ की ओर नया कदम) ग्राम सुधार ग्वालियर में प्रकाशित हो चुके हैं।

(घ) एक पुस्तक साहित्यिक निबन्ध की लिखी है जिनमें भिन्न-भिन्न विषयों पर सात निबन्ध हैं। इसमें से "सूर की अभिव्यञ्जना शक्ति" चरित्र-निर्माण में प्रकाशित हो चुकी हैं। और सूर तथा जायसी की प्रकृति और विरहणी जो इन्दौर रेडियो द्वारा स्वीकृत किया जा चुका है।

(ङ) एक पुस्तक 'लोक-कथा संग्रह' लिखी है, जिसमें नानी दादी आदि के मुँह से सुनी सात लोक-कथाओं का परिष्कृत रूप है, जिनमें से चार विविध पत्रों में प्रकाशित हो चुकी हैं।

(च) 'सांस्कृतिक चरित्र माला' के अन्तर्गत तीन पुस्तकें ७५-७५ पृष्ठ की (दो महिलाओं के उपयोग की है तथा एक बालोपयोगी है।) लिखी हैं—उनके नाम हैं क्रमशः—महासती अनुसुइया, प्रेम सागर के

दो अमूल्य रत्न—दक्ष सुता सती एवं अनुरागिनी राधा, एवं पद्य वद्ध सात पौराणिक कथाएँ 'सात-महाचरित्र' के नाम से लिखी हैं—इसमें उपमन्यु, आरुणि, वेद, भीष्म, भागीरथ, गरुड़, तथा एकलव्य की कथाएँ हैं।

(छ) एक पुस्तक गद्य काव्य की भी लिखी है। प्रकाशकों से अपरिचित होने के कारण एवं स्थाई-निवास न होने के कारण सब ही पुस्तकें अप्रकाशित रूप में है।

सार्वजनिक जीवन :—महिला मंडल गुना, भेलसा और मुरेना का सैक्रेटरी, महिला-मंडल खाचदोह की अध्यक्षा रह चुकी हैं। आजकल महिला-मंडल आगर की अध्यक्षा तथा सार्वजनिक वाचनालय आगर की सैक्रेटरी हूं।

साहित्यिक अनुभव :—भावी साहित्यिक योजना के अन्तर्गत महाकवि शेक्सपीयर की सर्वोत्कृष्ट रचना 'हेम्लेट' का छन्दवद्ध हिन्दी अनुवाद करने का प्रयास जारी है। दो तीन दृश्यों का अनुवाद हो भी चुका है।

वर्तमान पता :—सौ० 'किरण' सक्सेना w/o श्री ब्रजभूषणलाल सक्सेना, सिविल जज, आगर (मालवा), डिस्ट्रिक्ट—शाजापुर (मध्य-प्रदेश)।